सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2011 ★ फाल्गुन, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

वेडिंग
ज्वेलरी कलेक्शन

ॲन्टीक
ज्वेलरी कलेक्शन

डायमंड
ज्वेलरी कलेक्शन

✦ सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी
और राशीरत्न

✦ फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
✦ शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स®

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद ☎ 0240-2244520	सुभाष चौक, जलगाँव ☎ 0257-2223903	उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ☎ 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री ▶ १ | प्रामाणिकता २ | वाजिबता ३ | विविधता ४ | हजर स्टॉक ५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2011-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मरणं पि सपुण्णाणं,
जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं,
संजयाणं वुसीमओ॥
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.18

है पुण्यवानों का मरण सुना,
जैसा मैंने है समझ लिया।
आघातरहित अतिहर्षयुक्त,
विजितेन्द्रिय मुनि ने ग्रहण किया॥

मार्च, 2011

वीर निर्वाण संवत्, 2537

फाल्गुन, 2067

वर्ष 68 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अनासक्ति	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	क्षमाशील बनें नर-नारी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
साधना -	दीक्षा : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी 'शास्त्री'	16
शोधालेख -	जैन दार्शनिकों का अन्य दर्शनों को त्रिविध अवदान	-प्रो. सागरमल जैन	21
जीवन-व्यवहार -	परिग्रह का परिमाण क्यों?	-श्री ओ.पी.चपलोत	27
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	35
एकांकी -	चरित्र-क्रान्ति-अभियान	-डॉ. रमेश मयंक	40
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**100 Benefits of Meditation**	*-Sh. Shrikant Jain*	49
स्वानुभव-	विद्वत् परिषद् की सक्रियता : एक सराहनीय कदम	-डॉ. दिलीप धींग	53
तत्त्व-ज्ञान -	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (10)	-संकलित	62
नारी-स्तम्भ -	हमारे जीवन में भावों की महत्ता	-श्रीमती एस.उषा. चोरडिया	64
युवा-स्तम्भ -	युवापीढ़ी को आचार्य हस्ती की प्रेरणा	-श्री पारसमल चण्डालिया	68
स्वास्थ्य-स्तम्भ -	स्वास्थ्य और सामायिक	-श्री चंचलमल चोरडिया	76
बाल-स्तम्भ -	पश्चात्ताप के आँसू	-श्री अंकुश जैन	81
हस्ती जन्मशताब्दी-	अध्यात्म-चेतनावर्ष की उपलब्धियाँ	-श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना	85
	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की उपलब्धियाँ	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	93
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (12)		96
विचार -	मन की शान्ति के सूत्र	-श्री नवरतन डागा	34
कविता/गीत-	टूटते घर	-श्रीमती कमला सुराणा	39
	गुरु हस्ती शतक	-श्री प्रसन्नचन्द बाफना	59
	होलिकोत्सव ऐसे मनाएँ	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	75
	व्यंग्यात्मक क्षणिकाएँ	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री	80
परिणाम -	आ.शिक्षण बोर्ड परीक्षा परिणाम		102
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		108
समाचार विविधा-	पाक्षिक-पत्र		66
	समाचार-संकलन		109
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		123

सम्पादकीय

अनासक्ति

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आसक्ति दुःख का कारण है तथा अनासक्ति दुःख-निवारण का उपाय है। समस्त भारतीय दर्शन में आसक्ति के त्याग का उपदेश है। कहीं उसे राग के रूप में तो कहीं अहंत्व एवं ममत्व के रूप में प्रतिपादित किया गया है। धर्म की समस्त साधना आसक्ति को तोड़ने के लिए है। सम्यग्दर्शन उसका प्रथम उपाय है। जब तक दृष्टि सम्यक् न हो तब तक आसक्ति को तोड़ना शक्य नहीं है। दृष्टि सम्यक् होने पर ही ज्ञान सम्यक् होता है तथा वह ज्ञान आचरण में आकर आसक्ति को समूल नष्ट करने में सक्षम होता है।

आसक्ति का अर्थ है- पर-पदार्थों में चित्त का चिपकाव, लगाव। 'आङ्' उपसर्ग पूर्वक 'सञ्ज्' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगकर 'आसक्ति' शब्द बनता है। इसका अर्थ है कहीं फंस जाना, अटक जाना। हम जिन वस्तुओं या व्यक्तियों से आसक्ति करते हैं उनमें हमारा चित्त फंस जाता है या अटक जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो चित्त में उनके प्रति राग का भाव अथवा ममत्व का भाव अंकित हो जाता है।

जिन वस्तुओं और व्यक्तियों के प्रति आसक्ति होती है वे तत्त्वतः हमारे चित्त से पृथक् होते हैं। उनका स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। यह तो हमारे मन या चित्त का दोष है कि हम उनके स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ छेड़छाड़ करते हैं। आसक्ति के कारण कभी उन्हें क्षुब्ध करते हैं, कभी दुःखी करते हैं तो कभी दूषित करते हैं। आसक्ति से व्यक्ति स्वयं भी क्षुब्ध होता है, दुःखी होता है अथवा दूषित होता है तथा सम्पर्क में आए प्राणियों एवं वस्तुओं को भी क्षुब्ध, दुःखी अथवा दूषित करता है। आसक्ति का प्रभाव चेतन प्राणियों पर तो पड़ता ही है अचेतन वस्तुएँ भी पर्यावरण को दूषित करने लगती हैं। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या में मनुष्य के द्वारा आसक्तिपूर्वक की गई क्रियाएँ प्रमुख निमित्त हैं।

समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव तो ग्राह्य है, किन्तु आसक्ति भाव नहीं। मैत्रीभाव समस्त प्राणियों के प्रति प्रीति अथवा अनुराग का वाचक है। मैत्री अन्य प्राणियों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इससे उन्हें क्षोभ नहीं प्रसन्नता होती है, दुःख नहीं सुख होता है। मैत्री में हित का भाव होता है, स्वयं के सुख की ही नहीं,

अपितु दूसरों को पीड़ा न उत्पन्न करने की भावना निहित होती है। किसी के प्रति वैरभाव एवं द्वेषभाव नहीं होता, सबके प्रति समदृष्टि से हित एवं सुख की भावना होती है।

यह बड़ा कठिन है कि संसार में जिन वस्तुओं और व्यक्तियों के साथ हम रहें और हम आसक्त न हों। हमारे अनुकूल व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रति हमारी आसक्ति पुरातन स्वभाव के कारण हो ही जाती है। जिससे हमें सुख मिलता है, सहयोग मिलता है, भोग-सामग्री प्राप्त होती है उसके प्रति आसक्ति का भाव उत्पन्न हो जाता है। हम वस्तुओं और व्यक्तियों को पकड़े रखना चाहते हैं, इसे ही सूत्रकृतांग आदि आगमों में परिग्रह कहा गया है। आसक्तिपूर्वक वस्तुओं का संग्रह परिग्रह है। बिना आसक्ति के संग्रह तो हो सकता है, किन्तु परिग्रह नहीं। वह संग्रह आवश्यक जनों के सदुपयोग के लिए होता है। जब आसक्ति भाव जुड़ जाता है तो संग्रह का दुरुपयोग ही होता है।

आसक्ति को तोड़ने के लिए सम्यग्दृष्टिपूर्वक ज्ञान की नितान्त आवश्यकता होती है। आसक्ति कम वस्तुओं एवं प्राणियों से हो या अधिक से, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। गाय, भैंस आदि पशुओं की आसक्ति मनुष्य के समान अधिक पदार्थों में नहीं देखी जाती, किन्तु उनमें सम्यग्ज्ञान का तो अभाव होता ही है। उनकी आसक्ति पालनकर्ता पर हो सकती है, भोज्य पदार्थों पर हो सकती हैं, रहने के स्थान पर हो सकती है। भोग के अधिक साधन न तो उन्हें उपलब्ध हैं, और न ही वे संग्रह करने में समर्थ हैं। फिर भी उनमें आसक्ति एवं परिग्रह की सत्ता है, जिसको तोड़ने का सामर्थ्य उनमें नहीं है। मनुष्य के चित्त की भाँति उनका चित्त और चिन्तन उतना सूक्ष्म नहीं होता, इसलिए उनमें राग या आसक्ति मनुष्य की भाँति अधिक एवं व्यापक नहीं होती। उनमें जड़ता का प्रभाव अधिक होता है। परिग्रही व्यक्ति में भी जड़ता का प्रभाव होता है। वह संवेदनशील नहीं होता। वह दूसरों के दुःख से द्रवित नहीं होता है, उसमें करुणा एवं मैत्री का भाव नहींवत् होता है। मनुष्य से भी अधिक उसे जड़-पदार्थों से प्रेम होता है। उन पदार्थों में उसे सुरक्षा का अनुभव होता है। जीने के लिए साधन-सामग्री की आवश्यकता अवश्य होती है, किन्तु सीमित सामग्री से भी जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है। मनुष्य का लोभी एवं आसक्त चित्त ही उसे भ्रमित बनाए रखता है। उसके विवेक चक्षुओं को अनावृत नहीं होने देता, इसलिए वह आसक्ति पूर्वक संग्रह करता रहता है।

वस्तुओं का सदुपयोग करने में कोई दोष नहीं है, किन्तु उनसे आसक्ति रखना स्वयं के लिए एवं समाज के लिए दोषपूर्ण है। जरूरतमंद में उन वस्तुओं का वितरण कर सदुपयोग करें तब तक तो संग्रह का औचित्य प्रतीत होता है, किन्तु निरर्थक संग्रह समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में अव्यवस्था उत्पन्न कर देता है। एक के पास अपार सामग्री पड़ी रहती है तो दूसरा अभावग्रस्त होकर जीवन-मरण के संघर्ष को झेलता रहता है।

जिससे जितनी अधिक आसक्ति होती है उसके विनाश पर अथवा वियोग पर उतनी ही अधिक दुःखानुभूति होती है। यह शाश्वत सत्य है। जिसे दुःखमुक्त होना है उसे आसक्ति से रहित होना ही होगा। आसक्ति को तोड़ने के लिए प्रज्ञा की आवश्यकता है, जिसे सम्यग्ज्ञान कहा गया है। सम्यग्ज्ञानपूर्वक जब अहिंसा, संयम एवं तप का आचरण होता है तो आसक्ति टूटती चली जाती है। आसक्ति का विकल्प मैत्री एवं आत्मवद्भाव है। हम निरासक्त होकर भी सुन्दर जीवन जी सकते हैं। किन्तु यह हमारी समझ में तब तक नहीं आता जब तक हमें आसक्ति दोष रूप नहीं लगती अर्थात् ज्ञान सम्यक् नहीं होता। वस्तुओं का उपयोग करें, किन्तु त्यागभाव के साथ-"तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।" शरीर की आवश्यकताएँ पूर्ण करना कोई दोष नहीं है, किन्तु आसक्ति दोष है। शरीर के प्रति भी आसक्ति का होना दोष है। शरीर एक साधन है। यह धर्म-साधना का भी प्रथम साधन माना गया है- "शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।" किन्तु यह धर्म का साधन तभी बनता है जब इसका सदुपयोग किया जाए। तन-मन-वाणी सब धर्म के साधन हैं, इनका सदुपयोग जहाँ व्यक्ति के आत्मिक विकास में हेतु है वहाँ इनका दुरुपयोग आत्मिक सद्गुणों के विनाश में निमित्त है। रसनालोलुप व्यक्ति गृद्धि के कारण साधारण भोजन में भी आसक्त होकर तीव्र कर्म बाँध लेता है वहाँ साधना-सम्पन्न पुरुष सरस भोजन करता हुआ भी अपनी अनासक्ति के कारण उससे बचा रह सकता है।

आज दुनिया सुख-सुविधाओं के पीछे भाग रही है। प्रत्येक व्यक्ति का चित्त उनकी प्राप्ति हेतु लालायित है। जितना प्राप्त हो जाता है उसे वह सुरक्षित कर अधिकार कर लेना चाहता है। जैन दर्शन में अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व आदि भावनाएँ मनुष्य को संसार के सत्य का ज्ञान कराती हैं। इन भावनाओं का चित्त पर जितना अधिक प्रभाव पड़ेगा, उतना अधिक मनुष्य सत्य को जानने में सक्षम हो सकेगा तथा आसक्ति को तोड़ने में समर्थ बन सकेगा।

शरीर के प्रति आसक्ति को तोड़ने के लिए कहा गया है कि यह शरीर अनित्य है, अशुचि है, अशुचि से उत्पन्न है एवं नाशवान है, इसके प्रति आसक्ति दुःख की कारण है। इसी प्रकार धन-सम्पदा आदि 'पर' हैं, इनको सुख का साधन मानना, मानकर आसक्त होना दुःख को ही जन्म देता है। ज्ञानार्णव में आचार्य शुभचन्द्र कहते हैं-

ये जाताः सातरूपेण पुद्गलाः प्राङ् मनःप्रियाः।
पश्य पुंसां समापन्ना, दुःखरूपेण तेऽधुना ।।

-ज्ञानार्णव, 2.44

जो पुद्गल मन को प्रिय एवं साताकारी लगते हैं, वे ही बाद में दुःख के कारण बन जाते हैं। धन-सम्पदा आदि प्रिय प्रतीत होने पर भी कलह कारिणी बन जाती है। संसार में त्रिशरण के अतिरिक्त कोई शरणभूत नहीं है। मनुष्य अकेला ही जन्मता है एवं अकेला ही चला जाता है, फिर भी वह जब तक संसार में रहता है, अपनी धौंस जमाता रहता है। व्यक्तियों एवं वस्तुओं के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करता।

आसक्ति का विपरीत वैराग्य है। वैराग्य ही वीतरागता का द्वार है। यही अनासक्ति का मार्ग है। किन्तु इसके लिए भी सम्यग्दृष्टिपूर्वक प्रज्ञा का उद्भावन आवश्यक है। आत्मा से शरीर, बुद्धि एवं मन की पृथक्ता जानकर इनका सदुपयोग करना सीख लें एवं इन्हें धर्म-साधना का साधन बना लें तो ये फिर हमें कहीं अटकाने या फंसाने वाले नहीं बनेंगे। आचारांगसूत्र कहता है- आसं च छंदं च विगिंच धीरे। (आचारांग 1.2.4) "हे धीर! आशा-तृष्णा एवं इच्छाओं का त्याग करो"। जो विरक्त होते हैं वे उसी प्रकार कहीं नहीं चिपकते जिस प्रकार सूखा मिट्टी का गोला दीवार पर नहीं चिपकता।

जो अनासक्त होता है वह दुःखरहित होता है, उसे उत्तराध्ययन सूत्र में स्पष्ट किया गया है-

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइ ।।

उसके दुःख नहीं होता, जिसके मोह नहीं है, मोह उसे नहीं होता जिसके तृष्णा नहीं है, तृष्णा उसके नहीं होती जिसके लोभ नहीं है तथा लोभ उसके नहीं होता जो अकिंचन है अर्थात् अनासक्त है। इस प्रकार अनासक्ति ही दुःखमुक्ति का उपाय है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

से किं तं नोआगमतो भावसामाइए?

नोआगमतो भावसामाइए-

जस्स सामाणिओ अप्पा संजमे णियमे तवे।
तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ।।
जो समो सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।
तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ।।

अर्थः-

भगवन्! नोआगमभावसामायिक का क्या स्वरूप है?

जिसकी आत्मा संयम, नियम और तप में संनिहित-लीन है, उसी को सामायिक होती है, ऐसा केवली भगवान् का कथन है।

जो सर्व भूतों - त्रस, स्थावर आदि प्राणियों के प्रति समभाव धारण करता है, उसी को सामायिक होती है, ऐसा केवली भगवान् ने कहा है।

विवेचन- इन दो गाथाओं में सामायिक का लक्षण एवं उसके अधिकारी का संकेत किया है।

संयम-मूलगुणों, नियम-उत्तरगुणों, तप-अनशन आदि तपों में निरत एवं त्रस, स्थावर रूप सभी जीवों पर समभाव का धारक सामायिक का अधिकारी है। जिसका फलितार्थ यह हुआ- संयम, नियम, तप, समभाव का समुदाय सामायिक है। इसलिये समस्त जिनवाणी का सार बताते हुए आचार्यों ने इसकी अनेक लाक्षणिक व्याख्याएँ की हैं-

1. बाह्य परिणतियों से विरत होकर आत्मोन्मुखी होने को सामायिक कहते हैं।
2. सम अर्थात् मध्यस्थभावयुक्त साधक की मोक्षाभिमुखी प्रवृत्ति सामायिक कहलाती है।
3. मोक्ष के साधन सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की साधना को सामायिक कहते हैं।
4. साम-सब जीवों पर मैत्री भाव की प्राप्ति सामायिक है।
5. सावद्ययोग से निवृत्ति और निरवद्ययोग में प्रवृत्ति सामायिक है।

-अनुयोगद्वार सूत्र, सामायिक निरूपण, सूत्र-599

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

स्वाध्याय

- अगर आप अपने आभ्यन्तर में रही अमोघ शक्ति, जो प्रच्छन्न रूप में विद्यमान है, उसे पहचानना चाहते हैं, प्रकट करना चाहते हैं तो शुद्ध और एकाग्रमन से नित्यप्रति नियमित रूप से स्वाध्याय करिये।
- मन के कलुष को, क्लेश को मिटाने में, समाज में व्याप्त बुराइयों, बीमारियों को समाप्त करने में, मानसिक दुःखों को मूलतः विनष्ट करने में और आत्मा पर लगे कर्ममैल को पूर्णतः ध्वस्त कर आत्मा को सच्चिदानंद शुद्ध स्वरूप प्रदान करने में सक्षम अमोघ शक्ति स्वाध्याय ही है। अतः आप स्व-पर कल्याणकारी स्वाध्याय का अलख जगाइये।
- स्वाध्याय के द्वारा प्रौढ़जन भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए एकाग्रता, तन्मयता और दृढ़ संकल्प के साथ अटूट लगन की भी आवश्यकता है। सत्प्रवृत्ति में अनुराग और दुष्प्रवृत्ति के त्याग के लिए ज्ञान का होना अत्यावश्यक है। राम की तरह आचरण करना या रावण की तरह, यह ज्ञान के बिना नहीं जाना जा सकता है।
- भगवान् महावीर ने उत्तम शास्त्रों का लक्षण बतलाया है कि 'जं सुच्चा पडिवज्जंति तवं खंतिमहिंसयं।' जिस शास्त्र को पढ़कर या सुनकर मन को सुप्रेरणा मिले तथा क्षमा, तप, अहिंसा आदि की भावना बलवती हो वह उत्तम शास्त्र है। जैसे मुझ में लगे कांटे मेरे लिए दुःखदायक हैं वैसे ही दूसरों के लिए भी दुःखद होंगे, ऐसी भावना या उत्तम वृत्तियाँ जिसके अध्ययन से जगे, वही उत्तम शास्त्र है और ऐसे शास्त्रों के अध्ययन से ही मनुष्य में विमल ज्ञान चमकता है और वह जीवन को उच्चतम बनाता है।
- सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र से ही व्यक्ति समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण कर सकता है। स्वाध्याय ही इन सबका मूल है। इसके साधन से ज्ञान, दर्शन और चारित्र निर्मल रखा जा सकता है।
- धर्मशास्त्र और अच्छे ग्रन्थ, जिनसे जीवन में तप, क्षमा और अहिंसा की ज्योति जगे और योग-जीवन उत्तरोत्तर आगे बढ़े तथा भोग-जीवन घटे, उन ग्रन्थों को मर्यादा और विधि के साथ पढ़ना व पढ़ाना यही स्वाध्याय है। हाँ, इन ग्रन्थों को पढ़ने के साथ-साथ पढ़ाना भी स्वाध्याय के अर्थ में सम्मिलित किया गया है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

क्षमाशील बनें नर-नारी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 30 जून, 2010 को सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

क्षमाशीलता एक ऐसा सद्गुण एवं धर्म है जो मनुष्य को परिवार, संघ एवं समाज में रहने योग्य बनाता है। इसके बिना कोई न साधना के क्षेत्र में प्रगति कर सकता है और न ही उसका समाज, परिवार एवं संघ में समायोजन होता है। क्षमाशीलता 'पर' की अपेक्षा 'स्व' के लिए अधिक हितकारी है। अनन्त करुणा सागर तीर्थंकर भगवान महावीर ने दस विध धर्मों में सबसे पहला स्थान खन्ती अर्थात् क्षमा को दिया। क्षमाशीलता, सहनशीलता, सहिष्णुता, समता की साधना इस जीव को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा देती है, अभी आपने प्रवचन के माध्यम से श्रवण किया। मैं और आप नहीं, संसार की व्यवहार राशि में आने वाले हर जीव ने न जाने कितना-कितना सहन किया है, उसका वर्णन करना भी कठिन है। चाहे उबाला गया, काटा गया, तरासा गया, अंग-अंग का छेदन-भेदन कर दिया गया, पर जीव ने अन्य गति में उस सबको सहन किया है। कब? जब जीव एकेन्द्रिय था। बोलने, देखने और सुनने की शक्ति तब प्राप्त नहीं थी। इन्द्रियों का विकास होने के साथ सहनशीलता बढ़नी चाहिए, किन्तु घटती हुई देखी जा रही है। आज सहनशीलता का दीवाला निकल चुका है। हम स्वयं को जितना सहझदार समझने लगे हैं उतने ही असहनशील हो गये हैं ऐसा कह दूँ तो......? शायद आपको लगेगा कि यह उल्टी गंगा कहाँ से बह रही है।

आपने नासमझी में कितना सहन किया? आज समझ है, लेकिन समझ का फायदा क्या? समझदारी किसे कहना, यह पूछूँ आपसे? नीतिकार कहते हैं- विद्या ददाति विनयम्। जितना ज्ञान होगा उतना आदमी झुकेगा। जितना ज्ञान बढ़ेगा उतना प्रकाशमान होगा। जितना ज्ञान होगा उतनी क्षमाशीलता बढ़ेगी।

'नाणस्स सव्वस्स पगासणाए'। ज्ञान सबका प्रकाशक है। हमने समझ

पाकर अहंकार बढ़ाया है या सहनशीलता? मेरा एक प्रश्न है। धर्म की आदि का प्रश्न है। विणयं धम्मस्स मूलो। धर्म का मूल विनय है। आप भी बोल गये तो क्या यह बोलने मात्र तक है? स्थानक में हैं तब तक के लिए हैं? पाठ करने के लिए है? परीक्षा देने के लिए है? प्रश्नोत्तरी में नम्बर मिलाने के लिए है? जरा चिन्तन करना कि हमारा ज्ञान हमारे भीतर में सहनशीलता बढ़ा रहा है या अहंकार?

विपरीत प्रश्न करूँ, फिर हमको क्या करना? तुलसीदासजी कहते हैं--

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान।
तुलसी पंडित मूर्खां, दोनों एक समान।।

मैं अपने-आपको साधक कह रहा हूँ, आप अपने-आपको श्रावक कह रहे हैं। जैनत्व का पालन करने वाला यह समझकर हर्षित है कि वह सम्यग्दृष्टि है एवं दूसरा मिथ्यादृष्टि। सम्यग्दृष्टि कौन? क्या बाफना, बोहरा, गाँधी, कांकरिया कुल में जन्म लेने वाला? गुरुदेव से देव-गुरु-धर्म का स्वरूप समझने वाला?

सम्यग्दृष्टि का पहला लक्षण है- शम अथवा सम। शम का अर्थ है कषायों की मन्दता। जीव के विकास में पहला गुण है खन्ती। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय में आया तब तक न जाने कितना-कितना सहन किया। मैं बहुत पुरानी बात कह रहा हूँ, आपने सुनी होगी राजपूत को रेकारे की गाल है। रानी ने काणी कहियोड़ो सहन नहीं होवे। संघ सदस्य भी कई बार सोचते हैं कि मुझे ऐसा क्या समझ कर कहा? मेरे में समझ है, समर्पण है, मुझे ऐसा क्यों कहा गया?

श्रावक हो या साधु ये शोभायमान तभी होते हैं जब जीव में क्षमा का सद्गुण हो? अमुक व्यक्ति बाजू वाले छोटे साधु को वन्दन कर गया, मुझे वन्दन करने का कोई खयाल नहीं। शायद मुझको देखा नहीं। शायद मेरी जानकारी नहीं कि मैं कौन हूँ। शायद यह जानबूझ कर मुझे वन्दन नहीं करना चाहता। वह अपने-आपको क्या मान रहा है?

साधक अपना निरीक्षण करे कि उसके कषायों की क्या स्थिति है? मेरी इन्द्रियों के विषय-कषायों की क्या स्थिति है? मेरे विषय कितने घटे हैं? मैं इतनी संयम की दीर्घ पर्याय में आकर क्या कर रहा हूँ?

गृहस्थ जीवन को भी देखें। सासू समझती है मैं सास हूँ। आ काले री आयोडी छोरी मने कांई समझे? वह बहू को आदर नहीं देती तो समस्या प्रारम्भ हो जाती है। आप चाहे संत-जीवन में हों या गृहस्थ जीवन में, सोचकर चलना आवश्यक है। आपकी सहनशीलता अवस्था बढ़ने के साथ बढ़ी है या नहीं? गुरु की संगति के साथ सहनशीलता बढ़ी है या घटी है?

लोग कहते हैं-बूढ़ो हो जावे तो बावलिया रे भी कांटा कम लागे। पक जाने पर केरी मीठी हो जाती है, आम बन जाती है। कांटे में परिवर्तन आया। केरी में परिवर्तन आया, किन्तु हमारी यह कृतज्ञता, हमारा यह समर्पण, हमारी यह श्रद्धा जिसके सहारे हमने इस जीवन का विकास किया है यह सब किस भूल में चली गई है? इस जड़ को किसने काट दिया है? हम कहाँ पहुँच गए हैं?

कहावत है- ज्ञानी के लिए इशारा ही बहुत होता है। आप ज्ञानसभा में, धर्मसभा में बैठे हैं। रोज सुनने वाले सब ज्ञानी हैं, धर्मी हैं। देखना यह है कि इस ज्ञान का और धर्म का संगम हुआ है या नहीं? ज्ञान का और आचरण का संगम हुआ है या नहीं? बल्ब, टयूबलाइट, ए.सी. पंखा आदि तभी चलते हैं जब दो तारों का संगम हो। आपने पंखा, ए.सी., कूलर तो लगा दिया, किन्तु बटन नहीं दबाया तो.....? बटन के साथ दो तारों का संगम होगा तभी अंधेरा दूर हो सकता है। जब तक दो तार आपस में जुड़ते नहीं तब तक कमरे में न प्रकाश आयेगा, न ठण्डक। इसी तरह जीवन में शांति और समाधि तब तक संभव नहीं जब तक कि ज्ञान के साथ क्षमा आदि का आचरण न हो।

आप घर में देवता बनकर रहना चाहते हैं शान्ति और समाधि से रहना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे पहला सूत्र है आप अपनी सहनशीलता बढ़ाइये। आपमें सहनशीलता का गुण है तो आपके सामने भले ही कोई आग बनकर आए आप पानी बन जाओगे तो आग शान्त हो जाएगी। आपने कई दृष्टान्त सुन रखे हैं। तीर्थंकर भगवान महावीर की इस अनमोल वाणी को मैं अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन का विकास करूँ, आप अपने जीवन में उतार कर अपना विकास करें।

सहनशीलता गुण है। अगर इस गुण का विकास होगा तो आप चहुँमुखी विकास कर सकेंगे। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि,

पंचेन्द्रिय से मनुष्य और मनुष्य से वीतरागता; सबके मूल में सहनशीलता है। जिसने भी सहनशीलता नहीं रखी, उसकी गति बिगड़ी है। चौदह पूर्वधारी ने यदि सहनशीलता नहीं रखी तो उन्हें भी नरक में जाना पड़ा और पाँच समिति तीन गुप्ति वाले ने सहनशीलता रखी तो वह पार हो गया।

जीवन बनाने के लिए लम्बे ज्ञान की जरूरत नहीं है। आप प्राप्त ज्ञान के साथ सहनशीलता बढ़ाने का प्रयास करें तो जीव सामान्य ज्ञान पाकर भी सिद्धि की ओर गमन कर जायेगा। वह जहाँ रहेगा, लोगों के लिए आदर्श बनेगा।

कई लोग तपे-तपाये संतों के पास आते हैं। वहाँ आकर शान्त, सहज और सरल बन जाते हैं। ऐसा कब होता है? राम जहाँ भी गये प्रकृति में शांति छा गई। तीर्थंकर भगवान जहाँ भी विराजते हैं वहाँ प्राणियों में वैरभाव समाप्त हो जाते हैं।

तीर्थंकर भगवन्तों ने हमें एक अनमोल सूत्र क्षमावान् बनने का दिया। यह जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता है। किसी में सौ गुण हैं पर तामस नहीं गया तो कहना होगा सारे गुण धूमिल हो गए। मणि युक्त नाग को कोई पालने को तैयार नहीं। कहा जाता है कि नाग के पास रही मणि कई रोगों को समाप्त कर सकती है। फिर भी मणि वाले सांप की सेवा करने के लिए कोई तत्पर नहीं। उसे पालना तो दूर , सांप पास में आ जाय तो आदमी दूर भाग जाता है। कभी किसी के घर में सांप निकल जाय तो घर वाले घर में नहीं रहना चाहते।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) ने पीपाड़ में फरमाया था कि किसी का छह महीने का बालक दूध पी रहा हो एवं दूध ढुल जाय तो वह बालक उसे हाथ से फैलाता है, खेलता है। कभी लघु शंका की, तो उसे भी हाथ से फैला देता है। बड़ी नीत की, तो भी वह उसमें खेलता रहता है। क्यों? इसलिये कि बच्चे में समझ नहीं है। समझ नहीं इसलिये वह गन्दगी से खेल लेता है। उस बच्चे के सामने रद्दी कागज आया तो आले (मुंह) में और हजार का नोट है तो उसे भी........ । जब वह बच्चा छह साल का हो गया तो क्या अब भी वह वैसा ही करेगा? आप जानते हैं कि वह बालक अब गन्दगी में हाथ से नहीं खेलेगा।

आप साठ साल के हो गये। आप सब समझदार हैं। गली में कीचड़

बिखरा पड़ा है तो कपड़े तो दूर जूते भी खराब न हो जायें, जूतों पर गन्दगी न लगे इसलिए बचकर चलते हैं। किन्तु इस जीवन में असहिष्णुतायुक्त कषाय की कितनी गन्दगी भरी पड़ी है। क्रोध एवं अक्षमा दोष के कारण घर-परिवार स्वर्ग के बजाय नरक बन जाता है। यह बात मेरे लिए, आपके लिए ही नहीं जीव मात्र के लिए सही है। तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी किसी एक के लिए नहीं, सबके लिए है। जब तक ज्ञान का आचरण के साथ सम्बन्ध नहीं जुड़ेगा, जब तक दो तार आपस में मिलेंगे नहीं, जीवन में सुख, शांति, समाधि उत्पन्न होने वाली नहीं। चाहे घर हो, परिवार हो, समाज हो सब जगह आप सहनशील बनिये। सहनशीलता के गुण से शासन की दीप्ति बढ़ेगी। इसी मंगल मनीषा के साथ.......... । ■

'गुरु-गरिमा एवं श्रमण-जीवन' विशेषांक पर प्रतिक्रिया

1. 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के प्रथम मास में जिनवाणी का यह विशिष्ट विशेषांक प्रकाशित हुआ है जो श्रमणाचार का संदेश दे रहा है।
2. यह 20 वीं शताब्दी के युग-प्रधान महापुरुष आचार्य शिरोमणि पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय हस्तीमल जी म.सा. की गौरव गाथा का मंगल संदेश दे रहा है।
3. 'गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरुमान के दो संदेश स्वाध्याय : सामायिक महान' के माध्यम से पाठक अपने जीवन में महानता का अनुभव कर रहा है।
4. जिनवाणी में यह विशेषांक चार चाँद इसलिए लगा रहा है क्योंकि इसमें आधुनिक चिंतन के साथ अखण्ड श्रमणाचार अभिव्यक्त हुआ है।
5. सद्गुरु हस्ती की गरिमा के अनुकूल पर्याप्त पठनीय स्वाध्याय योग्य सामग्री है।

-डॉ. लक्ष्मीचंद जैन, छोटी कसरावद

प्रस्तुत विशेषाङ्क का जो सामग्री-पटल है, वह व्यापक है, इसीलिये इसकी परिधि में शोध-शैली की मुद्रा में कतिपय-तथ्यों का पारदर्शी-संयोजन भी है। मनीषी-चिन्तकों ने गुरु-गरिमा एवं श्रमण-जीवन के रहस्यों और उसके विस्तार को जिस प्रकार समाहित किया है, वह सीमा-स्तम्भ है और उसमें रुचिरता एवं रोचकता दोनों का समान्तर विनियोग पदे-पदे दृश्यमान है। सम्पादक डॉ. श्री धर्मचन्द जी, विशेषाङ्क-विशेषज्ञ हैं, यह कथ्य भी सर्वेक्षण से परिस्पष्ट है।

-उपाध्याय रमेशमुनि शास्त्री, नीलवाल गांव, 5 फरवरी, 2011

साधना

दीक्षा : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी 'शास्त्री'

श्रमण संस्कृति में श्रमण का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। श्रावक के बारह व्रतों का सम्यक् रूपेण पालन करने वाले सद् गृहस्थ के अन्तःकरण में प्रतिपल-प्रतिक्षण यही भव्य भावना रहती है कि मेरे लिये परम सौभाग्य का दिन वही होगा जिस दिन मैं श्रमण धर्म को ग्रहण करूँगा। श्रेष्ठता और ज्येष्ठता मानव की नहीं, अपितु साधना की है, संयम की है। अध्यात्म-साधना के अनुकूल वातावरण रहे, एतदर्थ गृहवास का त्याग कर वेष-परिवर्तन करना अति आवश्यक है। यदि अन्तर्जीवन की विशुद्धि हो गई है तो गृहस्थ अथवा किसी भी वेष में मुक्ति संभव है। मुक्ति-प्राप्ति के लिए वेष उतना बाधक नहीं है जितने कि आन्तरिक विकार। आत्मा का समुत्कर्ष साधने के लिये बाह्य वातावरण और सतत अभ्यास नितान्त अपेक्षित है। साधक एक पथिक है जो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। यदि साधक को समुचित वातावरण उपलब्ध नहीं हुआ तो वह मध्य में भी भटक सकता है और बीच में भी अटक सकता है।

दीक्षा साधक के उस अटकने-भटकने को रोकने का एक सफल उपक्रम है। वह एक ऐसी अखण्ड ज्योतिर्मयी यात्रा है जिसमें साधक असत् से सत् की ओर, अन्धकार से आलोक की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होता है। वह ऐसी आध्यात्मिक साधना है जिसमें साधक बहिर्जगत् से निकल कर अन्तर्जगत् में प्रविष्ट होता है। वह अशुभ संस्कारों का बहिष्कार कर शुभ संस्कारों से जीवन यापन करता है। शुद्धत्व की ओर अपने सुदृढ़ कदम बढ़ाता है। दीक्षा में साधक अपने आप पर शासन करता है। वह बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बन जाता है।

दीक्षा एक रासायनिक परिवर्तन है। सात्त्विक जीवन जीने की विशिष्ट कला है। आत्म-साधना के परम एवं चरम बिन्दु तक पहुँचाने वाले सोपान का नाम 'दीक्षा' है। दीक्षा में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच महाव्रतों का जीवन-पर्यन्त पालन करना अति आवश्यक होता है। साधक दीक्षा के अतीव दृढ़ कवच को पहनकर ही सद्गुरु के मार्ग प्रदर्शन में साधना के महामार्ग पर आगे बढ़ता है तथा अपने आप पर नियन्त्रण करता है।

दीक्षार्थी अपने विशुद्ध परम तत्त्व की शोध के लिये निकलने वाला एक अन्तर्यात्री है। वह अन्तर में प्रवेश करता है। नित्य निरन्तर आने वाले आवरणों को तोड़ कर परम चैतन्य चिदानन्द परमात्म तत्त्व को प्रकट करता और उसका अनुभव करने का प्रयास करता है। दीक्षा वही मानव ग्रहण कर सकता है जिसके अन्तर्मन में वैराग्य का अपार पयोधि उछालें मारता है, जिसमें जितनी वैराग्य-भावना बलवती होती है वह उतना ही अधिक द्रुतगति से आगे बढ़ता है। दीक्षा के लिये वैराग्य अति आवश्यक है। वैराग्योत्पत्ति के दस कारण हैं[1] –

1. **छन्दा**– स्वयं की इच्छा से ली जाने वाली प्रव्रज्या, जैसे गोविन्द वाचक की प्रव्रज्या।[2]
2. **रोषा**– क्रोध से ली जाने वाली दीक्षा, जैसे शिवभूति[3]।
3. **परिद्युना**– दरिद्रता के कारण ली जाने वाली दीक्षा। आचार्य सुहस्ती कौशाम्बी में थे। श्रमणों को भिक्षा ग्रहण करते हुए देखकर एक भिखारी[4] ने भोजन मांगा। आचार्य ने कहा, दीक्षा लेने पर भोजन मिल सकता है। क्षुधा से पीड़ित उस भिक्षुक ने दीक्षा ग्रहण की।
4. **स्वप्ना**– स्वप्न के निमित्त से ली जाने वाली दीक्षा। पुष्पभद्र नगर का राजा पुण्यकेतु और महारानी पुष्पवती थी। उसके एक युगल हुआ। पुत्र का नाम पुष्पचूल और पुत्री का नाम पुष्पचूला रखा।[5] दोनों का विवाह हुआ। माता मर कर देवी बनी। अपने पुत्र और पुत्री को उद्बोधन देने हेतु स्वप्न में नरक की दारुण वेदना बतायी। उन दृश्यों को देखकर विरक्ति हुई और दोनों ने आचार्य अग्निकापुत्र के पास प्रव्रज्या ग्रहण की।
5. **प्रतिश्रुता**– पहले की गई प्रतिज्ञा के कारण ली जाने वाली दीक्षा। राजगृह निवासी धन्ना[6] का शालिभ्रद की बहन सुभद्रा के साथ विवाह हुआ। शालिभद्र के अन्तर्मन में वैराग्य भावना जाग उठी। जिससे वह बत्तीस पत्नियों में से प्रतिदिन एक-एक पत्नी का परित्याग कर दीक्षा का विचार कर रहा था। सुभद्रा की आंखों में आंसू निहार कर धन्ना के दुःख का कारण पूछा तब उसने भाई की दीक्षा की बात कही। धन्ना ने कहा- तुम्हारा भाई कायर है। यदि दीक्षा लेनी है तब एक साथ सबका त्याग क्यों नहीं कर देता? सुभद्रा ने कहा- कहना सरल है, करना कठिन है। धन्ना ने प्रतिज्ञा

की और शालिभद्र के साथ प्रभु महावीर के पास दीक्षा ग्रहण की।

6. **स्मारणिका**– जन्मान्तरों की स्मृति हो जाने पर ली जाने वाली प्रव्रज्या। विदेह जनपद की राजधानी मिथिला के राजा कुम्भ की पुत्री 'मल्ली कुमारी' थी।[7] उसके पूर्व भव के छह मित्र थे– साकेत नगर के राजा प्रतिबुद्ध, चम्पा नगरी के राजा चन्द्रच्छाय, श्रावस्ती नगरी के राजा रुक्मी, वाराणसी नगरी के राजा शंख, हस्तिनापुर के राजा अदीनशत्रु और कांपिल्यपुर के राजा जितशत्रु। पुतली के द्वारा सभी राजाओं को पूर्व भव का स्मरण कराया और वे सभी मल्ली के साथ दीक्षित हुए।

7. **रोगिणिका**– रोग का निमित्त मिलने पर ली जाने वाली दीक्षा। चतुर्थ चक्रवर्ती सनत्कुमार[8] का रूप अद्भुत था, जिसे निहारने के लिये देव उपस्थित हुए। चक्रवर्ती ने कहा यदि तुम्हें मेरा रूप देखना है तो सभा में देखना। सभा में देवों ने रूप देखकर कहा– अब वह रूप नहीं है। शरीर में रोग उत्पन्न हो गया। चक्रवर्ती ने पीकदान में थूक कर देखा। कीड़े कुलबुला रहे थे। इस प्रकार रोग का निमित्त मिलने पर सनत्कुमार चक्रवर्ती ने दीक्षा ग्रहण की।

8. **अनादृता**– अनादर होने पर ली जाने वाली दीक्षा। नन्दीषेण[9] जब गर्भ में था तभी उसके पिता गौतम मर गये और जन्म लेते ही मां भी काल-कवलित हो गयी। मामा के घर में वह बड़ा हुआ। उसका रूप कुरूप था। गांव के लोग उसका अनादर करते। मामा ने कहा– यदि तेरे को कोई पुत्री नहीं देगा तो मैं अपनी पुत्री के साथ तुम्हारा विवाह कर दूंगा। पर उसकी पुत्रियों ने भी विवाह के लिए इन्कार कर दिया। तिरस्कृत नन्दीषेण आत्महत्या के लिये चला। नन्दीवर्धन सूरि के पावन उपदेश से उसे वैराग्य प्राप्त हुआ और दीक्षा ग्रहण की।

9. **देव संज्ञप्ति**– देव के द्वारा प्रतिबद्ध होकर ली जाने वाली प्रव्रज्या। मेतार्य[10] चाण्डालिनी का पुत्र था। उस चाण्डालिनी के साथ सेठानी का अत्यधिक स्नेह था। सेठानी ने अपनी मृत सन्तान को उसे देकर चाण्डालिनी के पुत्र को ले लिया। बड़ा होने पर विवाह हुआ। उस समय उसके पूर्व भव में मित्र देव ने आकर उसे दीक्षा के लिए प्रेरणा दी, पर वह

तैयार नहीं हुआ। देव ने उसके चाण्डाल पुत्र होने का रहस्य खोल दिया जिससे उसका विवाह रुक गया। परिणामस्वरूप मेतार्य को बहुत दुःख हुआ। जब देव ने पुनः दीक्षा की प्रेरणा दी तब मेतार्य ने प्रस्ताव रखा कि वणिक् कन्याओं तथा राजा श्रेणिक की कन्या से मेरा विवाह करा दो और जब बारह वर्ष गृहस्थाश्रम का सुख भोग लूं तब दीक्षा लूंगा। देव ने यह प्रस्ताव साकार किया। तब बारह वर्ष गृहस्थ सुख भोगने के बाद मेतार्य ने प्रभु महावीर के पास दीक्षा ग्रहण की।

10. **वत्सानुबन्धिका**– पुत्र के अनुबन्ध से ली जाने वाली दीक्षा। तुम्बवन में धनगिरि इब्भपुत्र था।[11] उसकी पत्नी गर्भवती थी तब सिंहगिरि के उपदेश से धनगिरि ने दीक्षा ग्रहण की। उसके बाद पुत्र हुआ। लोगों ने कहा– यदि इसका पिता साधु न बना होता तो कितना अच्छा होता। बालक को सुनकर पूर्व भव की स्मृति हो आई। मां की ममता से मुक्त होने के लिए वह रोने लगा। छः महीने के बाद उसके पिता मुनि धनगिरि गोचरी हेतु पधारे। बालक के रुदन से ऊब कर माता ने उनके पात्र में पुत्र को दे दिया। आचार्य ने वज्र के समान कठोर देखकर उसका नाम 'वज्र' रखा। सुनन्दा पुनः पुत्र को प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करने लगी। विवाद राजा तक गया। राज्य सभा में पुत्र पिता की ओर बढ़ा, माँ की ओर नहीं, जिससे माँ को वैराग्य जागृत हुआ और उसने दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षां के लिये वस्तुतः बुभुक्षु नहीं, मुमुक्षु व्यक्ति चाहिये। जिसका तन भी स्वस्थ हो और मन भी स्वस्थ हो। दीक्षा दृष्टि बिन्दु बदलने का प्रमुख साधन है। उसमें जीवन जीने की पद्धति परिवर्तित होती है। चित्त की जो धारा भोग की ओर प्रवाहित हो रही थी, वह त्याग की ओर प्रवाहित होने लगती है। जब मानव को यह अनुभव होता है कि संसार में केवल दुःख है, दुःख की ज्वालाएँ चारों ओर सुलग रही हैं तब उस समय वह मानव संसार के मार्ग से मुड़कर जीवन के अखण्ड आनन्द को प्राप्त करने के लिये आध्यात्मिक महामार्ग पर अग्रसर होता है। इसी सन्दर्भ में यह भी ज्ञातव्य है कि त्याग और वैराग्य की उत्कट भावना से ही साधक दीक्षा ग्रहण करता है। दीक्षार्थी साधक की परीक्षा भी की जाती है। अभिभावक गण उसके वैराग्य को कसौटी पर कसते हैं कि उसका वैराग्य कहीं हल्दी के रंग के समान तो नहीं है जो जरा सी कष्टों की धूप लगते ही उड़ जाए। एतदर्थ

अभिभावक गण सर्वप्रथम दीक्षार्थी को श्रमण धर्म की कठोरता बतलाते हैं। श्रमण धर्म सीधा और सरल नहीं है। गंगा के प्रवाह को तैरने के समान कठिन है। अगाध-अपार महासागर को पार करना, उससे भी अधिक कठिन है। मोम के दांतों से लोहे के चने चबाने के समान दुष्कर है। इस प्रकार पारिवारिक जन वैराग्य का परीक्षण करते हैं और उसके बाद जब उन्हें यह सुदृढ़ विश्वास हो जाता है कि वस्तुतः इसके वैराग्य का रंग अत्यधिक गहरा है तभी वे दीक्षा की अनुमति देते हैं और उसका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

इस प्रकार सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि दीक्षा अन्तर्मुखी साधना है। साधक इसके माध्यम से अन्तर्जगत् में प्रवेश करता है, आत्मज्योति के संदर्शन करता है। इतना ही नहीं, वह जन्म-जन्म के प्रगाढ़ कर्म-बन्धनों को सदा के लिये विनष्ट कर देता है और अपने चरम एवं परम परिलक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, स्वयं कृतकृत्य हो जाता है।

सन्दर्भ:-

1. स्थानांग सूत्र, स्थान - 10, सूत्र 712
2. (क) निशीथभाष्य गाथा 3656 चूर्णि।
   (ख) बृहत्कल्पभाष्य, गाथा 2880
   (ग) दशवैकालिकनिर्युक्ति, गाथा 82
3. आवश्यकनिर्युक्ति, मलयगिरि वृत्ति, पत्र 418-419
4. अभिधानराजेन्द्रकोष, भाग 7, पृष्ठ 197
5. परिशिष्ट पर्व, सर्ग 6, पृष्ठ 99-901
6. (क) त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, 10-10-84/140
   (ख) उपदेशमाला सटीक, गाथा 20, पत्र 256
   (ग) भरतेशबाहुबलिवृत्ति, भाग-1, पत्र 107
7. ज्ञातासूत्र, मल्ली अध्ययन
8. उत्तराध्ययनसूत्र, बृहद् वृत्ति, अध्ययन 18
9. अभिधानराजेन्द्रकोष, भाग-4, पृष्ठ 1757
10. आवश्यकनिर्युक्ति, मलयागिरि वृत्ति, पत्र 477-478
11. आवश्यकमलयगिरि वृत्ति, पत्र 387-88

-द्वारा 1389, जमनादास एण्ड कम्पनी, चाँदनी चौक, दिल्ली

शोधालेख

जैन दार्शनिकों का अन्य दर्शनों को त्रिविध अवदान

प्रो. सागरमल जैन

जैन दर्शनिकों ने अन्य भारतीय दर्शनों को जो अवदान दिया है, वह त्रिविध इस दृष्टि से है कि प्रथमतः उन्होंने अन्य दर्शनों की एकान्तवादी धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताओं की निष्पक्ष समीक्षा की और उनके एकान्तवादिता के दोषों को स्पष्ट किया। इस क्षेत्र में जैन दार्शनिक आलोचक न होकर समालोचक या समीक्षक ही रहे। दूसरे उन्होंने परस्पर विरोधी दार्शनिक मतवादों के मध्य अपनी अनेकान्तवादी दृष्टि से समन्वय किया। तीसरे उन्होंने निष्पक्ष होकर दर्शन संग्राहक ग्रन्थों की रचना की।

1.अन्य दार्शनिक एवं धार्मिक परम्पराओं का निष्पक्ष प्रस्तुतीकरण–

प्रथमतया उन्होंने अन्य भारतीय दर्शनों में जो एकातंवादिता का दोष आ गया था, उसके निराकरण का प्रयत्न किया। जैन दार्शनिकों ने अन्य दर्शनों की जिन मान्यताओं की समीक्षा की, वह उनकी एकांतवादिता की समीक्षा थी, न कि उनके सिद्धान्त का समग्रतया निराकरण। उदाहरणार्थ जैनों ने बौद्धों के जिस क्षणिकवाद की समीक्षा की थी, वह उनके एकांत परिवर्तनशीलता के सिद्धान्त की थी, जैन दर्शन ने वस्तु या सत्ता के स्वरूप में उत्पाद और व्यय को स्वीकार करके वस्तु की परिवर्तनशीलता तो स्वयं ही स्वीकार की थी। इसी प्रकार जब वे सांख्य के कूटस्थ नित्य आत्मवाद या वेदान्त के सत् की अपरिवर्तनशीलता के सिद्धान्त की समीक्षा करते हैं, तो उनका आशय सत्ता की ध्रौव्यता का पूर्ण निराकरण नहीं हैं, वे स्वयं भी उत्पाद-व्यय के साथ सत्ता की ध्रौव्यता को स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार जैन दार्शनिकों के द्वारा उनकी जो आलोचना प्रतीत होती है, वह आलोचना नहीं, मात्र समीक्षा है, यह जान लेना आवश्यक है। वस्तुतः वे उन सिद्धान्तों में रहे हुए एकान्तवादिता के दोषों के निराकरण का प्रयास करते हैं। उनकी भूमिका एक आलोचक की भूमिका नहीं, एक चिकित्सक की भूमिका है। जैसे एक चिकित्सक रोगी की बीमारी का निराकरण करता है, न कि उसके

अस्तित्व को नकारता है, वह तो उसे स्वस्थ बनाना चाहता है। उसी प्रकार जैन दार्शनिक अन्य दर्शनों के एकान्तवादिता के दोष का निराकरण चाहते हैं, न कि उन सिद्धान्तों का समग्रतया खण्डन करते हैं। अतः उनकी अन्य दर्शनों की समीक्षा को इसी रूप में देखा जाना चाहिये।

ऐतिहासिक दृष्टि से अन्य दार्शनिक मान्यताओं की समीक्षा जैन दर्शन में आगम-युग से प्रारम्भ होकर सत्रहवीं शती के उपाध्याय यशोविजय के ग्रन्थों तक निरन्तर रूप से चलती रही, फिर भी जैन दार्शनिक अन्य दर्शनों के प्रति अपनी समालोचना में भी आक्रामक नहीं हुए। इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें मल्लवादी क्षमाश्रमण के द्वादशार नयचक्र (4थी-5वीं शती) में मिलता है, जिसमें उन्होंने अन्य दर्शनों की विधि-विधि, विधि, विधि-निषेध आदि रूपों में समीक्षा की, किन्तु वे किसी दर्शन या दार्शनिक विशेष का नाम लिए बिना, मात्र सिद्धान्त की समीक्षा करते हैं। उन्होंने प्रतिपक्षी या समन्वयक जैन दर्शन का भी नाम लिए बिना मात्र उनकी समीक्षा की है।

जैन परम्परा में अन्य परम्पराओं के विचारकों के दर्शनों एवं धर्मोपदेशों के प्रस्तुतीकरण का प्रथम प्रयास हमें ऋषिभाषित (इसिभासियाइं लगभग ई.पू. 3 शती) में परिलक्षित होता है। इस ग्रन्थ में अन्य धार्मिक और दार्शनिक परम्पराओं के प्रवर्तकों-यथा नारद, असितदेवल, याज्ञवल्क्य, सारिपुत्र आदि को अर्हत् ऋषि कहकर सम्बोधित किया गया है और उनके विचारों को निष्पक्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है। निश्चय ही वैचारिक उदारता एवं अन्य परम्पराओं के प्रति समादर भाव का यह अति प्राचीन काल का अन्यतम उदाहरण है। अन्य परम्पराओं के प्रति ऐसा समादरभाव वैदिक और बौद्ध परम्परा के प्राचीन साहित्य में हमें कम ही उपलब्ध होता है। स्वयं जैन परम्परा में भी यह उदार दृष्टि अधिक काल तक जीवित नहीं रह सकी। परिणाम स्वरूप यह महान् ग्रन्थ जो कभी अंग साहित्य का एक भाग था, वहाँ से अलग कर परिपार्श्व में डाल दिया गया। यद्यपि सूत्रकृतांग, भगवती आदि आगम ग्रंथों में तत्कालीन अन्य परम्पराओं के विवरण उपलब्ध होते हैं, किन्तु उनमें अन्य दर्शनों और परम्पराओं के प्रति वह उदारता और शालीनता परिलक्षित नहीं होती, जो ऋषिभाषित में थी। सूत्रकृतांग अन्य दार्शनिक और धार्मिक मान्यताओं का विवरण तो देता है,

किन्तु उन्हें मिथ्या, अनार्य या असंगत कहकर उनकी आलोचना भी करता है। भगवती में विशेष रूप से मंखलि-गोशालक के प्रसंग में तो जैन परम्परा सामान्य शिष्टता का भी उल्लंघन कर देती है। ऋषिभाषित में जिस मंखलि-गोशालक को अर्हत् ऋषि के रूप में संबोधित किया गया था, भगवती में उसी का अशोभनीय चित्र प्रस्तुत किया गया है। यहाँ यह चर्चा मैं केवल इसलिए कर रहा हूँ कि हम परवर्ती जैन दार्शनिक हरिभद्र, यशोविजय आदि की उदारदृष्टि का सम्यक् मूल्यांकन कर सकें और यह जान सकें कि न केवल जैन परम्परा में अपितु समग्र भारतीय दर्शन में उनका अवदान कितना महान है।

अन्य दर्शनों की एकान्तवादिता की समीक्षा की दिशा में किये गये प्रयत्नों में सर्वप्रथम नाम सिद्धसेन दिवाकर का आता है। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'सन्मतितर्क' में यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि किस दर्शन का कौन सा सिद्धान्त किस नय अर्थात् दृष्टिकोण के आधार पर सत्य है। उन्होंने जैन दर्शन के नयवाद की अपेक्षा से अन्य दर्शनों के सिद्धान्तों की सापेक्षिक-सत्यता का दर्शन कराया। उनकी इस दृष्टि का कुछ प्रभाव समन्तभद्र की 'आप्त-मीमांसा' पर भी देखा जाता है। उन्होंने यह बताया कि वेदान्त (औपनिषदिक वेदान्त) संग्रहनय से, बौद्ध दर्शन का क्षणिकता का सिद्धान्त ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा से तथा न्याय-वैशेषिक दर्शनों के सिद्धान्त व्यवहार नय की अपेक्षा से सत्य प्रतीत होते हैं। यही दृष्टि आगे चलकर समत्वयोगी आचार्य हरिभद्र के ग्रन्थों में भी विकसित हुई। जैन दार्शनिकों में सर्व प्रथम सिद्धसेन दिवाकर ने अपने ग्रन्थों में अन्य दार्शनिक मान्यताओं का विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने बत्तीस द्वात्रिंशिकाएँ लिखी हैं, उनमें नवीं में वेदवाद, दसवीं में योगविद्या, बारहवीं में न्यायदर्शन, तेरहवीं में सांख्यदर्शन, चौदहवीं में वैशेषिकदर्शन, पन्द्रहवीं में बौद्धदर्शन और सोलहवीं में नियतिवाद की चर्चा है, किन्तु सिद्धसेन ने यह विवरण समीक्षात्मक दृष्टि से ही प्रस्तुत किया है। वे अनेक प्रसंगों में इन अवधारणाओं के प्रति चुटीले व्यंग्य भी कसते हैं। वस्तुतः दार्शनिकों में अन्य दर्शनों के जानने और उनका विवरण प्रस्तुत करने की जो प्रवृत्ति विकसित हुई थी, उसका मूल आधार विरोधी मतों का निराकरण करना ही था। सिद्धसेन भी इसके अपवाद नहीं हैं। साथ ही पं.

सुखलाल जी संघवी का यह भी कहना है कि सिद्धसेन की कृतियों में अन्य दर्शनों का जो विवरण उपलब्ध है, वह भी पाठ-भ्रष्टता और व्याख्या के अभाव के कारण अधिक प्रामाणिक नहीं है। यद्यपि सिद्धसेन दिवाकर, समन्तभद्र, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि हरिभद्र के पूर्ववर्ती दार्शनिकों ने अनेकान्त दृष्टि के प्रभाव के कारण कहीं-कहीं वैचारिक उदारता का परिचय दिया है, फिर भी ये सभी विचारक इतना तो मानते ही हैं कि अन्य दर्शन ऐकान्तिक दृष्टि का आश्रय लेने के कारण मिथ्या-दर्शन हैं, जबकि जैन दर्शन अनेकान्त दृष्टि अपनाने के कारण सम्यग्दर्शन है। वस्तुतः वैचारिक समन्वयशीलता और धार्मिक उदारता की जिस ऊँचाई का स्पर्श हरिभद्र ने अपनी कृतियों में किया है वैसा उनके पूर्ववर्ती जैन एवं जैनेतर दार्शनिकों में हमें परिलक्षित नहीं होता है। यद्यपि हरिभद्र के परवर्ती जैन दार्शनिकों में हेमचन्द्र, यशोविजय, आनन्दघन आदि अन्य धर्मों और दर्शनों के प्रति समभाव और उदारता का परिचय देते हैं, किन्तु उनकी यह उदारता उन पर हरिभद्र के प्रभाव को ही सूचित करती है। उदाहरण के रूप में हेमचन्द्र अपने महादेव-स्तोत्र में निम्न श्लोक प्रस्तुत करते हैं-

भव बीजांकुरजनना रागाद्या क्षयमुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै।।

-महादेव स्तोत्र,44

यह श्लोक हरिभद्र के लोकतत्त्वनिर्णय में भी कुछ पाठभेद के साथ उपलब्ध होता है, यथा-

यस्य अनिखिलाश्च दोषा न संति, सर्वे गुणाश्च विद्यन्ते।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै।।

वस्तुतः 2500 वर्ष के सुदीर्घ जैन इतिहास में ऐसा कोई भी समन्वयवादी उदारचेता व्यक्तित्व नहीं है, जिसे हरिभद्र के समतुल्य कहा जा सके। यद्यपि हरिभद्र के पूर्ववर्ती और परवर्ती अनेक आचार्यों ने जैनदर्शन की अनेकान्त दृष्टि के प्रभाव के परिणामस्वरूप उदारता का परिचय अवश्य दिया है, फिर भी उनकी सृजनधर्मिता उस स्तर की नहीं है जिस स्तर की हरिभद्र की है। उनकी कृतियों में दो-चार गाथाओं या श्लोकों में उदारता के चाहे संकेत मिल जायें किन्तु ऐसे कितने हैं जिन्होंने समन्वयात्मक और उदार

दृष्टि के आधार पर षड्दर्शनसमुच्चय, शास्त्रवार्तासमुच्चय और योगदृष्टिसमुच्चय जैसी महान् कृतियों का प्रणयन किया हो।

अन्य दार्शनिक और धार्मिक परम्पराओं का अध्ययन मुख्यतः दो दृष्टियों से किया जाता है, एक तो उन परम्पराओं की आलोचना करने की दृष्टि से और दूसरा उनका यथार्थ परिचय पाने और उनमें निहित सत्य को समझने की दृष्टि से। आलोचना एवं समीक्षा की दृष्टि से लिखे गये ग्रन्थों में भी आलोचना के शिष्ट और अशिष्ट ऐसे दो रूप मिलते हैं। साथ ही जब ग्रन्थकर्ता का मुख्य लक्ष्य आलोचना करना होता है, तो वह अन्य परम्पराओं के प्रस्तुतीकरण में न्याय भी नहीं करता है और उनकी अवधारणाओं को भ्रान्तरूप में प्रस्तुत करता है। उदाहरण के रूप में स्याद्वाद और शून्यवाद के आलोचकों ने कभी भी उनको सम्यक् रूप से प्रस्तुत करने का प्रयत्न ही नहीं किया है। यद्यपि हरिभद्र ने भी अपनी कुछ कृतियों में अन्य दर्शनों एवं धर्मों की समीक्षा की है, अपने ग्रन्थ धूर्ताख्यान में वे धर्म और दर्शन के क्षेत्र में पनप रहे अन्धविश्वासों का सचोट खण्डन भी करते हैं, फिर भी इतना निश्चित है कि वे न तो अपने विरोधी के विचारों को भ्रान्त रूप में प्रस्तुत करते हैं और न उसके सम्बन्ध में अशिष्ट भाषा का प्रयोग ही करते हैं। हरिभद्र ने अपने ग्रन्थ शास्त्रवार्ता समुच्चय में कपिल को महामुनि और भगवान बुद्ध को महा चिकित्सक कहा है। हरिभद्र के शास्त्रवार्तासमुच्चय में इस दृष्टिकोण का एक निर्मल विकास परिलक्षित होता है। अपने ग्रन्थ शास्त्रवार्तासमुच्चय के प्रारम्भ में ही ग्रन्थ रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं-

यं श्रुत्वा सर्वशास्त्रेषु प्रायस्तत्त्वविनिश्चयः।
जायते द्वेषशमनः स्वर्गसिद्धिसुखावहः ।।

अर्थात् इसका अध्ययन करने से अन्य दर्शनों के प्रति द्वेषबुद्धि समाप्त होकर तत्त्व का बोध हो जाता है। इस ग्रन्थ में वे कपिल को दिव्य-पुरुष एवं महामुनि के रूप में सूचित करते हैं- (कपिलो दिव्यो हि स महामुनिः- शास्त्रवार्तासमुच्चय 237) इसी प्रकार वे बुद्ध को भी अर्हत् महामुनि, सुवैद्य आदि विशेषणों से अभिहित करते हैं (यतो बुद्धो महामुनिः सुवैद्यः-वही 465, 466) यहाँ हम देखते हैं कि जहाँ एक ओर अन्य दार्शनिक अपने

विरोधी दार्शनिकों का खुलकर परिहास करते हैं; उदाहरणार्थ न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम को गाय का बछड़ा या बैल और महर्षि कणाद को उल्लू कहा गया है, वहीं दूसरी ओर हरिभद्र जैसे जैन दार्शनिक अपने विरोधियों के लिए महामुनि और अर्हत् जैसे सम्मानसूचक विशेषणों का प्रयोग करते हैं। शास्त्रवार्तासमुच्चय में यद्यपि अन्य दार्शनिक अवधारणाओं की स्पष्ट समालोचना है, किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं मिलता जहाँ हरिभद्र ने शिष्टता की मर्यादा का उल्लंघन किया हो। इसी प्रकार हरिभद्र ने अन्य परम्पराओं की समालोचना में भी जिस शिष्टता और आदर-भाव का परिचय दिया है, वह हमें जैन और जैनेतर किसी भी परम्परा में उपलब्ध नहीं होता है।

यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र ने अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका में अन्य दर्शनों की व्यंग्यात्मक शैली में समालोचना की है, किन्तु कहीं भी अन्य दर्शनों के प्रति अपशब्द का प्रयोग नहीं किया है।

सम्यक् समालोचना की यह परम्परा आगम युग से प्रारम्भ होकर क्रमशः सिद्धसेन दिवाकर के सन्मतितर्क, समन्भद्र की आप्तमीमांसा, मल्लवादीक्षमाश्रमण के द्वादशारनयचक्र, जिनभद्रगणी की विशेषणवती, विशेषावश्यकभाष्य, हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय, शास्त्रवार्तासमुच्चय, अनेकान्तजयपताका आदि ग्रन्थों में, पुनः पूज्यपाद देवनन्दी की सर्वार्थसिद्धि, अकलंक के राजवार्तिक, अष्टशती, न्याय विनिश्चय आदि विद्यानन्दी के श्लोकवार्तिक, अष्टसहस्री आदि, प्रभाचन्द्र के प्रमेयकमल मार्तण्ड, रत्नप्रभ की रत्नाकरावतारिका, हेमचन्द्र की अन्ययोगव्यवच्छेदिका आदि में मिलती है। फिर भी यह धारा आलोचक न होकर समालोचक और समीक्षक ही रही। यद्यपि हमें यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि परवर्ती मध्ययुग में वाद-विवाद में जो आक्रामक वृत्ति विकसित हुई थी, जैन दार्शनिक भी उससे पूर्णतया अछूते नहीं रहे। फिर भी इतना अवश्य मान लेना होगा कि जैन दार्शनिकों की भूमिका आक्रामक आलोचक की न होकर समालोचक या समीक्षक की रही है, क्योंकि उनके दर्शन की धुरी रूप अनेकांतवाद की यही मांग थी। **(क्रमशः)**

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

जीवन–व्यवहार

परिग्रह का परिमाण क्यों?

श्री ओ.पी. चपलोत, FCA

'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो'

सचित्त, अचित्त या मिश्र ऐसी छोटी या बड़ी किसी भी प्राप्त या अप्राप्त वस्तु पर ममत्व, आसक्ति एवं गृद्धिभाव रखना 'परिग्रह' है।

'परिसमन्तात् मोहबुद्ध्या गृह्यते यःस परिग्रहः।'

जिसे मोह बुद्धि के द्वारा सब ओर से ग्रहण किया जाय, उसे 'परिग्रह' कहते हैं। अर्थात् 'पदार्थ' परिग्रह नहीं है, किन्तु उसके प्रति जो ममत्व भाव है, वही 'परिग्रह' है।

परिग्रह : दुःख का हेतु

परिग्रह सभी दुःखों का कारण है। परिग्रही व्यक्ति स्वयं भी दुःखी होता है और दूसरों को भी दुःख में डालता है। परिग्रही व्यक्ति परिग्रह प्राप्त होने से पहले भी दुःखी होता है, प्राप्त करके भी दुःखी होता है एवं परिग्रह छूट जाने पर भी दुःखी होता है। इस प्रकार तीनों ही दशाओं में परिग्रह का दुःख अवश्य लगा हुआ है। सूत्रकृतांग सूत्र के पहले अध्ययन में कहा है–

"चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि।
अण्णं वा अणुजाणाइ एवं दुक्खा न मुच्चइ।।"

जो व्यक्ति सचित्त अथवा अचित्त परिग्रह किंचित् भी रखता है या परिग्रह रखने के लिए दूसरों को आदेश देता है तथा परिग्रह रखने वाले व्यक्ति का समर्थन करता है, उसे अच्छा समझता है, वह दुःख से कभी छुटकारा नहीं पाता।

परिग्रह को सभी पापों का कारण कहा है। परिग्रह हिंसा, झूठ, चोरी आदि समस्त पापों का केन्द्र है तथा परिग्रह का चारों कषायों क्रोध, मान, माया एवं लोभ से घनिष्ठ संबंध है। उत्तराध्ययन सूत्र के नवें अध्ययन में प्रभु ने फरमाया है–

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया।
णरस्स लुद्धस्स ण तेहि किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।।

यदि कैलाश पर्वत के समान सोने-चांदी के असंख्य पर्वत भी मिल जायें तो भी लोभी मनुष्य को संतोष नहीं होता। निश्चय ही इच्छा आकाश के समान अनन्त है। इच्छा अनंत है, इसलिए उसका पूर्ण होना असंभव है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में प्रभु ने परिग्रह के लिए कहा है-

'नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सव्वजीवाणं सव्वलोए।'

अर्थात् लोक में समस्त जीवों के लिए परिग्रह के समान कोई बंध नहीं है। परिग्रह का संपूर्ण रूप से त्याग तो सर्वत्यागी निर्ग्रंथ ही कर सकते हैं। अतः परिग्रह को मर्यादित करने के लिए प्रभु ने श्रावकों के लिए परिग्रह-परिमाण व्रत नामक पांचवां अणुव्रत बतलाया है।

परिग्रह के भेद

परिग्रह दो प्रकार का है- बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह।

बाह्य परिग्रह को 9 भागों में विभक्त किया गया है:

1. **क्षेत्र**- उपजाऊ भूमि।
2. **वास्तु**- निवास योग्य विभिन्न प्रकार के भवनादि।
3. **हिरण्य**-चांदी के आभूषण, पात्र आदि।
4. **सुवर्ण**-सोने के आभूषण, पात्र आदि।
5. **धन**- मुद्रा आदि।
6. **धान्य**- अन्न, चावल आदि कृषि उत्पादित खाद्य पदार्थ।
7. **द्विपद**- दौ पैर वाले स्त्री, पुरुष तथा तोता, मैना आदि पक्षी।
8. **चतुष्पद**- चार पैर वाले प्राणी जैसे गाय, भैंस, बैल, हाथी, घोड़ा, भेड़, बकरी आदि।
9. **कुप्य**- सोने चांदी की वस्तुओं के अतिरिक्त जो अन्य वस्तुएँ हैं, वे कुप्य हैं, जैसे- लोहा, तांबा, पीतल आदि धातुओं से निर्मित वस्तुएँ गाड़ी, रथ, मोटर आदि वाहन।

आभ्यन्तर परिग्रह

किसी भी वस्तु पर ममत्व एवं मूर्च्छा रखना आभ्यन्तर परिग्रह है। हास्य, रति, अरति, भय, शोक, घृणा, क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्री संबंधी भोगेच्छा, पुरुष संबंधी भोगेच्छा, नपुंसक की भोगेच्छा और मिथ्यात्व ग्रहण ये सभी आभ्यन्तर

परिग्रह हैं।

परिग्रह परिमाणव्रत का स्वरूप

मनुष्य के लिए आवश्यकता पूर्ति से अधिक पदार्थों का संग्रह अनुचित है। प्रभु ने श्रावकों के लिए पांचवां अणुव्रत 'थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं' बतलाया है। इस व्रत में श्रावक परिग्रह की मर्यादा करता है। इस व्रत का दूसरा नाम इच्छा-परिमाण व्रत है। इस व्रत के अन्तर्गत श्रावक अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं वैराग्य वृत्ति के अनुसार नौ प्रकार के परिग्रह की मर्यादा करता है तथा धीरे-धीरे इन सीमाओं में उत्तरोत्तर कमी करता है। इस व्रत की पालना करने से श्रावक में धीरे-धीरे उसकी आशा, तृष्णा व मूर्च्छा कम होती जाती है।

मनुष्य के मन में सांसारिक पदार्थों धन-संपत्ति, स्त्री, पुत्रादि के प्रति ममत्व होता है एवं यह मेरा है या यह मेरी है ऐसा सोचकर उसे संतोष का अनुभव होता है। किन्तु जैसे-जैसे उसे सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति होती है उसकी अधिक से अधिक प्राप्त करने की लालसा बढ़ती रहती है एवं उसके पास जो कुछ है उससे तृप्ति नहीं होती है। मनुष्य की इस ममत्व वृत्ति को नियंत्रित कर उन वस्तुओं का परिमाण करना ही परिग्रह परिमाण व्रत है।

सामान्यतया परिग्रह से आशय अधिक धन संपत्ति के होने को माना जाता है, किन्तु यह उपयुक्त नहीं है। उपासकदशांग सूत्र में आनन्द, कामदेव आदि श्रावकों का वर्णन आता है, जिनके पास अपार संपत्ति थी, किन्तु उन्होंने अपनी आवश्यकता के अनुसार मर्यादा करते हुए परित्याग किया। आनन्द के पास अपार संपत्ति थी, फिर भी उन्होंने इच्छा-परिमाण व्रत के अन्तर्गत निम्न प्रकार से प्रत्याख्यान किये-

1. चार करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ भण्डार में, चार करोड़ व्यापार में, चार करोड़ की घर बिखरी। इसके अतिरिक्त शेष हिरण्य-स्वर्ण विधि का प्रत्याख्यान किया।
2. दस हजार गायों का एक व्रज, ऐसे चार व्रजों के अतिरिक्त शेष पशुधन का प्रत्याख्यान किया।
3. सौ निवर्तन का एक हल, ऐसे पांच सौ हल के उपरान्त शेष सभी क्षेत्र-वास्तु विधि का परिमाण किया।

उक्त उल्लेख से स्पष्ट होता है कि आनन्द आदि श्रमणोपासक धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा और अन्य सभी प्रकार की पौद्गलिक संपदा से युक्त थे। परन्तु जब

भगवान महावीर स्वामी का उपदेश सुना तो उनकी रुचि निवृत्ति की ओर बढ़ गई। भगवान के प्रथम दर्शन में ही उन्होंने अपने व्यापार, व्यवसाय, तृष्णा और भोग-विलास पर अणुव्रत का ऐसा अंकुश लगाया कि वे वर्तमान स्थिति में ही संवरित रहे एवं उनका लक्ष्य प्रवृत्ति घटाकर निवृत्ति बढ़ाने का रहा। इसी से वे व्यापार-व्यवसाय और गृह परिवार में रहकर अणुव्रतादि का पालन करते रहे तथा फिर उपासक प्रतिमाओं की आराधना करने के लिए पौषधशाला में चले गये। वहाँ उन्होंने विशेष रूप से धर्म आराधना की।

परिग्रह का प्रभाव

(1) जगत में जो सीमित मात्रा में उपलब्ध पदार्थ हैं, उन पर सभी का उपभोग-अधिकार है। जब कुछ व्यक्ति अपनी तृष्णा व लोभ के वशीभूत औसत से अधिक मात्रा में ऐसे पदार्थों का संग्रह कर लेते हैं तो इसका प्रभाव यह पड़ता है कि शेष अनेक अपने उपभोग अधिकार से वंचित कर दिये जाते हैं। मनुष्य की यह असीमित आकांक्षा एवं लोभ ही अन्य मनुष्यों के साथ अन्याय का कारण बनते हैं। इसी लालसा के कारण कभी-कभी तो जीवन के लिए नितान्त आवश्यक सामग्रियों का भी अभाव दिखाई देने लगता है और जनसामान्य का जीवन संकट में पड़ जाता है।

(2) जब मनुष्य अनियंत्रित आकांक्षाओं के अधीन होकर अधिक से अधिक धन एवं पदार्थों का संग्रह कर लेने के लिए उद्यत रहता है तो वह साधनों की पवित्रता, अपवित्रता का ध्यान छोड़ देता है। चाहे किसी भी प्रकार से आए, उसके पास अधिक से अधिक संग्रह होता चला जाए, बस उसका यही लक्ष्य रहता है। इससे वह घोर अधार्मिक वृतियों में लिप्त होकर पतित हो जाता है।

(3) अन्याय एवं अनिति की कमाई से मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भले ही करले, किन्तु धन का अपार भण्डार एकत्रित नहीं कर सकता। यह तो पाप की कमाई से ही संभव है। आचार्य गुणभद्र ने इसीलिए कहा है- "सज्जनों की संपत्ति शुद्ध न्यायोपार्जित धन से नहीं बढ़ती। क्या कभी भरी पूरी नदियों को भी स्वच्छ जल से परिपूर्ण देखा गया है?" सत्य है, जब नदियाँ लबालब भरी होती हैं तो उनका पानी मटमैला, गंदला ही होता है। उसी प्रकार अधिक संग्रह भी पाप की कमाई से ही संभव होता है।

(4) शास्त्रकारों ने परिग्रह को समस्त पापों का मूल बताया है। भगवती सूत्र के

दूसरे शतक में गौतम स्वामी के प्रश्न के उत्तर में भगवान ने फरमाया है कि इच्छा, मूर्च्छा और गृद्धि से क्रोध, मान, माया और लोभ का घनिष्ठ संबंध है। सब पाप परिग्रह से उत्पन्न होते हैं। प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है कि परिग्रह के लिए लोग हिंसा करते हैं, झूठ बोलते हैं, वस्तु में भेल-संभेल करते हैं, परदारगमन व परदारहरण करते हैं। क्षुधा, तृष्णा आदि स्वयं सहन करते हैं, दूसरों से करवाते हैं तथा कलह करते हैं। दूसरों का बुरा चाहते हैं। अपशब्द कहते हैं। दूसरों का अपमान करते हैं। अपमानित होते हैं। स्वयं चोरी करते हैं। दूसरों से चोरी करवाते हैं। सदैव चिंतित होते हैं। बहुतों का हृदय दुःखाते हैं।

इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं कि परिग्रह के लिए ही कई अनर्थ हुए। भरत चक्रवर्ती ने अपने भाई की स्वाधीनता छीनने का प्रयत्न किया। कौरव व पांडव भाई थे, किन्तु परस्पर में परिग्रह के लिए लड़ मरे। परिग्रह के कारण ही मणिरथ ने अपने छोटे भाई युगबाहू को मौत के घाट उतार दिया।

इस प्रकार परिग्रह सभी पापों का केन्द्र व सभी अनर्थो की जड़ है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं ब्रह्मचर्य इन चारों व्रतों की पालना अपरिग्रह व्रत की पालना के बिना संभव नहीं है।

इच्छा और आवश्यकता की भेद रेखा

एक बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि धर्मशास्त्रों में श्रावक के पांचवें व्रत को 'इच्छा परिमाणव्रत' बताया गया है, 'आवश्यकता परिमाणव्रत' नहीं। क्योंकि जो आवश्यकताएँ हैं, वे जीवन निर्वाह के लिए जरूरी हैं। उनकी मर्यादा क्या होगी? मर्यादाएँ इच्छाओं की होगी। आवश्यकता अलग चीज है, और इच्छा अलग। आज बहुत से संघर्ष तो आवश्यकता और इच्छा के अन्तर को न समझने के कारण होते हैं। मनुष्य अपनी इच्छा को ही आवश्यकता मान बैठता है और उसकी पूर्ति के लिए इन्सानियत को भी भूल बैठता है। रक्त संबंधों को भी विस्मृत कर देता है। इसीलिए प्रभु ने स्पष्ट कहा है कि इच्छाओं पर नियंत्रण करो, उनकी सीमा करो। इस व्रत के अन्तर्गत श्रावक अपनी इच्छाओं की मर्यादा स्वेच्छा से करता है, जबरदस्ती नहीं। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा है-"यह धरती हरेक की जरूरत पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लालच की नहीं।"

अपरिग्रह व्रत एवं आधुनिक प्रबंधन

हमारा शरीर इसीलिए स्वस्थ रहता है कि उसके हर अवयव को रक्त का प्रवाह मिलता रहता है। जब शरीर के किसी एक भाग में रक्त का प्रवाह रुक जाता है, वह एक ही जगह जमा हो जाता है, तब शरीर में दर्द प्रारम्भ हो जाता है। क्या आज के समाज का दर्द यह नहीं है? जब तक गृहस्थ समाज के हर अवयव तक धन का साधन पहुँचता है तब तक समाज पीड़ित नहीं होता। जब वह कुछ लोगों तक ही पहुँचकर रुक जाता है या एक के पास जमा हो जाता है, तब समाज में पीड़ा का प्रारम्भ हो जाता है। वस्तुतः वर्तमान समाज की पीड़ा धन नहीं है, उसका अर्जन भी नहीं है, उसका उपयोग भी नहीं है, उसकी पीड़ा है- धन का संग्रह, वैयक्तिक स्वामित्व का विस्तार।

वैयक्तिक स्वामित्व की असीमता किसी के हित में नहीं है, यह तथ्य स्वानुभव से सिद्ध हो चुका है। समाजवादी शासन प्रणाली में भी वैयक्तिक स्वामित्व को समाप्त करने की व्यवस्था है। अर्जन के साथ जब परिग्रह या ममत्व का विसर्जन नहीं होता, तब समाज में अनेक बुराइयां फैलती हैं।

संसार में आज अधिकांश लोग नंगे-भूखे दिखाई देते हैं, उसका एक कारण संग्रह बुद्धि वाले व्यक्ति हैं। एक ओर पदार्थों का अम्बार लगा है, उनको इतने पदार्थों की आवश्यकता नहीं, दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं जिनको उन पदार्थों की आवश्यकता है। वे उन पदार्थों के उपभोग से वंचित हैं। ऐसी स्थिति में संसार में विषमता पैदा होती है, जिसके फलस्वरूप लूटपाट, मारकाट एवं रक्तपात आदि होते हैं। कुछ लोगों के पास धन का अत्यधिक संग्रह है, जबकि दूसरे लोग एक-एक पैसे के लिए तरस रहे हैं। एक ओर अत्यधिक अन्न कोठारों में जमा है, जबकि दूसरी ओर अन्न के दाने के अभाव में हाहाकार मचा हुआ है। एक ओर सन्दूकों में वस्त्र पड़े सड़ रहे हैं, उन्हें दीमक खा रहे हैं, जबकि दूसरी ओर लोग सर्दी से ठिठुर रहे हैं। कुछ के पास सीमा से अधिक जमीन है, कुछ लोगों के पास पर्याप्त जमीन नहीं है जिसे जोत-बोकर वे अपने परिवार के गुजारे लायक अन्न पैदा कर सकें। इस प्रकार की विषमता इस संग्रहबुद्धि या जमाखोरी की देन है।

जो लोग संग्रह करते हैं, उनमें भी अधिकांश बिना श्रम किये ही सांसारिक सुख भोगने की इच्छा वाले होते हैं। पर उनकी इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाती। इसीलिए प्रभु ने सुखी बनाने के लिए श्रावकों को पांचवें अणुव्रत के रूप में परिग्रह-परिमाण व्रत की

पालना का उपदेश दिया। यदि परिग्रह में सुख होता तो चक्रवर्ती, राजा, सेठ आदि अपार धन संपत्ति को छोड़कर संयम पथ पर अग्रसर नहीं हुए होते।

इच्छा-परिमाण व्रत के लाभ

परिग्रह यानी संग्रह बुद्धि के पीछे मूल आशय यह रहता है कि संगृहीत पदार्थ व्यक्ति को सुख देते हैं, किन्तु जैन दर्शन के अनुसार यह धारणा निर्मूल और भ्रान्तिपूर्ण है।

महाकवि शेक्सपियर ने भी कहा है- "मनुष्यों की आत्मा के लिए स्वर्ण निकृष्टतम विष है। इस दुःखमय विश्व में धन का विष अन्य विषों की अपेक्षा अधिक मारक और संहारक होता है।"

संसार के धन कुबेर हेनरीफोर्ड ने अपनी डायरी में लिखा है- "धन का अभिशाप तो मैं इसी जीवन में भोग रहा हूँ। धन की अधिकता के कारण आज मेरी स्थिति ऐसी हो गई कि विपुल संपत्ति होते हुए भी मुझे चाय के अतिरिक्त और कुछ लेने के लिए डॉक्टरों ने मना कर दिया है।"

भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में स्पष्ट कहा है-

'वित्तेण ताणं ण लभे पमत्ते।''

उत्तराध्ययन.अ.4, गाथा 5

प्रायः व्यक्ति धन सम्पदा को त्राण रूप मानता है, परन्तु वह धन उसके लिए त्राणरूप नहीं होता।

यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि इच्छा परिमाणव्रत का आश्रय लेने से गृहस्थ श्रावक का कोई भी व्यावहारिक कार्य रुकता नहीं, न विकास कार्य में रुकावट ही आती है, बल्कि वह धर्मध्यान, आत्म-चिन्तन आदि कार्य निश्चिन्ततापूर्वक कर सकता है। इस प्रकार इच्छा परिमाणव्रत स्वीकार कर लेने पर सब प्रकार की अशांति दूर हो जाती है।

इच्छा परिमाणव्रत स्वीकार करने वाला महापरिग्रह से बच जाता है, क्योंकि उसने इच्छाओं को सीमित कर दिया है। जैन दर्शन के अनुसार वह कुगति में जाने से बच जाता है एवं सुगति में जाता है।

इच्छा परिमाणव्रत स्वीकार करने वाला व्यक्ति कभी इस बात से चिन्तित नहीं होता कि उसकी वस्तु कोई छीन लेगा, चुरा लेगा या नष्ट कर देगा चूंकि उसकी आसक्ति सहज रूप से कम हो जाती है। अतः उसके लिए दुःख का कोई कारण नहीं

रहता।

वर्तमान में जो गरीबी, भ्रष्टाचार, अनैतिक कार्य, चोरी, डकैती आदि दिखाई देते हैं, उन सबके पीछे मनुष्य की इच्छाओं का अनियंत्रण ही है। यदि इस व्रत को समझकर स्वीकार कर लिया जाये तो कई सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

- प्रथम माला, 66, पंचशील मार्ग,
टाउनहॉल के पास, उदयपुर-313001(राज.)

मन की शान्ति के सूत्र

संकलन- श्री नवरतन डागा

1. दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप न करें।
2. भूलें और क्षमा करना सीखें।
3. प्रशंसा की चाह न करें।
4. ईर्ष्यालु न बनें।
5. टकराव का विचार छोड़ें।
6. जो आपके वश में नहीं उसे सहना सीखें।
7. सामर्थ्य से अधिक भार (काम) न लें।
8. नियमित रूप से प्रतिदिन ध्यान करें, स्वाध्याय करें।
9. मन को किसी न किसी कार्य में लगाए रखें।
10. दीर्घसूत्री न बनें।
11. दुष्टता को भी शिष्टता से सहन करें।
12. माध्यस्थ भाव में जीना ही जीना है।
13. यतना नहीं रखेंगे तो यातना सहन करनी पड़ेगी।
14. अनर्थ के त्याग से समय सार्थक बनता है। धीर, वीर, गंभीर वही होता है जो अपने स्वयं के साथ बुराई नहीं करता।
15. साधना की शुरुआत संयोग से मुक्त होने पर होती है।
16. मद, दम को तोड़ देता है।
17. दूसरों की भलाई करना अच्छा है, लेकिन खुद की बुराई ढूँढना और भी अच्छा है।

-संयोजक, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है

आचार्य विजय रत्नसुंदरसूरि

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा एवं द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।**-सम्पादक**

महाराज साहब,

दुनिया जिसे सुख मानती है वह सब कुछ आज मेरे पास है।
'मेरे पास है' ऐसा न कहते हुए
'हमारे पास है' ऐसा कहूँगा तो अधिक उचित होगा।
क्योंकि हम दो भाई साथ में रहते हैं।
हम दोनों का विवाह हो चुका है।
घर में मैं छोटे भाई के स्थान पर हूँ।
व्यापार में हम दोनों भाई साथ हैं।
गाड़ी, विशाल बंगला, समाज में प्रतिष्ठा,
लाखों रुपयों की लेन-देन, फैला हुआ कारोबार-
इतना सब कुछ होने पर भी वातावरण में जो
प्रसन्नता होनी चाहिए वह नहीं है।
विशेष कारण के बिना
हम दोनों भाई एक-दूसरे से बात तक नहीं करते।
बात करते भी हैं तो उस बातचीत में कहीं
स्नेह-सद्भाव अथवा संवेदनशीलता का
अनुभव नहीं होता।
परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि हम दोनों भाइयों की पत्नियों में
आपस में बहुत मेल है।
आज तक कभी उन दोनों में संघर्ष अथवा अनबन नहीं हुई।
बड़े भैया जब कभी भाभी के लिए कीमती साड़ी लाएँ हैं

तब मेरी पत्नी नाराज नहीं हुई और
मैं कभी मेरी पत्नी के लिए गहने लाया हूँ
तब भाभी हमेशा खुश ही हुई हैं।
अत्यंत व्यथा के साथ आपको कहता हूँ कि
हम दोनों भाइयों के बीच खून का रिश्ता होने पर भी
कहीं प्रेम के दर्शन नहीं होते, जबकि
हम दोनों की पत्नियों के बीच खून का रिश्ता न होने पर भी
मानों प्रेम का सागर उमड़ रहा है।
क्या लिखूँ आपको?
मित्रों के साथ घंटों तक
मैं मजे से बातें करता हूँ।
ग्राहकों के साथ चाहे जितने घंटों बातचीत करनी हो
मुझे कभी थकान महसूस नहीं होती,
बल्कि आनन्द ही आता है।
अरे, भले ही मेरे दोनों बच्चों के साथ बातें करते करते
मैं कभी-कभी थक जाता हूँ, परन्तु बड़े भैया के दोनों बच्चों के साथ
बातें करते-करते घंटों बीत जाते हैं फिर भी कुछ पता नहीं चलता।
लेकिन, न जाने क्यों?
बड़े भैया के पास न बैठने का मन होता है
न ही उनसे बात करने की इच्छा होती है।
एक ही घर में रहने पर भी
एक ही क्षेत्र में साथ काम करने पर भी
कहीं प्रेमजन्य प्रसन्नता का अनुभव नहीं होता।
महाराज साहब,
कभी-कभी मुझे ऐसा महसूस होता है कि
यदि यह परिस्थिति यथावत् बनी रही तो
शायद मैं पागल हो जाऊँगा अथवा आवेश में आकर
गलत निर्णय लेकर जीवन समाप्त कर बैठूँगा।
आप तो मुझे बचा लीजिए।

मैं अच्छी तरह जानता हूँ – आप तो समस्त संसार का
त्याग करके संयमजीवन जी रहे हैं।
हम संसारियों के जीवन में आपको कोई रुचि न हो
यह भी मैं समझ सकता हूँ।
फिर भी, इस समस्या के समाधान के लिए मैं आपके पास
आया हूँ, क्योंकि मैं इस उत्तम मानव जीवन को हार जाना नहीं चाहता।
मन को चौबीसों घंटे दुर्ध्यान में व्यस्त रखना नहीं चाहता।
बड़े भैया के प्रति हृदय में द्वेष रखकर परलोक सिधारना नहीं चाहता।
अशुभ कर्मबंध का शिकार बनकर मेरी आत्मा को दुर्गति में ढकेलना नहीं चाहता।
आपसे मिन्नतभरी याचना करता हूँ कि आप मुझे इस वेदना से मुक्त कर ही दीजिए।

यश,

तुम्हारा पत्र मिला।
एक बात तुम्हें बता दूँ कि तुम दोनों भाइयों के आपस में
रुक्ष व्यवहार की बात मेरे कानों तक कब की आ चुकी है।
रेत के दो कण चाहे बरसों तक साथ रहें,
वे कभी एक-दूसरे में एकरूप होते ही नहीं है।
पानी के संपूर्ण बर्तन पर चाहे तेल फैला हुआ दिखाई देता हो,
पानी और तेल के बीच कभी संबंध बंधता ही नहीं है।
कदाचित् ऐसी ही स्थिति का सर्जन हुआ है तुम दोनों भाइयों के बीच।
साथ होने पर भी तुम दोनों साथ नहीं हो।
घर दोनों का एक है, पर मन अलग हो चुके हैं।
दोनों के शरीर में एक ही माँ-बाप का खून बह रहा है, पर
प्रेम की मानो शवयात्रा निकल चुकी है।
और ऐसी स्थिति में तुमने जो लिखा है वही होगा-
आदमी पागल बन जाए अथवा जीवन समाप्त करने के लिए तैयार हो जाए।
क्या लिखूँ तुम्हें?
छोटा बच्चा खेलता भले ही खिलौने से है, परंतु
जीने के लिए तो उसे दूध ही चाहिए।
गाड़ियों की भरमार या आकर्षक बंगले से,

विपुल संपत्ति या प्रचंड कीर्ति से,
विशाल व्यापार या पुरस्कारों की भरमार से,
मनुष्य एक बार अपने मन को बहला सकता है,
अपनी इन्द्रियों को बहका सकता है, परंतु
यदि वह प्रसन्न रहना चाहता है, जीवन को रसपूर्ण बनाए रखना चाहता है,
हृदय को उत्साहपूर्ण बनाए रखना चाहता है,
सकारात्मक व्यवहार का स्वामी बने रहना चाहता है,
तो प्रेम के आदान-प्रदान के बिना,
संवेदनशीलता को आत्मसात् किए बिना,
हृदय को प्रधानता दिए बिना उसे किसी भी हालत में सफलता नहीं मिल सकती।
दुःखद वास्तविकता तो यह है कि बहुजनवर्ग को यह सत्य तभी
समझ में आता है जब संवेदनाओं को कुचलते रहकर,
संबंधों में रही आत्मीयता की उपेक्षा करते रहकर और
संवेदनशीलता को फ्रिज में रखकर,
दुनिया की दृष्टि में 'सफल' घोषित होने में वह सफल हो चुका होता है।
परंतु, अग्नि जैसे अपने साथ धुँआ लेकर आती है,
साँप जैसे अपने पीछे केंचुली छोड़ जाता है,
भूकंप जैसे अपने साथ विनाश ले आता है, वैसे ही यह 'सफलता' अपने साथ
निराशा, नकारात्मक वृत्ति, निष्ठुरता, यही नहीं
निर्दयता को लेकर ही आती है।
मन की इस पीड़ा से मुक्त होने के लिए यह वर्ग पागल बनकर चारों ओर
दौड़ता रहता है।
कोई क्लब की शरण में चला जाता है तो
कोई व्यभिचार के अड्डे पर चक्कर लगाता है।
कोई ड्रग्स के चंगुल में फँस जाता है तो
कोई घंटों तक टी.वी. के डिब्बे के सामने बैठा रहता है।
कोई मनोचिकित्सक की राय लेने पहुँच जाता है तो
कोई रेल की पटरी के नीचे आकर जीवन समाप्त कर बैठता है।
यश,
ये बातें मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ कि तुम आत्मनिरीक्षण कर सको।

मैं तुम्हारे स्वभाव को जानता हूँ।
तुम महत्वाकांक्षी हो।
स्पष्टवादिता तुम्हारा स्वभाव बन चुका है।
कहीं गलत हो रहा हो तो विद्रोह करना तुम्हारे लिए सहज बन चुका है।
रौब जमाने की वृत्ति तुमने आत्मसात् कर रखी है।
शायद इनमें से ही कुछ कारण बड़े भैया और
तुम्हारे संबंधों में रुक्षता पैदा करने में निमित्त बने हों ऐसी पूर्ण संभावना है।
इस पत्र में मैं तुम्हें यही बताना चाहता हूँ कि शक्कर को एक कोने में
रखकर मिठाई नहीं बनाई जा सकती, वैसे ही हृदय को एक ओर
ढकेलकर जीवन के एक भी पल को प्रसन्नतापूर्ण नहीं बनाया जा सकता।
यह बात हमेशा याद रखना। (क्रमशः)

टूटते घर

श्रीमती कमला सुराणा

सहनशीलता की हो गई कमी इस तरह
घर टूट रहे हैं काँच के छल्ले की तरह
विवाह-विच्छेद हो रहे हैं मस्ती की तरह
जीवन-रिश्ते हो रहे हैं, खेल की तरह।
भूल गए सीता-सावित्री का चरित-प्रीत
निरर्थक हो जाएँगे अब नारी के यशो-गीत
क्या देंगे हम अपने बच्चों को सीख
जब नारीत्व पर हो जाएगी पैसे की जीत।
अहं ने लूट लिया हमको, पैसे ने चूँट लिया हमको
अशान्ति ने घेर लिया हमको, रोगों ने जकड़ लिया हमको।
इस भूत से निपटना होगा, इस छूत से बचना होगा
पाश्चात्य लहर से छुटकारा पाना होगा
'टूटते घरों' को जोड़ना होगा।
सदाचार के रंग में रंगना होगा
सुसंस्कार में रमना होगा।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

एकांकी

चरित्र-क्रान्ति-अभियान

डॉ. रमेश 'मयंक'

प्रस्तुत एकांकी में समकालीन परिदृश्य का प्रभाव अंकित है। व्यापक स्तर पर चरित्र-क्रान्ति-अभियान की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। जब उत्तरदायी कर्णधारों के ही भ्रष्टाचार में लिप्त होने के स्वर उठे, तो भूल स्वीकारना सबसे बड़ा कन्फेशन है- यह दर्शन भी झलकता है। चरित्र का परिष्कार विश्व जनीन मांग है। विचार-बोध एवं गीत पक्ष में "किं चरित्रम्"- आचार्य विजयराज जी की प्रेरणा का उपयोग किया गया है-**सम्पादक**

पात्र– सूत्रधार एवं चार श्रावक, मुनिवर इत्यादि

(दृश्य एक)

मंच पर– सूत्रधार का प्रवेश होता है–

सूत्रधार– आज व्यक्ति अशान्त है। आए दिन ऐसी घटनाएँ जिनसे गर्दन झुक जाए, आँखों में शर्म नज़र आए। जिन कर्णधारों के हाथों राष्ट्र के विकास की जिम्मेदारी सौंपी वे ही बन बैठे घपलों, घोटालों के महारथी और निकल गई बहुजन हिताय की अर्थी। यह सब क्यों? सर्वत्र चरित्र का संकट।

आइए- इस चरित्र के संकट की तह तक जाएँ। कोई आदरणीय अनुकरणीय चरित्र से प्रेरणा ले पाएँ, और आने वाले कल को उज्ज्वल बनाएँ। परिवार, समाज और राष्ट्र में चरित्र निर्माण का वातावरण बनाएँ।

धीरे-धीरे मंच पर प्रकाश व संगीत उभरता है, तीव्र होता है तथा मंद होते हुए लुप्त हो जाता है। पार्श्व संगीत उभरता है–

रोते हुए मुस्करा दिए, जीवन उसी का नाम।
मुस्कराकर खिलखिला दिए, जीवन उसी का नाम।।
जीवन की चिन्ताओं में, जिये जाते कई लोग,
चिन्ताओं को दफना दिए, जीवन उसी का नाम।

सपनों की कल्पनाओं में, उड़ने का अर्थ क्या,
सपनों को सच बना दे, जीवन उसी का नाम ।।
कहीं क्रोध, कहीं लोभ, घृणा का ताण्डव कहीं,
दीया प्यार का जला दे, जीवन उसी का नाम ।
सन्देह के भंवर में, आज हम उलझ गए,
विश्वास को जगा दे, जीवन उसी का नाम ।।

(गीत समाप्त होते-होते मंच पर एक मुनि का प्रवेश होता है, वे आसन पर विराजमान हो जाते हैं। कुछ पल पश्चात् चार श्रावक उपस्थित होते हैं। मुनि की वन्दना करते हैं तथा चरणों में अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं।)

श्रावक एक– व्यक्ति से विश्व तक चारित्रिक संकट गहरा रहा है। हम क्या कर सकते हैं?

मुनिवर– हम सन्त, मुनि हैं। अपनी मर्यादाओं में आबद्ध। हम तो उपदेश की भाषा में प्रवचन व विचार प्रेषण कर सकते हैं। गृहस्थों तथा श्रावकों को जागरूक, कर्मठ, प्रबुद्ध और दूरदर्शी होना पड़ेगा।

श्रावक दो– सभी को समझना होगा अपना-अपना दायित्व। बनना होगा चरित्र-निर्माण-क्रान्ति अभियान में सहयोगी।

श्रावक तीन– मुनिवर! आप ही कुछ समझाइए। पथ-प्रदर्शक बन जाइए।

श्रावक एक– चरित्र-निर्माण विषयक विचारों की गंगा बहाइए ताकि शुष्क वातावरण में हरियाली का संचार हो सके।

श्रावक दो– आज अपसंस्कृति अथवा चरित्रहीनता के नाग ने अपने फन फैला लिए हैं। वे संस्कृति एवं चरित्र गरिमा को लील जाने को तत्पर हैं। अपसंस्कृति के परिणाम स्वरूप कई ज्वलंत समस्याओं ने अपने पर फैलाए हैं।

श्रावक तीन– समाज व राष्ट्र भयावह पीड़ा की त्रासदी से पीड़ित है। जनता के धन, हितों को भुला दिया गया है। घपलों व घोटालों की भरमार है। करोड़ों खा गए फिर भी नहीं ली डकार, फिर कैसे होगा राष्ट्र का उद्धार?

श्रावक एक– इस हृदय–द्रावक सम्पूर्ण भयावह स्थिति को देखते हुए नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।

श्रावक दो– इसके लिए करनी होगी एक सम्पूर्ण क्रान्ति। चलाना होगा एक अभियान। एक ऐसा अभियान जो कुचल सके, अप संस्कृति के नाग को।

श्रावक तीन– उखाड़ सके बुराइयों की समस्त जड़ों को।

श्रावक चार– यह कार्य अत्यन्त कठिन है एवं श्रम साध्य भी।

श्रावक एक– इसे सहज, सुकर व सुसाध्य बनाया जा सकता है।

श्रावक दो– कैसे?

श्रावक तीन– यदि धर्माचार्य, धर्म गुरु, शिक्षा–शास्त्री तथा समाज व राष्ट्र के कर्णधार एक जुट हो जाएँ।

श्रावक चार– यह कार्य केवल उपदेशों, लेखों व नारों से नहीं हो सकता।

श्रावक एक– इसके लिए आमूल–चूल परिवर्तन करना होगा।

श्रावक दो– किसमें?

श्रावक तीन– शिक्षा में, जीवन शैली में, जीवन मूल्यों में।

श्रावक चार– यह कार्य कौन करेगा?

समवेत स्वर– हम सब। हम सब। हम सब।

(दृश्य दो)

सूत्रधार– महामहिम, प्रज्ञा निधि मुनिवर स्वयं चरित्रपुरुष, तेजस्वी, प्रभावक, महामनीषी एवं आत्मसाधक हैं। आचार्य होने के नाते आप समाज व जगत के प्रति अपने कर्त्तव्य–बोध के प्रति सजग हैं। देश व समाज की वर्तमान स्थिति पर उनका ध्यान जाना स्वाभाविक है।

आपसे अनुरोध है कि– राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की दिशा में एक ठोस भूमिका निभाएँ। चरित्र निर्माण क्रान्ति का शंखनाद गुंजाए। नेतृत्व करने के लिए आगे आएँ। बाल–युवा–प्रौढ़ वर्ग को चारित्रिक जीवन शैली समझाएँ। और करें– चरित्र

का परिष्कार। जिससे विकसित हो सके राष्ट्र का उद्धार।

श्रावक एक– मुनिवर! आप ओजस्वी व्याख्याता हैं–
उत्तम चरित्र धारण करते
स्नेह, संवेदना, सद्भाव, सहकार
और सह-अस्तित्व के पाँच गुणों को,
समझाते– धर्म की गूढ़ता, समाज की रचना-धर्मिता और राष्ट्र के प्रति निष्ठा को;
आचरण में उतारते समूचे विश्व जनहितार्थ
मानव कल्याण की प्रतिष्ठा को।

श्रावक दो– आपकी वाणी में मृदुता के साथ-साथ ओजपूर्ण सशक्तता है। व्यवहार में आत्मीयता के साथ कठोर अनुशासन भी है।

श्रावक तीन– आपकी वाणी मंत्र मुग्ध करती है। आपका व्यक्तित्व तेजस्वी, ओज युक्त चुम्बकीय आकर्षण वाला है।

श्रावक चार– आप स्वयं चरित्र-साधना के पथिक एवं पुरोधा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत चरित्र-निर्माण का यह उद्घोष अवश्य प्रभावी होगा। समाज एवं देश ही नहीं सम्पूर्ण जगत को एक नूतन सशक्त क्रान्तिकारी दिशा प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

समवेत स्वर– हम सब का विश्वास है। हम सबका विश्वास है।

सूत्रधार– तो हम सब सुनें मुनिवर का उद्बोधन, क्योंकि जब-जब भी धन सत्ता का आकर्षण बढ़ जाता है मानव चरित्र पटरी से उतरता और–
उत्पन्न होता– सांस्कृतिक संकट।
आती– राष्ट्र के सामने चुनौतियाँ, समस्याएँ विकट
तब– भ्रष्टाचार में लिप्त समाज को
प्रवचनों की शब्द धारा,
सद्चरित्रवानों में निष्ठा ही बचाती है
मानो– कीचड़ में कमल खिलाती है।

मुनिवर- आयु की दृष्टि से जीवन कितना लम्बा है- यह तथ्य महत्त्व हीन है। महत्त्व इस बात का है कि प्राप्त जीवन को हम कितनी सार्थकता से जीते हैं। इस सार्थकता के सूत्र हैं- जीवन चरित्र-शील बने, सत्कार्य करने की लगन व ताकत हो, सबका हित साधने की भावना रहे, लोकोपकार की गहरी धुन लगे तथा चरित्र सम्पन्नता के साथ यह जीवन आदर्श रूप ले सके।

सूत्रधार- मुनिवर! चरित्र की महत्ता और शक्ति का विश्लेषण फरमाइए।

मुनिवर- चरित्र का चमत्कार ऐसा होता है कि चरित्रशीलों की ताकत हर मुकाम तक पहुँचने पर दुगुनी हो जाती है। वे रहस्य-भेदन, जिज्ञासा, समाहरण तथा साधना-प्रतिफलन के अपने साहसिक चरणों को आगे से आगे बढ़ाते हुए चलते ही रहते हैं।

समवेत स्वर- हम सब आपके पथ पर चलते ही जाएँगे। आपके अभियान को आगे बढ़ाएँगे।

मुनिवर- मैं आपको चरित्र की प्राण शक्ति के बारे में बताता हूँ। मानव चरित्र और सामाजिक चरित्र दोनों के विकास की प्राण शक्ति होती है- संस्कृति। संस्कृति का निर्माण सभी प्रकार के संस्कारों से छनकर ही होता है। शुद्धता एवं शुभता चरित्र में लम्बे समय तक स्थिर रहती है।

संस्कृति का रूप सकारात्मक एवं भावनात्मक होता है।

चरित्र ही सत्यं शिवं सुन्दरम् का हेतु है। उदात्त भावनाओं के जागरण का सेतु है।

श्रावक एक- इस नव जागरण को बहु आयामी कैसे बनाएँगे?

मुनिवर- चरित्र-अभियान में नव निर्माण, निर्विघ्न गति एवं साध्य-प्राप्ति विचारों के मूल में है। विचार जब दृढ़ता पकड़ते हैं तो संकल्प बनते हैं। संकल्प समभाव से तरंगित होकर समर्पण के साथ जब आबद्ध होते हैं तब कार्य-क्षमता एवं सफलता

की सुनिश्चित गारंटी हो जाती है।

श्रावक दो– फिर विचारों में विकारों का आगमन क्यों होता है?

मुनिवर– विचारों में विकार विकृत संस्कारों के कारण आते हैं। अप-संसर्ग, रोमांच, अनियंत्रित इच्छाएँ, भौतिक एवं दैहिक राग व्यक्ति के विचारों को विचलित कर देते हैं। विचलित विचारों वाला व्यक्ति विवेक खोता है। विवेक शून्य होकर वह भूल जाता है लोक निंदा को, मान-अपमान को, लज्जा-शर्म को, कर्त्तव्य-कलंक को, तब शुरु होती है भटकन, फिसलन और सिर्फ पतन।

श्रावक तीन– व्यक्ति का स्वार्थ जब सर्वोपरि हो जाता है तो उसे समष्टि हित कहाँ ध्यान में आता है?

श्रावक चार– स्वार्थ के लिए जी लिए,
स्वार्थ के लिए मर मिटे,
कभी मानवता के लिए मिटे,
जीवन उसी का नाम।

मुनिवर– यह मानव जीवन अर्थवत्ता से विशाल है और उद्देश्यपरकता से विराट् है। चरित्र-निर्माण के अभियान में प्रबुद्धों का ध्यान स्वयं के साथ-साथ विश्व से भी जुड़ना चाहिए। ध्यान-साधना हो या चरित्र विकास- व्यक्ति से समूहों तक फैलाव जरूरी है। सघन विस्तार से चरित्र का वैश्वीकरण हो जाता है।

सूत्रधार– चरित्र-निर्माण की दिशा में विधेयात्मक सोच राष्ट्रीय चरित्र एवं जगच्चरित्र के पथ को प्रशस्त करता है। चरित्रनिष्ठ व्यक्तित्व का विकास सम्पूर्ण आयामों का दस्तावेज है।

समवेत स्वर– तो हम सब क्या करें?

मुनिवर– नकारात्मक सोच से ऊपर उठकर सकारात्मक सुदृढ़ चिन्तन को प्रधानता दो। प्रबुद्ध वर्ग ध्यान रखे कि कर्णधार अपने पथ से विचलित नहीं हो, अधिकारों का गलत उपयोग नहीं करे।

सूत्रधार– हम सब संकल्प करते हैं कि अपसंस्कृति के फैलते हुए इस महाजाल को छिन्न–भिन्न करेंगे। चरित्र में आई विकृतियों का आत्मशोधन से परिष्कार करेंगे।

समवेत स्वर– हम सभी विभिन्न दिशाओं एवं क्षेत्रों में जाकर इस चरित्र क्रान्ति के अभियान को सफल बनाएँगे।

सूरज की धूप में झुलसे, रहे पथिक के प्राण।
जलते को ठंडी छाँव दे, जीवन उसी का नाम।।

स्वर धीरे–धीरे मंद होते हुए समाप्त होता है।

(दृश्य–तीन)

सूत्रधार– ज्ञान से जानो
दर्शन से श्रद्धा करो
चरित्र से करो अपना निग्रह
और तप से तपकर
अपने को शुद्ध बनाओ,
चरित्र क्रान्ति के इस महा अभियान में
चलते जाओ, चलते जाओ।

मंच पर विराजमान मुनिवर का सभी श्रावक वन्दन करते हुए अपना–अपना स्थान ग्रहण करते हैं–

श्रावक एक– मुनिवर! मैंने चरित्र–क्रान्ति अभियान के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु पूर्वी क्षेत्रों की यात्राएँ कीं। लोगों ने व्यापक स्तर पर समर्थन दिया तथा चारित्रिक परिष्कार का संकल्प लिया है। एक थे– मिस्टर थामस, जिन पर पदासीन रहते हुए निष्पक्षता नहीं बरतने का आरोप था, उन्होंने अपनी भूल स्वीकार की है। मुनिवर! वे आगे का उचित मार्ग–दर्शन चाहते हैं।

श्रावक दो– मैं पिछले दिनों प्रवास के दौरान कबाड़ी जी से मिला था। उन्होंने तो कबाड़ा ही कर दिया था। करोड़ों का। अब वे भी सही राह पर आना चाहते हैं।

श्रावक तीन– मैंने लाला खाजा से बात की थी। लोग कहते हैं वे भी

करोड़ों डकार गये। मुझे तो वे अपराध बोध से ग्रसित लगे। उनके साथी खंजन जी का मन बहुत आहत है।

श्रावक चार– मैंने पीरा बाडिया को शर्म से पानी–पानी होते देखा है।

श्रावक एक– मुनिवर! माननीय चाटजू भी बेदाग नहीं रह सके थे।

मुनिवर– हम किसी के व्यक्तिगत आरोपों व निन्दा की बातें न करें। घृणा पाप से करो, पापी से नहीं।

समवेत स्वर– तो क्या किया जाए? कैसे होगा सुधार?

मुनिवर– सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो आगे की सोचना चाहिए। क्षमा वीरस्य भूषणम्।

सूत्रधार– सब जागरूक रहें।

समवेत स्वर– हाँ, हम सब जागरूक रहेंगे। किसी को भी जनता का धन डकारने नहीं देंगे।

मुनिवर– हमें बदलाव लाना होगा, जीवन शैली में, जीवन मूल्यों में, संयमित जीवन–यापन करना होगा। तोड़ना होगा तृष्णाओं व महत्त्वाकांक्षाओं के मोहपाश को, तब निखरेगा हमारा चरित्र।

समवेत स्वर– हम सब संकल्प करते हैं कि कभी भी अपने पद, प्रभाव, अधिकार का दुरुपयोग नहीं करेंगे। सदैव सार्वजनिक हित में काम करेंगे। राष्ट्र की उन्नति में पूरी ईमानदारी व पारदर्शिता बरतेंगे।

सूत्रधार– यदि वास्तव में ऐसा होगा तो भारत भ्रष्टाचार–विहीन हो जाएगा। भारत सद्चरित्रवानों की महान मिशाल बन जाएगा।

समवेत स्वर– हमारा चरित्र–क्रान्ति महा अभियान सफल कहलाएगा।

मुनिवर– अवश्य–अवश्य लेकिन याद रखो, जब लालच चरम सीमा पर होता है तो भ्रष्टाचार खर–पतवार की तरह फैलने लगता है। हम यथार्थ को स्वीकारें– नकारें नहीं। बाहर नहीं भीतर झांके। स्व को निष्पक्षता से आँकें और कसें मानक मापदण्डों की खरी कसौटी पर। परिचय दें–अदम्य साहस का, यथार्थ को सार्वजनिक रूप में स्वीकार करने का। तोड़ें लालच का

चक्रव्यूह जिससे न तो प्रशासन शर्मसार होगा न न्यायपालिका और न ही कार्यपालिका।

सूत्रधार– हम अपना कार्य विभाजन और सीमा रेखा खुद तय करेंगे। सभी की आत्मा जाग्रत होगी। भूल को स्वीकार करना– सबसे बड़ा कन्फेशन है। छवि को धूमिल होने से बचाना है।

समवेत स्वर– हम सब संकल्प करते हैं कि भ्रष्टाचार की जड़ें उखाड़ फेंकेंगे। हम सब देश के लिए जीएँगे। अपना चरित्र उज्ज्वल, निर्मल और पारदर्शी बनाएँगे।

मुनिवर– आपका पथ शुभ हो। आप सभी को शुभकामनाएँ। सभी मिलकर गाते हैं–

शब्द की अंगुलि पकड़ कर, अर्थ की पगडंडियों पर,
चेतना के पंख फैला कर, तुम समय को लाँघ जाओ,
जीवन अपना सफल बनाओ।
धूप का आँचल उठाए, कथ्य की किरणें बिछाए।
अनुभवों की गूंज लेकर, तुम सृजन को लाँघ जाओ।
जीवन अपना सफल बनाओ।
सत्य का आवेग भरकर, आचरण के गुरु शिखर पर।
चरित्र का विश्वास लेकर, तुम क्षितिज को लाँघ जाओ।
जीवन अपना सफल अनाओ।

सूत्रधार– चरित्र सुधारकों को प्रणाम।

–बी–8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़–312001 (राज.)

आवश्यक सूचना

जिनवाणी का माह दिसम्बर-जनवरी का विशेषांक तथा फरवरी-2011 का अंक जिन-जिन सदस्य महानुभावों को डाक की अनियमितता के कारण प्राप्त नहीं हुआ है। वे पत्र/पोस्टकार्ड द्वारा यथासंभव सदस्यता क्रमांक लिखकर मंडल कार्यालय को सूचित कर मंगवा सकते हैं। फोन द्वारा दी गयी सूचना मान्य नहीं होगी।

–मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर (राज.)

English-Section

100 BENEFITS OF MEDITATION

Sh. srikant Jain

Physical Benefits:

1. It lowers oxygen consumption.
2. It decreases respiratory rate.
3. It increases blood flow and slows the heart rate.
4. Increases exercise tolerance.
5. Leads to a deeper level of physical relaxation.
6. Good for people with high blood pressure.
7. Reduces anxiety attacks by lowering the levels of blood lactate.
8. Decreases muscle tension.
9. Helps in chronic diseases like allergies, arthritis etc.
10. Reduces Pre-menstrual Syndrome symptoms.
11. Helps in post-operative healing.
12. Enhances the immune system.
13. Reduces activity of viruses and emotional distress.
14. Enhances energy, strength and vigour.
15. Helps with weight loss.
16. Reduction of free radicals, less tissue damage.
17. Higher skin resistance.
18. Drop in cholesterol levels, lowers risk of cardiova-scular disease.
19. Improved flow of air to the lungs resulting in easier breathing.
20. Decreases the aging process.
21. Higher levels of DHEAS (Dehydroepiandros-terone).
22. Prevents, slowed or controlled pain of chronic diseases.
23. Makes you sweat less.
24. Cures headaches migraines.
25. Greater Orderliness of Brain Functioning.
26. Reduces Need for Medical Care.
27. Less energy wasted.

28. More inclined to sports, activities.
29. Significant relief from asthma.
30. Improves performance in athletic events.
31. Normalizes to your ideal weight.
32. Harmonizes our endocrine system.
33. Relaxes our nervous system.
34. Produce lasting beneficial changes in brain electrical activity.
35. Helps to cure infertility (the stresses of infertility can interfere with the release of hormones that regulate ovulation).

Psychological benefits:

36. Builds self-confidence.
37. Increases serotonin level, influences mood and behaviour.
38. Resolve phobias fears.
39. Helps control own thoughts.
40. Helps with focus concentration.
41. Increase creativity.
42. Increases brain wave coherence.
43. Improves learning ability and memory.
44. Increases feelings of vitality and rejuvenation.
45. Increases emotional stability.
46. improves relationships.
47. Mind ages at slower rate.
48. Easier to remove bad habits.
49. Develops intuition.
50. Increases Productivity.
51. Improves relations at home at work.
52. Able to see the larger picture in a given situation.
53. Helps to ignore petty issues.
54. Increases ability to solve complex problems.
55. Purifies your character.
56. Develops will power.
57. Greater communication between the two brain hemispheres.
58. Respond more quickly and more effectively to a stressful event.

59. increases one's perceptual ability and motor performance.
60. Higher intelligence growth rate.
61. Increases job satisfaction.
62. Increase in the capacity for intimate contact with loved ones.
63. Decrease in potential mental illness.
64. Better, more sociable behavior.
65. Less aggressiveness.
66. Helps in quitting smoking, alcohol addiction.
67. Reduces need and dependency on drugs, pills pharmaceuticals.
68. Needs less sleep to recover from sleep depriv-ation.
69. Requires less time to fall asleep, helps to cure insomnia.
70. Increases sense of responsibility.
71. Reduces road rage.
72. Decrease in restless thinking.
73. Decreases tendency to worry.
74. Increases listening skills and empathy.
75. Helps make more accurate judgements.
76. Greater tolerance.
77. Gives composure to act in considered constructive ways.
78. Grows a stable, more balanced personality.
79. Develops emotional maturity.

Spiritual benefits:

80. Helps to keep things in perspective.
81. Provides peace of mind, happiness.
82. Helps you to discover your purpose in life.
83. Increases self-actualization.
84. Increases compassion.
85. Growing wisdom.
86. Deeper understanding of yourself and others.
87. Brings body, mind, and spirit in harmony.
88. Deeper Level of spiritual relaxation.
89. Increases acceptance of one self.
90. Helps to learn forgiveness.
91. Changes attitude toward life.
92. Creates a deeper relationship with your God.

93. Increases the synchronicity in your life.
94. Greater inner-directedness.
95. Helps living in the present moment.
96. Creates a widening, deepening capacity for love.
97. Discovery of the power and consciousness beyond the ego.
98. Experience an inner sense of "Assurance or Knowingness".
99. Experience a sense of "Oneness".
100. Leads to enlightenment.

To top it off, meditation has NO negative side effect.

Surana and Surana international attorneys, Chennai

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस
4. प्रकाशक का नाम	:	विरदराज सुराणा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर–302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	3 के 24–25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर–342005 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर–302003 (राज.)

मैं विरदराज सुराणा, मंत्री–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2011

हस्ताक्षर-विरदराज सुराणा

प्रकाशक

स्वानुभव

विद्वत् परिषद् की सक्रियता : एक सराहनीय कदम

डॉ. दिलीप धींग

किसी भी परम्परा और संस्कृति का मूलाधार उसका तत्त्वज्ञान और दर्शन होता है। ज्ञान और दर्शन के विभिन्न पहलुओं को विद्वान्, साहित्यकार, कवि और विचारक अपनी प्रतिभा, योग्यता और मनीषा से भाँति-भाँति से विवेचन करके उन्हें युगानुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। इस तरह एक सच्चा रचनाकार युगद्रष्टा होता है और युगस्रष्टा भी। रचनाकार को एक ओर ज्ञान के उपलब्ध मूल स्रोतों से जुड़ा रहना पड़ता है, दूसरी ओर उसे वर्तमान समय का विशेषज्ञ होना पड़ता है। इस प्रकार की ज्ञानाराधना में उसे एक विद्यार्थी, जिज्ञासु और शोधार्थी की भाँति साधना करनी होती है। ऐसी साधना के फलस्वरूप ही अभिनव, मौलिक, उपयोगी, प्रभावी और कालजयी सृजन संभव हो पाता है। ऐसी सृजनधर्मिता से अधिकाधिक लोगों के जीवन में ज्ञान की महिमा के प्रति आकर्षण बढ़ता है और ज्ञानार्जन की एक परम्परा का विकास होता है। ज्ञान की इस परम्परा के विकास के लिए समाज में समय-समय पर विद्वानों के प्रोत्साहन के बारे में विचार होता रहा है। लेकिन कुछ दीर्घद्रष्टा युगमनीषी व्यक्ति ही ऐसे उपयोगी विचार को मूर्त रूप देने के लिए पहल कर पाते हैं।

आचार्य हस्ती एक ऐसे ही दीर्घदर्शी युगमनीषी श्रमण थे। ज्ञान को उन्होंने जीवन की सच्ची पूंजी माना और ज्ञान की आराधना और प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने दो स्तरों पर कार्य किया। प्रथम स्तर पर उन्होंने नित्य साधना में सामायिक के साथ स्वाध्याय को जोड़ा। इससे आगमिक ज्ञान और सत्साहित्य के पठन-पाठन के प्रति विशाल सर्व साधारण गृहस्थ वर्ग में रुचि पैदा हुई। स्वाध्याय का सुफल यह हुआ कि ज्ञान-शून्य क्रियाओं पर अंकुश लगा, लोगों की विचार-शक्ति बढ़ी और एक साधारण श्रावक भी अपने धर्म, संस्कृति, इतिहास और तत्त्वज्ञान की जानकारी रखने वाले विद्वान तक बन गये। लेकिन सबके लिए ज्ञान की विशेष आराधना करना संभव नहीं होता है। आचार्य हस्ती ने इस परिस्थिति को समझा और ज्ञानाराधना के लिए

उन्होंने दूसरे स्तर पर जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया, वह है- विद्वानों का निर्माण। अर्थप्रधान युग में यह कार्य आसान नहीं था। अतुल आत्मबल के धनी आचार्य हस्ती मुश्किल को आसान बनाने की साधना करते थे। उनकी प्रेरणा से विद्वानों को तैयार करने के लिए कुछ शिक्षण संस्थाएँ भी बनीं। उन शिक्षण संस्थाओं का लाभ समाज को मिल रहा है।

इस क्रम में ही 12 नवम्बर 1978 को आचार्य हस्ती की पुनीत प्रेरणा से उनके इन्दौर चातुर्मास में "अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्" का गठन हुआ, जिसका उद्घाटन इन्दौर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. देवेन्द्र शर्मा ने किया था। गठन के साथ ही विद्वानों का द्विदिवसीय सम्मेलन भी आचार्यप्रवर के सान्निध्य में हुआ, जिसमें देशभर से पचास से अधिक विद्वानों ने भाग लिया। श्री सौभाग्यमल जी जैन को परिषद् का अध्यक्ष और डॉ. नरेन्द्र जी भानावत को महामंत्री बनाया गया था। विद्वत् परिषद् के उद्देश्य और महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. धर्मचन्द जैन लिखते हैं- "अलग-अलग क्षेत्रों में बिखरे समाज के जैन विद्या में निरत विद्वानों, श्रीमन्तों, कार्यकर्ताओं और संस्थाओं में पारस्परिक सम्पर्क व सामंजस्य स्थापित करते हुए जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास आदि के अध्ययन-अध्यापन, पठन-पाठन, संरक्षण-संवर्धन, शोध-प्रकाशन आदि को प्रोत्साहन देने के लिए अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् का गठन किया गया।"[1] इस अवसर पर आचार्य हस्ती ने विद्वानों को उद्बोधन देते हुए फरमाया कि वे जैन शास्त्र और श्रद्धा को सुरक्षित रखने के लिए वैज्ञानिक चिन्तन प्रस्तुत करें, धर्म-परम्परा के लिए विघटन या विध्वंस की नीति न रखकर निर्माणात्मक-रक्षणात्मक नीति का उपयोग करें, इतिहास के भ्रान्त विचारों का निराकरण करें, स्वाध्याय का प्रचार करें और स्वयं शास्त्र-ग्रन्थों का अध्ययन करें। जैन कॉन्फ्रेंस के मंत्री फकीरचन्द मेहता ने विद्वत् परिषद् के अन्तर्गत जैन दिवाकर जन्मशती के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 'जैन दिवाकर स्मृति व्याख्यानमाला' आयोजित करने की घोषणा की।[2]

इस विद्वत् परिषद् के माध्यम से विद्वानों को एक मंच मिला। परिषद् के द्वारा देश के विभिन्न प्रान्तों में आचार्य हस्ती के सान्निध्य में अनेक संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। उन संगोष्ठियों में शुरु से ही स्थानकवासी विद्वानों के

अलावा अन्य जैन-जैनतर विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता था। विविध उपयोगी और विमर्शनीय विषयों पर सन् 1993 तक प्रतिवर्ष वैसी विद्वत् संगोष्ठियाँ होती रहीं। इसके साथ ही ज्ञानप्रसार पुस्तकमाला, आचार्य रत्नचन्द्र व्याख्यानमाला, जैन दिवाकर व्याख्यानमाला और जैन विद्या को प्रोत्साहित करने वाले कार्य भी होते रहे।[3]

1993 के बाद विद्वत् परिषद् सक्रिय नहीं रह सकी। हालांकि विद्वानों को प्रोत्साहित करने वाले अन्य प्रकल्प किसी न किसी रूप में चलते रहे। वर्ष 2010 में आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के पावन निमित्त से अनेक कार्य और कार्यक्रम हुए। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष शिक्षाप्रेमी पी. शिखरमल सुराणा की लम्बे समय से यह प्रबल भावना थी कि जैन विद्वत् परिषद् को पुनः सक्रिय किया जाना चाहिये। जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन को वे बार-बार इसके लिए आग्रह करते रहे। अन्ततः उनकी भावना फली और 13-14 नवम्बर 2010 को पाली में आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में 'आचार्य हस्ती का साहित्य और समाज को अवदान' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। डॉ. धर्मचन्द जी के संयोजन में हुई इस संगोष्ठी में सभी वर्ग और श्रेणियों के विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर सारगर्भित आलेख प्रस्तुत किये। विद्वानों की रुचि, योग्यता और विशेषज्ञता के अनुसार डॉ. धर्मचन्द जी ने उनको विषय दिये।

पूर्व में होने वाली विद्वत् परिषद् की संगोष्ठियों में जिस प्रकार जैन-जैनेतर सभी विद्वानों को आमंत्रित किया जाता था, उसी उदारता का परिचय देते हुए आचार्य हस्ती जन्मशती संगोष्ठी में भी जैन-जैनेतर सभी विद्वानों को आमंत्रित किया गया। वरिष्ठ विद्वान् डॉ. सागरमल जैन और डॉ. दयानन्द भार्गव दोनों ही दिन पूरे समय संगोष्ठी में उपस्थित रहे। डॉ. दयानन्द भार्गव ने अपने चिर-परिचित लहजे में व्याख्यान देकर श्रोताओं को ज्ञान बाँटा। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति प्रकाशचन्द टाटिया ने कहा कि जो व्यक्ति इन विद्वानों को सुनने से वंचित रहे, उन्होंने कुछ खोया है। उन्होंने श्रुत व स्वाध्याय के क्षेत्र में युवा पीढ़ी को आगे आने के लिए भी आह्वान किया। ऐसा ही आह्वान दूसरे दिन के प्रवचन-सत्र में न्यायाधिपति जसराज चौपड़ा ने भी किया।

संगोष्ठी के प्रेरक व पोषक परम गुरुभक्त पी. शिखरमल सुराणा ने स्वयं ''दक्षिण भारत को आचार्य हस्ती का अवदान'' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुराणा जी ने प्रत्येक विद्वान को ध्यानपूर्वक सुना और उसे सराहा। जैनेतर विद्वानों की प्रस्तुतियाँ उन्हें इस मायने में अधिक प्रेरक लगीं कि ज्ञान की उपासना में सारी दीवारें टूट जाती हैं या टूट जानी चाहिये। ''नन्दीसूत्र के सम्पादन का वैशिष्ट्य'' विषयक आलेख पढ़ने वाले जोधपुर के डॉ. सत्यप्रकाश दुबे ने एक सत्र का संचालन किया था। संचालन के दौरान वे अपनी संस्कृतनिष्ठ भाषा में जैन-जैनेतर ग्रन्थों के उद्धरणों से अपनी संचालन-कला को समृद्ध कर रहे थे। इसी प्रकार डॉ. गणेशीलाल सुथार,जोधपुर ने ''आचार्य हस्ती विरचित तत्त्वार्थगीता के आलोक में ज्ञान एवं मोक्ष-विचार का विवेचन'' विषय पर अपने जल्दी में लिखे आलेख पर भी प्रशंसा पाई। जोधपुर के ही डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम ने आचार्य हस्ती की प्रार्थना प्रवचन पुस्तक का अच्छा अनुशीलन किया। डॉ. सरोज कौशल ने गजेन्द्र व्याख्यानमाला में जीवन-प्रबन्धन के सूत्र तलाशे। प्रतिभागी विद्वानों ने विभिन्न पक्षों पर अपने आलेखों को सुन्दर प्रस्तुति दी।

जैन आगम और साहित्य ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष है। देश-विदेश के जैन-जैनेतर जिज्ञासु और विद्वान हमेशा से जैन तत्त्वज्ञान के प्रति आकर्षित होते रहे हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अनेक सूत्रों व तथ्यों का मूल स्रोत भी प्राचीन जैन साहित्य और भारतीय साहित्य में प्राप्त होता रहा है। संगोष्ठी में पधारे आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान से विभूषित डॉ. दयानन्द भार्गव ने अपना संस्मरण सुनाते हुए बताया कि विद्यार्थी जीवन में जिनेन्द्र वर्णी के सम्पर्क/सान्निध्य से उनके मन में जैन दर्शन के प्रति अनुराग पैदा हुआ और वे जैन विद्वान बन गये। संगोष्ठी में आए डॉ. गणेशीलाल सुथार ने भी जैन दर्शन के प्रति अपने अनुराग का किस्सा कुछ इसी तरह का बताया।

पाश्चात्त्य जैन विद्वान डॉ. हर्मन जेकोबी, विण्टरनित्स आदि के योगदान से जैनविद्या के अध्येता अपरिचित नहीं हैं। पिछली सदी में जैनविद्या और अनुसंधान के क्षेत्र में जो कार्य हुआ, उसके पीछे ऐसे मनीषियों की प्रेरणा भी एक निमित्त रही। जैनविद्या, जैन तत्त्वज्ञान और जैन दर्शन की वैज्ञानिकता से प्रभावित होकर जैनेतर परम्परा के अनेक महानुभावों ने अपना जीवन पूर्ण या

आंशिक रूप में जैन धर्म, दर्शन और संस्कृति के उन्नयन में लगा दिया। बत्तीस आगमों के टीकाकार आचार्य घासीलाल जी महाराज और अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय मुनि कन्हैयालाल जी 'कमल' जैसे अनेकानेक मनीषी हुए, जिनका जन्म भले ही जैन कुल में नहीं हुआ, लेकिन उन्होंने जैन आगमों के अनुशीलन में अपना जीवन समर्पित कर दिया। सच कहा जाए तो 'जैनेतर परम्परा के जैन विद्वान्' विषय पर ही शोध-प्रबन्ध लिखा जा सकता है। इससे आगे की बात यह है कि जिन्होंने ज्ञान-ध्यान को अपना जीवन समर्पित कर दिया, उनके लिए जैन और जैनेतर जैसी औपचारिक भेद रेखाएँ भी समाप्त हो जाती हैं।

आज दुनिया अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। मौजूदा समय की सभी समस्याओं का समाधान आगम-वाणी और आप्त-वचनों में समाया हुआ है। केवल विद्वत्ता के बल पर तो इन समस्याओं का समाधान हो नहीं सकता है, लेकिन ''पढ़मं नाणं तओ दया'' के अनुसार ज्ञान बहुत आवश्यक है। विद्वान् जब ज्ञानी बनने लगता है तो वह जीवन और जगत की समस्याओं को सकारात्मक तरीके से सुलझाने की पात्रता अर्जित करने लगता है। सच्चे विद्वान का यह कर्त्तव्य भी होता है कि वह अपनी ज्ञान-शक्ति से समस्याओं के समाधान में योगदान करे। प्रत्यक्ष-परोक्ष, जाने-अनजाने में ज्ञान और ज्ञान के आराधकों का लाभ समाज को मिलता भी है।

मैं एक बांत प्रायः कहा करता हूँ कि देश और समाज को तीन वर्गों की हमेशा विशेष जरूरत होती है, ये हैं- सन्त, सिपाही और साहित्यकार। सन्तों का समाज पूरा ध्यान रखता है। सिपाही का ध्यान शासन की ओर से रखा जाता है और देश के बजट का बड़ा हिस्सा सेना के लिए नियोजित होता है। अब बचता है साहित्यकार। पहली बात तो श्रेष्ठ साहित्यकारों का अभाव है। दूसरी बात है कि समाज को उनकी कोई विशेष फिक्र नहीं है। समाज में बड़े-बड़े कार्यक्रम होते हैं। वहाँ शासन, प्रशासन, न्याय और व्यवसाय क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों का बोलबाला रहता है। समाज और संस्कृति के उत्कर्ष में जिस प्रकार उनकी भूमिका होती है, उसी प्रकार एक रचनाकार की भी भूमिका होती है। रचनाकार को भी उचित महत्त्व मिलना चाहिये। लक्ष्मी और सरस्वती का जब समान सम्मान होगा तो सर्वांगीण प्रगति की राह

प्रशस्त होगी। समाज साक्षी है कि खेल, सिनेमा आदि में खिलाड़ियों/कलाकारों को प्रचुर महत्त्व और प्रोत्साहन मिलता है। लेकिन साहित्य के क्षेत्र में वैसी बात नहीं है। मेरी यह तुलना किसी को अटपटी लग सकती है, लेकिन पूरे समाज को इस पर गौर करना चाहिये। आज या कल की यह बात नहीं है; सुदीर्घ भविष्य की दृष्टि से इस पर मनन किया जाना चाहिये।

आज के अर्थप्रधान युग में उसी ज्ञान का आदर अधिक हो रहा है, जो जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक है। ऐसे विकट समय में जब कोई व्यक्ति शास्त्र-ज्ञान और प्राचीन सत्साहित्य पर आधारित ज्ञान की उपासना में अपना जीवन समर्पित करता है तो उसके इस पुरुषार्थ का मान-मूल्यांकन होना चाहिये। ऐसे ज्ञान साधकों की बदौलत ही आज हमारे पास विपुल प्राचीन ज्ञान में से थोड़ा-बहुत ज्ञान बचा है। इस बचे हुए को बचाने के लिए विद्वानों को प्रश्रय देना अत्यावश्यक है। साहित्य की सुरक्षा के बगैर किसी भी धर्म और संस्कृति की सुरक्षा संभव नहीं है। जैन परम्परा में जो भी प्रभावक आचार्य हुए हैं, प्रायः सबने शास्त्रीय ज्ञान के संरक्षण, संवर्द्धन और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया है। उनका यह प्रयास भी उनकी प्रभावकता का एक आधार बना। आचार्य हस्ती ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया, प्रेरणाएँ दी और संकेत किये। उनके कार्यों को आगे बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। विद्वत् परिषद् की सक्रियता इस दिशा में एक कदम है। विद्वानों को प्रोत्साहित करके न सिर्फ आचार्य हस्ती के प्रति, अपितु उन सब आचार्यों और मनीषियों के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित कर सकेंगे, जिन्होंने किसी भी रूप में श्रुत आराधना और श्रुत आराधकों के प्रति प्रमोद भाव रखा।

सन्दर्भः-

1. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृ. 118

2. वही, पृष्ठ 119

3. वही, पृष्ठ 848-849

-इण्टरनेशनल लॉ सेण्टर, 61-63,
डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004

कविता

गुरु हस्ती शतक

श्री प्रसन्नचन्द बाफना

संघ समर्पित शासनसेवी गुरुभक्त श्रावकरत्न श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में युगमनीषी अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज पर 108 पद्यों की रचना की है। उन्होंने इस काव्य रचना में 'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ को आधार बनाया है, जिसकी पृष्ठ संख्या साथ में अलग से दी जा रही है।

	पृष्ठ संख्या
जय जय गज गुरुवर गणी, रत्नसंघ बड़ भाग।	
संकटमोचक आप हो, नाम जप्यां सुखकार ।।1।	
केवलचन्दजी तो पिता, धन रूपादेवी मांय।	16
बोहरा कुल पीपाड़ में, हस्तीमल हरसाय।।2।	16
माता रूपा ने किया, संघ पर महा उपकार।	17
गर्भस्थ शिशु को सीख दी, सपना सुख संसार।।3।	17
चांदनी चौदस पौष की, सड़सठ उन्नीस सौ मंझार ।	18
सूर्य तेरह जनवरी का, था उत्तरायण को तैयार।।4।	19
श्वेत गजराज ने किया, जननी मुख प्रवेश।	19
नामकरण आधार था, यही स्वप्न विशेष।।5।	19
संयम लेने को थी आतुर, कैसे होय सफल।	20
लालन-पालन बाल का, कर्त्तव्य बड़ा सबल।।6।	20
संस्कारों के वपन में, अवसर का सदुपयोग।	21
चौमासा सत्तर तीन का, सती धनकंवर संयोग।।7।	23
शनैः शनैः बाल में, भरे वैराग्य संस्कार।	27
बालक पूछे मात से, मैं भी न रहूँ संसार।।8।	28
आठ वर्ष की उम्र में, भेंटया हर्षचन्द्र मुनिराय।	29
प्रतिभा पारखी कुशल थे, शुभलक्षण अभिप्राय।।9।	19
बाहुबल में विजयी हुए, फिर भी नहीं मिठास।	22
सखा तेजमल गिर गया, मन में उपजी त्रास।।10।	22

दस वर्ष की लघुवय हुई, शोभाचन्द्र गुरुराज। 34
श्रमण दीक्षा अजमेर में, दिया जननी का साज।।11। 37
संस्कृत प्राकृत अभ्यास में, बने आप तल्लीन। 40
गूढ़ार्थ आगम शास्त्र का, स्व पर मत प्रवीण।।12। 44
बीज में वटवृक्ष का, सहज नहीं समाधान। 45
प्रतिभा से प्रमुदित सभी, विरल हुआ आसान।।13। 45
रत्नाधिक के धनी, स्थविर मुनि मौजूद। 45
सबने माना आपका, विलक्षण है वजूद।।14। 45
अमावस्या सावण की बनी, निपट अंधेरी रात। 45
स्वर्गगमन गुरु का हुआ, यह तेरासी की बात।।15। 45
पन्द्रह वर्ष की आयु का, अनुपम बना इतिहास। 45
गुरु शोभा ने लिख दिया, पट्टधर का विश्वास।।16। 45
देखा सुना न पढ़ा, मिली न ऐसी मिसाल। 45
बाल पंचदश वर्ष का, बना संघ का भाल।।17। 45
मनोनीत आचार्य ने, संघ में रखी अरदास। 46
समय पांच वर्ष का, दें अध्ययन हेतु खास।।18। 46
सतयासी उगनीस सौ, अक्षय तृतीया आगाज। 52
सूर्यनगरी सिंहपोल में, चादर महोत्सव ताज।।19। 53
ओढ़ाई पूज्य पछेवड़ी, गुरु शोभा की सौगात। 54
जिनशासन की प्रभावना, उदित नया प्रभात।।20। 55
गगनभेदी जयकारों से, गूँज उठा आकाश। 54
नमो नमो गुँजरित हुआ, आयरियाणं आगाज।।21। 54
स्वामी सुजान थे सुजान, प्रमुदित हो करते बहुमान। 107
'पूज्यश्री' पूज्य महान, हस्ती की प्रसिद्ध पहचान।।22। 63
सुख-सात पूछी मात ने, संक्षिप्त वार्त्ता सार। 56
मूल देन तो आप हैं, हस्ती बोले आभार।।23। 57
तात तुम्हारे थे भजनानन्दी, जन्म भूमि में प्रश्न चला। 48
मीठा रहते खारा जल, कौन पीता है भला।।24। 48
गुरु स्मृति में मुनि सागर ने, कर लिया संकल्प। 48

औषध मात्र का त्याग है, रखा न कोई विकल्प।।25।	48
पाचनतंत्र अवरुद्ध हुआ, मन में समाधि समाय।	48
भोजन से व्याधि हो अगर, अनशन श्रेष्ठ उपाय।।26।	48
सावण कृष्णा त्रयोदशी, पिचयासी हुई विश्रुत।	50
संथारा उनसठ दिन का, किशनगढ़ अद्भुत।।27।	50
क्रियोद्धार भूमि बड़लू में, अस्सी छः का चौमास।	50/51
जयपुर प्रथम चातुर्मास है, संघनायक का खास।।28।	62
रामपुरा मालवदेश में, श्रावक केसरी सुजान।	66
गुणनब्बे रतलाम में, अब राजस्थान प्रस्थान।।29।	70
सचित्त भिक्षा रतलाम में, प्रथम शिष्य उपहार।	70
मुनिवर लक्ष्मीचन्द बने, रत्नसंघ सिणगार।।30।	70
पंडित नगर केकडी, शास्त्रार्थ का तना वितान।	71
विजय चरणश्री हुआ, सटीक किया समाधान।।31।	71
सलाह-सूचन में आगे रहे, 'अजय' सम्मेलन आप।	190
वय-पर्याय में लघु मगर, पूज्यों पर भी छाप।।32।	73
निर्दोष संयम साधना, सम्बन्ध सबसे मधुर।	74
जवाहराचार्य भी बोल उठे, आप बड़े चतुर।।33।	74
नब्बे का जोधपुर चौमासा, पूज्य आत्मारामजी सहवासा।	75
सम्प्रदाय भेद, नहीं आभासा, परस्पर चर्चा आदर सम्भाषा।।34।	75
पीपाड़, पाली और अजय शहर, चौराणु वर्षावास उदयपुर।	76
मालव भूमि यह रतलाम नगर, स्वामी भोज सिधाये सुरपुर।।35।	80
पचानवें अहमदनगर अर्पण, दशवैकालिक को किया पूरण।	81
घोड़नदी अब हुआ पदार्पण, रुक गया पशुओं का क्रन्दन।।36।	82
सतारा चातुर्मास की घटना, भेद विज्ञान अनुभव का झरणा।	83
श्रद्धा साहस की ऐसी रचना, घायल नाग को दिया शरणा।।37।	83
शोलापुर, बीजापुर फरसा, बागलकोट, शोरापुर सरसा।	86
कर्नाटक को खूब तरासा, हो गया गुलेजगढ़ चौमासा।।38।	85

(क्रमशः)

1, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (10)

प्रश्न 10. क्या बादर नाम कर्म के उदय वाले सूक्ष्म जीवों की विराधना नहीं होती है?

उत्तर : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में वर्णित प्रथम महाव्रत में साधु ''सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा णेव सयं पाणे अइवाइज्जा'' के द्वारा तीन करण एवं तीन योग से सूक्ष्म-बादर, त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा का त्याग करता है। जबकि सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से सूक्ष्म शरीर को प्राप्त जीवों की हिंसा तो हो ही नहीं सकती। क्योंकि उन पर किसी भी शस्त्र का प्रभाव नहीं होता, फिर भी हिंसा के परिणाम से निवृत्त होने के लिए साधक उनकी हिंसा का त्याग करता है। तब बादर नाम कर्म के उदय वाले सूक्ष्म जीवों की विराधना नहीं होती है, यह कैसे संभव है? दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 8 गाथा13 में स्पष्ट बताया है कि त्रस और स्थावर दोनों राशियों में से बादर नाम कर्म के उदय वाले जो आठ प्रकार के सूक्ष्म शरीरधारी जीव हैं, उनकी यतना का निर्देश है। वे आठ जीव इस प्रकार हैं-

1. **स्नेह**- सूक्ष्म-ओस, हिम, ओले, धुंध इत्यादि सूक्ष्म जल को स्नेह सूक्ष्म कहते हैं।
2. **पुष्प सूक्ष्म**- बड़, ऊम्बर, गूलर आदि।
3. **प्राण-सूक्ष्म**- कुंथुआ आदि सूक्ष्म प्राणी जो चलने पर ही दिखाई देते हैं। स्थिरावस्था में सूक्ष्म होने से जाने नहीं जा सकते।
4. **उत्तिंग सूक्ष्म**- कीड़ी नगर, जिसमें सूक्ष्म चींटियां तथा अन्य सूक्ष्म जीव हैं।
5. **पनक सूक्ष्म**- काई या लीलन-फूलन।
6. **बीज सूक्ष्म**- सरसों, साल आदि जीवों के मुख मूल पर होने वाली कणिका जिससे अंकुर उत्पन्न होता है।

7. **हरित सूक्ष्म**– तत्काल उत्पन्न होने वाला हरित काय जो पृथ्वी के समान वर्ण वाला दुर्विजेय है।

8. **अंड–सूक्ष्म**– मधुमक्खी, चींटी, मकड़ी, छिपकली आदि के सूक्ष्म अंडे जो स्पष्टतः ज्ञात नहीं होते।

यहाँ शास्त्रकार ने इन अष्टविध सूक्ष्मों का स्वरूप परीक्षा से जानकर प्रत्याख्यान परिज्ञा से उनकी हिंसा का परित्याग करने तथा इन जीवों की यतना के लिए भली भाँति देखकर ही बैठने, खड़े रहने अथवा सोने का निर्देश किया है तभी वह समस्त जीवों के प्रति दया का अधिकारी होता है। जब इन जीवों की विराधना होती ही नहीं तो फिर यतना का निर्देश क्यों? यतना से तो उन्हीं जीवों की रक्षा होती है जिनकी विराधना हो सकती है। सूक्ष्म नाम कर्म के उदय वाले जीवों की तो हिंसा होती ही नहीं। केवल अव्रत के द्वारा आने वाले आस्रव को प्रत्याख्यान के द्वारा रोक कर ही उनकी हिंसा से विरत हुआ जा सकता है। किन्तु बादर जीवों की हिंसा से बचने के लिए इस सूत्र में स्थान–स्थान पर यतना का उपदेश दिया है। दशवै. 6.24 "संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा," और 6.62 में "संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य" इनमें भी बादर नाम कर्म के उदय वाले, सूक्ष्म की विराधना से बचने वाले के लिए रात्रिभोजन एवं स्नान का त्याग करना कहा गया है। तत्त्वार्थसूत्र में भी कहा है–"प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा" अर्थात् प्रमाद के योग से प्राणों का विनाश हिंसा है। सातवें गुणस्थान वाले अप्रमत्त अणगार के द्वारा उपयोग कर्म वाले सूक्ष्म जीवों की विराधना होती है, और यतना से उपयोगपूर्वक क्रिया करते हुए उससे बचा जा सकता है।

दीक्षा का सम्बन्ध

दीक्षा का सम्बन्ध वय से नहीं, वैराग्य से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध मत से नहीं, मन से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध ज्योति से नहीं, आत्म ज्योति जगने से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध आहार से नहीं, आचार से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध मोह से नहीं, मोक्ष से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध मौज से नहीं, मौन से होता है।

नारी-स्तम्भ

हमारे जीवन में भावों की महत्ता

श्रीमती एस. उषा चोरड़िया

भाव एक कैमरा है। जैसी शक्ल होगी, वैसी ही शक्ल कैमरे में क्लिक करते ही प्रतिम्बित हो जायेगी। इसमें कैमरे का क्या दोष? जैसा चेहरा था, जैसे खड़े थे, वैसा ही फोटो आया। अतः हमारे जीवन में जैसे भाव होंगे, वैसा ही बंध हो जायेगा। अच्छे भावों से सुगति एवं बुरे भावों से दुर्गति का उपार्जन होगा।

भावना तो भवनाशिनी है, शुद्ध भावों से हम तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन कर सकते हैं। मन में शुद्ध भाव आने पर चिन्तन होता है कि आज मिला है तो मैं देकर खाऊँ। धोवन-पानी बहराकर भी तीर्थंकर गोत्र का बंध कर किया जा सकता है। भावों की शुद्धता से भगवान् महावीर स्वामी को चंदना के द्वार आना पड़ा। मिले उड़द के बाकुले, किन्तु यहाँ द्रव्य की नहीं, भावों की महत्ता है। भगवान् महावीर स्वामी ने नयसार के भव में भावों की शुद्धता में सम्यक्त्व की प्राप्ति कर तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लिया।

शुद्ध भाव हमारे चेहरे को खिलाते हैं एवं अशुद्ध भावों से चेहरा मुरझा जाता है। भावों में तो बड़ी ताकत है, गतियों के निर्माण में एवं जीवन को स्वर्गिक तथा नारकीय बनाने में भावों की ही भूमिका है। भावों से नरक, निगोद के गोते नसीब हो सकते हैं, तो मुक्ति भी शुद्ध भावों से संभव हो सकती है। जैसे तंदुल मच्छ ने भावों से नरक का बंध कर लिया। नागश्री ने गोचरी तो बहराई, किन्तु अशुद्ध भावों से उसने नरक का बंध कर लिया। रेवती गाथापति ने शुद्ध भावों में कोलपाक के लड्डु बहराकर अपनी गति सुधार ली। ऐसे हजारों उदाहरण हमारे जैन इतिहास में भरे पड़े हैं।

बैंगलोर चातुर्मास में 26 नवम्बर 2004 को तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी ने व्याख्यान में भावों का स्पष्टीकरण कुछ ऐसे किया- एक व्यक्ति शुद्ध भावों से मुनिश्री को घी की गोचरी बहरा रहा था। उसके भाव इतने उच्चतम थे कि मुनिश्री ने अपने ज्ञान से जान लिया कि इसका बंध बारहवें देवलोक का हो रहा है। घी

बहराते-बहराते पातरे से बाहर आने लगा। यह देखकर मुनि ने कहा मत गिर व्यक्ति ने सोचा मुनिश्री कितने लालची हैं घी देखकर कह रहे हैं, मत गिर, मत गिर। भावों का रुख बदला, वह गिरते-गिरते पहली नारकी की यात्रा कर आया, कहाँ बारहवाँ देवलोक का बंध एवं कहाँ पहली नारकी की यात्रा। भावों से ही हमें मुक्ति मिल सकती है। भावों का हमारे जीवन से काफी गहरा सम्बन्ध होता है।

बात जब भावों की चली तो मैं अपने जीवन के एक अनूठे सच को यहाँ बताने का प्रयास कर रही हूँ। बात 30 अप्रेल 2006 की है, जब आचार्यश्री ने चातुर्मास एवं अक्षय-तृतीया के पारणे का लाभ चेन्नई वासियों की झोली में डाल दिया। उन्हीं दिनों मेरा दूसरा वर्षीतप चल रहा था। मेरा अभिग्रह था- संत-सतियों को द्रव्य बहराने का लाभ मिले। सरलेशप्रभा जी महाराज के पदार्पण से सतियों का अभिग्रह तो फला, मगर संतों का नहीं। शायद पुण्यवानी में अभी कमी बाकी थी। मगर हिम्मत प्रबल थी, जो तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी ने हमारे घर को पावन किया। गणेशमल जी भंडारी की बहन के वर्षीतप का पारणा था, उनसे गोचरी लेने हमारे आंगन पधारे फिर क्या उस बहन ने तथा मैंने अचित्त द्रव्य बहराकर लाभ लिया एवं पारणा किया। प्रमोदमुनिजी ने भी कहा- कहीं के कदम कहीं ले जाते हैं, भावों की शुद्धता की सुगंध कहाँ-कहाँ फैल जाती है, इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। यूँ तो अभिग्रह कहा नहीं जाता, मगर फलित होने के बाद कह रही हूँ। मैं तो सबसे यही कहना चाहूँगी कि हमें हर पल भावों को शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिये। आज भी जब कभी वह दृश्य सामने आता है, तो हृदय गद्‌गद् हो जाता है। कहने को तो हम मोक्षाभिलाषी हैं, मगर कार्य कैसे कर रहे हैं, जरा सोचें। हमें हर पल हर क्षण भावों को इतना निर्मल एवं स्वच्छ रखना है कि हमारा मनुष्य भव सार्थक हो जाये, अन्यथा वही चौरासी लाख जीवयोनि का चक्कर एवं वही नरक, निगोद की यात्रा। हमें जागना है एवं सबको जगाना है, ताकि हम भी भविष्य में दूसरों के लिये मिशाल बन जायें, इन्हीं शुभ भावों के साथ...।

-Vasupujya apartment, 14 'B' Block, Ist Floor, 50-51, Hunteri Road, Vepery-7

।। श्री महावीराय नमः ।।

पूज्य कुशलगणी की जय

।। जय गुरू हस्ती ।।

श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परम्श्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०६८

वीर सम्वत् २५३७-३८ (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २०११-२०१२

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१४ रवि	१७.४.२०११	१४-१५	-	-	५ शुक्र	६ मंगल
२	वैशाख वदि	१४ सोम	२.५.२०११	१०-४८	१	१३	-	-
३	वैशाख सुदि	१५ मंगल	१७.५.२०११	२६-४८	११	-	३ शुक्र	७ मंगल
४	ज्येष्ठ वदि	३० बुध	१.६.२०११	५१-४५	-	-	-	-
५	ज्येष्ठ सुदि	१५ बुध	१५.६.२०११	४६-४५	१४	-	१ गुरू	५ सोम
६	आषाढ़ वदि	१४ गुरू	३०.६.२०११	२२-२८	-	८	१३ बुध	-
७	आषाढ़ सुदि	१४ गुरू	१४.७.२०११	१६-५५	५	-	-	२ रवि
८	श्रावण वदि	१४ शुक्र	२६.७.२०११	४६-५८	-	-	१२ बुध	३० शनि
९	श्रावण सुदि	१५ शनि	१३.८.२०११	४५-३५	७	-	-	-
१०	भाद्रपद वदि	१४ रवि	२८.८.२०११	१३-१८	-	४	६ मंगल	१३ शनि

विशेष विवरण

-आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ७ रविवार १०.४.२०११।

-भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ शनिवार १६.४.२०११।

-आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ सोमवार १८.४.२०११।

-अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३ शुक्रवार ६.५.२०११।

-आचार्य भगवन्त पूज्य गुरूदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २०वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ बुधवार ११.५.२०११ ।

-भगवान महावीर केवल कल्याणक एवम् संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि १०/११ शुक्रवार १३.५.२०११ ।

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २१ वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ रविवार २२.५.२०११ ।

-परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २२८वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ सोमवार २३.५.२०११ ।

-क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १६६वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १३/१४ मंगलवार १४.६.२०११ ।

-२१५वां क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ शुक्रवार १७.६.२०११।

-आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः आषाढ वदि ७ बुधवार २२.६.२०११ इसके पश्चात्गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।

१०	भाद्रपद वदि	१५ रवि	२८.८.२०११	[illegible]	–	५	६ मंगल	१२ शनि
११	भाद्रपद सुदि	१४ रवि	११.६.२०११	१६-५०	१	–	–	–
१२	आश्विन वदि	१४ सोम	२६.६.२०११	३४-४०	११	७	प्र.७ सोम	१० शुक्र
१३	आश्विन सुदि	प्र.१५मंगल	११.१०.२०११	६०-००	३	१५	–	–
१४	कार्तिक वदि	३० बुध	२६.१०.२०११	४६-३८	१४	–	४ रवि	६ शुक्र
१५	कार्तिक सुदि	१५ गुरू	१०.११.२०११	४७-०३	–	–	–	–
१६	मार्गशीर्ष वदि	१४ गुरू	२४.११.२०११	१६-४५	६	३	प्र.३ रवि	६ गुरू
१७	मार्गशीर्ष सुदि	१४ शुक्र	६.१२.२०११	२७-५५	२	१०	१५ शनि	–
१८	पौष वदि	३० शनि	२४.१२.२०११	४०-२५	१२	–	–	४ बुध
१९	पौष सुदि	१४ रवि	८.१.२०१२	१३-०८	–	११	१२ शुक्र	–
२०	[illegible] वदि	१४ रवि	२२.१.२०१२	१७-०३	५	–	–	१ मंगल
२१	माघ सुदि	१४ सोम	६.२.२०१२	५३-२८	–	–	११ शुक्र	१५ मंगल
२२	फाल्गुन वदि	३० मंगल	२१.२.२०१२	५२-०८	१०	–	–	–
२३	फाल्गुन सुदि	१४ बुध	७.३.२०१२	२७-१३	–	३	८ गुरू	१२ सोम
२४	चैत्र वदि	३० गुरू	२२.३.२०१२	३३-२८	३	–	–	–

-आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः आषाढ़ वदि ७ बुधवार २२.६.२०११,
इसके पश्चात् गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी।
-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ सुदि १४ गुरूवार १४.७.२०११ ।
-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ८५वीं पुण्यतिथि
श्रावण वदि ३० शनिवार ३०.७.२०११ ।
-पर्युषण महापर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि ११ गुरूवार २५.८.२०११ ।
-संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ४ गुरूवार १.९.२०११ ।
-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ८ मंगलवार ४.१०.२०११।
-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि आसोज सुदि १० गुरूवार ६.१०.२०११ ।
-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि द्वि.१५ बुधवार १२.१०.२०११ ।
-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ कार्तिक वदि १२ सोमवार २४.१०.२०११,
इसके पश्चात् गाजबीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।
-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३० बुधवार २६.१०.२०११ ।
-वीर संवत् २५३८ प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ गुरूवार २७.१०.२०११ ।
-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ सोमवार ३१.१०.२०११ ।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ४६वां दीक्षा दिवस
कार्तिक सुदि ६ मंगलवार १.११.२०११ ।
-चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोंकाशाह जयन्ती
कार्तिक सुदि १५ गुरूवार १०.११.२०११ ।
-मौन एकादशी एवं पूज्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की ६६वीं पुण्य तिथि
मार्गशीर्ष सुदि ११ मंगलवार ६.१२.२०११ ।
-भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि १० मंगलवार २०.१२.२०११ ।
-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासिक पक्खी) फाल्गुन सुदि १४ बुधवार ७.३.२०१२ ।
-भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
का ७४वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ गुरूवार १५.३.२०१२ ।

युवा-स्तम्भ

युवा पीढ़ी को आचार्य हस्ती की प्रेरणा

श्री पारसमल चण्डालिया

निजानंद में लीन, आत्मसमाधिनिष्ठ, रत्नत्रयी के धारक, महाज्ञानी, महाध्यानी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का विरल व्यक्तित्व अनूठा था। आपके पुनीत व्यक्तित्व की उपलब्धि चतुर्विध श्री संघ के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध हुई। आपने न केवल संत-सतियों के आत्मोत्थान के लिए, अपितु श्रावक-श्राविकाओं के जीवन-निर्माण के लिए सतत पुरुषार्थ किया। खासतौर पर युवापीढ़ी को आपने जीवन पर्यन्त अपने प्रवचन, लेखन आदि के माध्यम से चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु सतत, सटीक और युक्तियुक्त प्रेरणा प्रदान की जो आज भी प्रासंगिक एवं उपयोगी है और युवाओं के लिए प्रकाश स्तंभ के समान है। उनमें से कुछ मुख्य प्रेरणाएँ इस प्रकार थीं-

1. आज का युवा किस ओर? - आज 14-15 वर्ष की आयु का बच्चा भी यह सोचने लगता है कि वह कौनसा धंधा करे? कौनसा व्यवसाय करे या नौकरी करे जिससे उसे अर्थ लाभ हो? लेकिन यह भावना उसके मन में नहीं जगती कि उसका कल्याण कैसे हो? कैसे ऊँचे घर में जन्म हुआ है, कैसे साधन मिले हैं, कैसी सामग्री मिली है? इन सब साधनों और सामग्रियों का उपयोग धर्मसाधना में क्यों नहीं करूँ? क्यों न मैं धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय कर ज्ञानार्जन करूँ? ऐसी भावना वाले कितने नौजवान मिलेंगे?

कितने नौजवानों को यह विचार होता है कि हमने बी.ए. या एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और शिक्षा पूर्ण हो गयी है अब फिर भी अगर अध्ययन करना है तो धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें, संतों की सेवा में रहें। ऐसा सोचने वाले कितने युवा होंगे? नगण्य। लेकिन धन कमाने की सोचने वाले कितने लोग होंगे? सर्वाधिक संख्या उन्हीं की होगी।

भले ही दादाजी घर में प्रयत्न करते रहे कि कल चतुर्दशी है, संतों के पास बैठना है, व्याख्यान सुनना है, पर बच्चों के मन में यह बात नहीं आती। जिन घरों में त्यागी तपस्वी संत हुए हैं अथवा जिन घर में धोरी श्रावक हुए हैं, उनकी संतानों के मन में भी यह बात क्यों नहीं आती कि हमारे पिताजी, पितामह धर्म में लगन रखते

थे, संतों की सेवा में रहते थे, शास्त्र पढ़ते थे, उनका ऊँचा चरित्र था, हम भी क्यों नहीं उनके पदचिह्नों पर चलें? उन लोगों के उदीयमान बच्चे शिक्षा क्षेत्र से अच्छे से अच्छे नम्बर पाकर उत्तीर्ण हो रहे हैं और जो व्यवसाय में लग गये हैं उनका मन भी व्यवसाय में तो खूब लग रहा है, वे उस क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति भी कर रहे हैं, लेकिन वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अभिवृद्धि नहीं कर रहे हैं। इसका प्रमुख कारण आचार्य प्रवर फरमाते थे- 'आज युवाओं में अर्थ पिपासा तो है, किन्तु ज्ञान पिपासा या धर्म पिपासा नहीं है।' अतः युवाओं में धर्म पिपासा जगाने की नितान्त आवश्यकता है। भटकती युवा पीढ़ी, भौतिक सुखों के प्रति उदासीन बनकर धर्मोन्मुख बने, इसके लिए आचार्यप्रवर सदैव चिंतित रहते थे। बालकों और युवाओं की सत्संग के प्रति रुचि जगे, इसके लिए माता-पिता और अभिभावकों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए आचार्यश्री फरमाते थे-

''आप अपने परिवार के लिए जो कुछ प्रयत्न करते हैं वह आपका व्यावहारिक कर्त्तव्य है। आज आप अपने धार्मिक कर्त्तव्य को भुला बैठे हैं। जिस तरह आप खाने-पीने और कमाने के लिए अलग-अलग व्यावहारिक प्रयास करते हैं उसी प्रकार धर्म के संबंध में प्रयास नहीं करते। घर में किसी की तबीयत ठीक नहीं रहती है तो उसका इलाज कराने का तरीका आप सोचते हैं। यदि वही बालक महीने भर से धार्मिक और नैतिक क्रियाएँ ठीक तरह से नहीं कर रहा है तो क्या आप उसके लिए चिंता करेंगे? नहीं। संसार में स्वास्थ्य बिगड़ना ज्यादा खतरनाक है यां मानसिक धरातल का बिगड़ना? एक तरफ शरीर बिगड़ रहा है तबीयत खराब हो रही है और दूसरी तरफ मन बिगड़ रहा है, धर्मध्यान में रुचि नहीं रहती है तो आप किसे ठीक करने की चिंता करोगे? तबीयत खराब है तो वैद्य या डॉक्टर के पास दौड़धूप करोगे। यदि बालक धर्म में रुचि नहीं ले रहा है, दोस्तों के साथ इधर-उधर आवारा घूम रहा है, व्यसनों में उलझ रहा है तो आप किस ओर ज्यादा ध्यान दोगे? उसको जल्दी से काम धंधे में लगाकर दोस्तों से उसका ध्यान हटाने का प्रयत्न करोगे या सत्संग में, दो चार दिन से क्यों नहीं आ रहा है, इसकी ओर ज्यादा ध्यान दोगे? जरा ईमानदारी से बोलिये।''

2. धर्म और ज्ञान के प्रति रुचि जगाएँ- जीवन में धर्म की अनिवार्य आवश्यकता बताते हुए आचार्यप्रवर फरमाते हैं कि जीवन रूपी गाड़ी को चलाने के लिए धन रूपी पेट्रोल के साथ धर्म रूपी पानी यदि नहीं होगा तो धन भी आग

लगा देगा। धन रूपी पेट्रोल के साथ धर्म रूपी गंगाजल अगर नहीं होगा तो गाड़ी आगे नहीं चलेगी। इसी तरह यदि धन के साथ धर्म भी है और नेत्र खुले हैं, तो मंजिल निश्चय ही पार हो सकेगी। युवा वर्ग धर्म की महत्ता को समझे, अतः आचार्य प्रवर प्रेरणा प्रदान करते हैं–"जिस दिन आपकी आत्मा गाड़ी में पेट्रोल के साथ पानी की तरह जीवन में धन के साथ धर्म की जरूरत महसूस करेगी उस दिन हमें आपको रास्ता बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमें इसीलिए कहना पड़ता है कि धर्म पर श्रद्धा आपके अंतर में जागृत नहीं हुई है। अतः धर्म के प्रति श्रद्धा, प्रतीति और रुचि जागृत करने की आवश्यकता है।"

जिस जीव का तन स्वस्थ नहीं है, जिसे बुखार है उसको भोजन की रुचि नहीं होती, ठीक उसी प्रकार जिसका मन स्वस्थ नहीं है उसको धर्म में रुचि नहीं रहती। जैसे बुखार टूटते ही भोजन में रुचि होने लगती है वैसे ही मन के विकार हटने पर ज्ञान में रुचि हो जाती है, साधना में रुचि हो जाती है, धर्म में रुचि हो जाती है। जब ज्ञान और धर्म में रुचि हो जाती है तो व्यक्ति संसार के विविध आकर्षणों को ठोकर मारकर धर्म और भगवान् की वाणी को सुनने व समझने के लिए आतुर हो उठता है।

3. समय का सम्यक् नियोजन करें– आज के युवा वर्ग की शिकायत है कि हमें समय नहीं मिलता अतः आचार्यप्रवर युवाओं को प्रेरणा प्रदान करते हैं–"आप अपने समय को बांधें। जैसे इतने समय तक परिवार की सेवा करूँगा, इतने समय तक धंधा करूँगा। अपने समय को यदि आप पाँच भागों में बांट कर चलोगे तो आपको किसी तरह शिकायत करने का अवसर नहीं मिलेगा। जीवन में पहला नम्बर देव भक्ति का, दूसरा नम्बर संत सेवा का, तीसरा नम्बर परिवार के सदस्यों को संभालने का, चौथा नम्बर अपने स्वास्थ्य को संभालने का और पाँचवां नम्बर कामधंधे का है। इस तरह जीवन को चलाओगे तो गाड़ी अटकेगी नहीं, भटकेगी नहीं और समाज को नीचा देखने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।"

प्रवृत्ति वस्तुतः गार्हस्थ्य जीवन का एक प्रकार से अनिवार्य अंग है, परन्तु प्रवृत्ति और निवृत्ति ये दोनों पहिये साथ-साथ चलते रहने चाहिए। अशुभ से निवृत्ति और शुभ में प्रवृत्ति। सामूहिक योजना बनाकर आप संकल्प करें कि एक-एक दिन हम अपने अशुभ काम को रोककर धर्म की सेवा में लगेंगे तो इससे समाज में बड़ा भारी काम होगा।

4. समाज–निर्माण का संकल्प लें– समाज निर्माण में युवकों का क्या उत्तरदायित्व है? इसके लिए आचार्यप्रवर फरमाते हैं–"समय के अनुसार समाज निर्माण का काम करने में ज्यादा सक्षम तरुण व किशोर लोग हैं और इस कार्य का अधिक उत्तरदायित्व नौजवानों का है, क्योंकि वृद्धों की संख्या नौजवानों की अपेक्षा चौथाई भी नहीं है। आजकल के युग की मांग है कि बहुमत से कार्य करें और बहुमत नौजवानों का है।" दूसरी बात यह है कि जब तक समान विचार वालों का संगठन नहीं बनता, तब तक काम नहीं होता और यह भी आवश्यक है कि काम करने के लिए चुनिंदा, सक्षम और कर्त्तव्यशील व्यक्ति होने चाहिए, जो यह सोचते हों कि हमें हमारे जीवन में कुछ काम करके अच्छा उदाहरण छोड़ जाना है। कवि ने कहा है–

नर जन्म पाकर मानवों, कुछ काम करना सीख लो।
अपना नहीं तो पूर्वजों का, नाम करना सीख लो।।

यदि इतना मन में रहे कि हमारे पूर्वज किस शान मान के थे। उन्होंने जो मान मर्यादा निभाई, यदि हम उसे आगे नहीं बढ़ा सकते तो कम से कम उसे उस रूप में तो बनाए रखें। आप अपने जीवन की ओर देखें। यदि आपने अपने पिता और पितामह से भी सवाया नाम कमाया तो कहना ही क्या है, लेकिन अगर सवाया नहीं मिल सके तो उनके पीछे–पीछे कदम से कदम मिलाकर चलते रहें तो भी कोई हानि नहीं है।

5. स्वाध्याय को समाज–धर्म बनाएँ– धर्म दो प्रकार का है– 1. व्यक्ति धर्म और, 2. समाज धर्म। खंडेलवाल जैनों का समाज धर्म यह है कि वे रात में नहीं खाते। सिखों का समाज धर्म है– केश नहीं काटना। प्रत्येक सिख बच्चा चाहे वह पढ़ लिख कर एम.ए. हो जाता है, मिनिस्टर बन जाता है, चाहे वह प्रधानमंत्री बन जाता है तो भी वह जीवनभर सिख समाज का समाज–धर्म कड़ा, कंघी, कच्छा, केस, कृपाण आदि नहीं छोड़ता। ओसवालों का समाज धर्म क्या है? मैं समझता हूँ आप भी स्वाध्याय को समाज धर्म बना कर चलें। प्रत्येक जैन कुल में अमुक नियम तो अनिवार्य होने चाहिये।

आज विज्ञान के युग में संसार में विद्या बढ़ी है। उसके साथ ही साथ धर्म का ज्ञान और क्षेत्र भी बढ़ना चाहिये। पढ़ने वाले लड़के–लड़कियों की संख्या बढ़ गई, इसके साथ ही धर्मज्ञान नहीं बढ़ेगा तो क्या होगा? इसके लिए आपको ज्ञान–

साधना की पूर्ण व्यवस्था करनी है। हर युवक इस बात का संकल्प करे- स्वाध्याय अवश्य करूँगा। चाहे, घर में समय मिले न मिले पर जब तक स्वाध्याय नहीं करूँगा तब तब अन्न जल नहीं लूँगा।

यदि स्वाध्याय को समाज धर्म बना लें तो यह काम सरलता से हो सकता है। संसार में साधन संपन्न एवं धनी मानी युवक धर्म मार्ग की ओर अग्रसर होकर दूसरों को इस ओर लाने का प्रयत्न करें तो उसका विशेष प्रभाव होता है।

6. उत्साह उमंग से धर्माराधन करें- चातुर्मास काल में आचार्यप्रवर युवकों को चारों माह धर्माराधन करने की प्रेरणा देते हुए फरमाते हैं-"आप में शक्ति, तप, तेज मौजूद है, अतः अज्ञान को दूर करिये। अपनी शक्ति, योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार चातुर्मास का समय धर्म आराधना और आत्महित में लगाइये। इससे आपका इहलोक और परलोक सुखमय एवं कल्याणमय होगा।"

संसार में वही आदमी प्रशंसा के योग्य है जो किसी काम को पकड़ कर उसे उत्साह के साथ आगे बढ़ाता है। रोते-झींकते हुए काम करने वाले की तारीफ नहीं होती। आपको अपने धर्म का कार्य जिस उमंग से करना चाहिए उस उमंग से नहीं करते और यह देखते हैं कि नहीं करूँगा तो महाराज नाराज होंगे। व्याख्यान में देरी से गया, सामायिक नहीं की, आज का दिन गया अब आगे फिर देखा जायेगा। कोई भी काम करना है तो उसे हर्षित मन से करना चाहिए या रोते-झींकते। रोते-झींकते करने से काम का महत्त्व कम हो जाता है। जबरदस्ती, लोगों के दबाव से, महाराज के दबाव से व्रत ग्रहण किया है तो उसकी कीमत या चमक कम हो गयी या नहीं? अतः बन्धुओं! यह योग मिला है, मौका मिला है, साधना का सुअवसर मिला है, मुक्ति मार्ग की बात सुनी है तो जीवन में उल्लास और उमंग से धर्म की साधना करें। ऐसा करने से आत्म-कल्याण निश्चित है।

7. अवकाश के समय का सदुपयोग करें- अवकाश के समय का सदुपयोग कैसे हो? इसके लिए आचार्यप्रवर युवकों को प्रेरणा करते हैं कि आज अधिकांश युवकों की यह मनोवृत्ति हो गयी है कि रविवार का दिन है, अवकाश का दिन है चलो मिल कर ताश खेलेंगे, चौपड़, शतरंज का या और किसी तरह का खेल खेलेंगे अथवा किसी क्लब में जायेंगे, मनमानी मौज होगी, मनोरंजन होगा। किन्तु अच्छे आदमी के लिए समय बिताने का तरीका भी अच्छा ही होना चाहिए। इसके लिए विवेक, बुद्धि और जागरण चाहिए। कहा भी है-

काव्यशास्त्रविनोदेन, कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा।।

अवकाश का समय है तो धार्मिक गोष्ठी करें, विचार करें, स्वाध्याय करें, प्रश्नोत्तर करें। उससे भी मनोरंजन किया जा सकता है। ऐसे मनोरंजन से 'एक पंथ दो काज' हो जायेंगे। मन का आमोद-प्रमोद भी हो जायेगा और ज्ञान-मार्ग को समझने की चर्चा भी हो जायेगी।

यदि समाज में गलत प्रवृत्तियों को रोकना है तो युवकों को चाहिए कि वे अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करें। आज युवाओं की शिकायत रहती है कि हमें समय नहीं मिलता। समय तो मिलता है, लेकिन कमी इस बात की है कि समय का हम सदुपयोग नहीं करते। आदमी को खाने के लिए समय मिलता है, कमाई के लिए अथवा आराम के लिए समय मिलता है, व्यवहार के लिए समय मिलता है फिर धर्म कार्यों के लिए समय क्यों नहीं?

ऐसे युवक, जिन्होंने उपन्यास (नॉवेल) नहीं पढ़ा हो, कितने हैं? और धर्म ग्रंथ जिन्होंने पढ़े हैं ऐसे युवक कितने हैं? धर्म ग्रंथ पढ़ने वालों की नामावली कम मिलेगी। क्योंकि आपने इसकी उपेक्षा में बहुत समय गुजार दिया। जब तक श्रद्धा का युग था, तब तक तो आप नहीं पढ़ते तो भी कोई हर्ज नहीं था, लेकिन आज बुद्धिवाद का युग, विज्ञान का युग आ गया। आपके पिताजी, दादाजी, माताजी में धर्म के प्रति कितनी श्रद्धा थी और आज आप में कितनी श्रद्धा है? उनको देखकर आपके मन में भी आता होगा कि माताजी बड़ी धर्मात्मा है, रोज सामायिक करती है, धर्मध्यान करती है, उनकी तरह हमें भी करना चाहिये। इस चीज को आपका दिमाग क्या मंजूर कर लेता है?

आज के दिमाग को ज्ञान चाहिये, लेकिन तर्क के साथ, योग्यता के साथ मिलाया हुआ ज्ञान चाहिये। यह बिना स्वाध्याय के नहीं मिल सकता। जैसा कि आचार्यप्रवर फरमाते हैं-

मनोरंजन नोविल पढ़ते हो, यात्रा-विवरण भी सुनते हो।
पर निजस्वरूप ओलखने को, स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो।
जिनराज भजो सब दोष तजो, अब सूत्रों का स्वाध्याय करो।
मत खेलकूद निद्रा विकथा में जीवन धन बर्बाद करो।
सद्ग्रंथ पढ़ो, सत्संग करो, स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो।

मन के अज्ञान को दूर करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ।।

जब युवक स्वयं सोचे-"मुझे स्वाध्याय करना चाहिये, सत्संग में जाना चाहिये, अवकाश के दिन इधर-उधर भटकूंगा तो दिन फालतू जायेगा। कमाई से वंचित रहा तो दोनों तरफ से नुकसान उठाना पड़ेगा तो क्यों नहीं पाँच-दस मित्रों को लेकर स्वाध्याय करूँ।" इस प्रकार के विचार यदि बच्चों और तरुणों के मन में उत्पन्न हो तो उसका असर दूसरों के द्वारा कही गई बात की अपेक्षा बहुत अधिक होगा। अतः समय और शक्ति के अपव्यय को रोक कर यदि आप आध्यात्मिक साहित्य पढ़ेंगे, धार्मिक ग्रंथ पढ़ेंगे अथवा महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ेंगे तो उनसे केवल मुनाफा ही मुनाफा होगा, घाटा नहीं।

8. जैन धर्म की कद्र करें– जैन धर्म की जानकारी करने के लिए युवकों को प्रेरणा देते हुए आचार्य प्रवर फरमाते थे- "आप किसी कारण से विलायत चले गये, आप विदेशी से मिले, उनसे हाथ मिलाया तथा किसी तरह से उसको मालूम हो गया कि आप जैन हैं और वे आपसे पूछ बैठे कि जैन धर्म में क्या खूबी है? साधना क्या है? तत्त्व क्या है? इन सब के बारे में वे आपसे 15 मिनट के लिए जानकारी चाहेंगे तो क्या आप उनको जानकारी दे सकेंगे? यदि आप स्वयं जानकारी नहीं रखते तो आपको गर्दन नीची करनी पड़ेगी और आप कहेंगे कि धर्म की बातें समझने का काम तो महाराज का है। क्या आप ऐसा कह कर गौरव का अनुभव करेंगे? अतः सोचिये, स्वाध्याय के लिए रुचि उत्पन्न कीजिये, समय निकालिये और जैन धर्म के बारे में जानने की कोशिश कीजिये।

आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि जर्मन और अमेरिकी विद्वान् जैन धर्म के ग्रंथ पढ़ते हैं, नहीं समझ में आवे तो भी कोशिश करते हैं। उनके पढ़ने के लिए और चीजें नहीं हैं क्या? वे जैन धर्म के आध्यात्मिक ग्रंथों का अनुवाद करवाकर भी उनको पढ़ने में अपना समय क्यों देते हैं? इसलिए कि वे उनसे ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंठा रखते हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि आप घर की चीज की कीमत नहीं करते, उसका मूल्य नहीं समझते हैं। जबकि बाहर के लोग जैन धर्म की कद्र करते हैं, हमारे साहित्य की उपयोगिता समझते हैं, लेकिन हम अपने घर में निधि होते हुए भी यदि उसकी उपयोगिता नहीं समझ पायेंगे तो हमें गर्दन नीची करनी पड़ेगी।"

अतः आप भी जैन धर्म की महत्ता समझें, जैन धर्म और साहित्य की कद्र

करें। जीवन के परम तत्त्व को समझ कर ज्ञान और स्वाध्याय का महत्त्व घर-घर में, मौहल्ले-मौहल्ले में, गाँव-गाँव में फैलाकर ज्ञान का विकास करेंगे, जन-मन को जागृत करेंगे तो अज्ञान का अंधकार दूर होगा।

-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, विठ्ठलबस्ती, बंगाली मिठाई के सामने, नेहरू गेट, ब्यावर-305901 (राज.)

होलिकोत्सव ऐसे मनाएँ

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

तप की प्रचंड अग्नि में
जन्म-जन्मान्तरों के
मान-माया का कूड़ा-कचरा जला
मोह-लोभ को भस्म कर दें।
क्षीर सागर से वीतराग-जल ले
पंच समिति की केसर
त्रिगुप्ति का सुगन्धित चन्दन
समता की पिचकारी में भर
तन्मयता से होली खेलें।
सम्यक्त्व-सरोवर के निर्मल जल में
स्नान कर, आत्मा को निर्विकार कर लें।
बारह भावनाओं के आभूषणों से
श्रृंगारित हो सुमति सखा को
ज्ञान का गुलाल लगाकर
वैराग्य शीतल जल का
छिड़काव कर लें।
नवरंगी फुहारों से
स्नेहवर्षण कर के
श्रद्धा से होलिकोत्सव मनालें।

-'हुकुम' 5-ए/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

स्वास्थ्य विज्ञान

स्वास्थ्य और सामायिक

डॉ. चंचलमल चोरडिया

स्वास्थ्य का महत्त्व

स्वस्थ जीवन मानव की सर्वोच्च आवश्यकता है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना मानव न तो शान्त, सुखी, आनन्दित जीवन-यापन कर सकता है और न ही अपने लक्ष्यों की पूर्ति आसानी से कर सकता है। अस्वस्थ शरीर सुखी जीवन को दुःखी बना सकता है, इसी कारण तो कहावत प्रचलित है- ''पहला सुख नीरोगी काया।'' स्वस्थता तन, मन और आत्मा के एक सन्तुलित एवं अनुशासित समन्वय की प्रतीक है। यह कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे बाजार से खरीदा जा सके अथवा उधार लिया जा सके या चुराया जा सके।

प्रत्येक मानव दीर्घायु बन आजीवन स्वस्थ रहना चाहता है, परन्तु चाहने मात्र से तो स्वास्थ्य प्राप्त नहीं हो जाता। यदि हमें स्वस्थ रहना है तो रोग पैदा करने वाले कारणों से अपने आपको दूर रखना होगा।

स्वास्थ्य हेतु क्षमताओं का सदुपयोग आवश्यक

स्वस्थ रहने के लिए यह जानना आवश्यक है कि स्वास्थ्य क्या है?स्वस्थ कौन होता है? रोग क्या है? रोग क्यों, कब और किसे होता है? हमें उन सभी कारणों को जानना, समझना और उनसे बचना आवश्यक है जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हमारा स्वास्थ्य बिगाड़ने में सहायक बनते हैं, हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता घटाते हैं। शरीर, मन और आत्मा के विकारों को बढ़ाते हैं। उनका आपसी सन्तुलन बिगाड़ते हैं। स्वस्थ रहना भी एक कला है, एक विज्ञान है, एक दृष्टि, सोच अथवा चिन्तन का प्रतिफल है, जिसके लिए विवेकपूर्ण उचित ज्ञान, साधन और सम्यक् पुरुषार्थ अनिवार्य होता है। प्राप्त क्षमताओं का प्राथमिकता के आधार पर अधिकाधिक उपयोग कर तथा स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले विकारों से अपने आपको बचाकर ही हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। एक तरफ तो हम चिकित्सा करें और दूसरी तरफ असंयम में रहें, इन्द्रियों में आसक्त बने रहें, तो स्वास्थ्य कैसे प्राप्त होगा? जीवन के साथ मृत्यु निश्चित है। जन्म के साथ आयुष्य के रूप में श्वास

यानी प्राण ऊर्जा का जो खजाना लेकर हम जन्म लेते हैं, वह धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है। जीवन के अंतिम क्षणों तक प्राण ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित, नियन्त्रित एवं सही संचालित करके तथा उसका सही उपयोग करके ही हम शान्त, सुखी और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

जीवन में स्वास्थ्य को प्राथमिकता क्यों आवश्यक?

साधक की साधना इस शरीर रूपी वाहन द्वारा ही सम्पन्न होती है। यदि वह वाहन अच्छा और शक्तिशाली होता है तथा जीवन यात्रा के दौरान इसकी आवश्यक एवं उचित देखभाल की जाती है एवं क्षमता से ज्यादा भार डाल कर इसका दुरुपयोग नहीं किया जाता है तो यह अपनी यात्रा निश्चित अवधि तक निर्विघ्न रूप से पूर्ण कर पाता है । ऐसी स्थिति में यात्रा करने वाला साधक अधिक सुखद व लम्बी यात्रा कर सकता है, अन्यथा एक खटाला गाड़ी में बैठकर दुःखद एवं बाधापूर्ण यात्रा करनी पड़ती है और बीच राह में ही गाड़ी के खराब हो जाने से आगे की यात्रा के लिए असमय में ही नया शरीर रूपी वाहन खोजना पड़ सकता है।

स्वास्थ्य के प्रति स्वयं की सजगता आवश्यक

शरीर, मन और आत्मा के बारे में अधिकांश व्यक्तियों को जानने, सोचने, समझने की जिज्ञासा ही नहीं होती। स्वास्थ्य के बारे में हमारी सोच पूर्णतया सही नहीं होती। क्या गलत? क्या ठीक? क्या उचित? क्या अनुचित? क्या प्राथमिक, क्या अति आवश्यक? क्या साधारण? क्या करणीय?क्या अकरणीय? प्रत्येक तथ्य का कारण एवं मूल क्या? क्यों? कब? कितना? जानने का प्रयास करें, समस्या अथवा रोग का पता लग जाएगा। शरीर क्या स्वीकार करता है और क्या नहीं? समझ में आ जाएगा।

अधिकांश रोग प्रायः स्वयं की गलतियों एवं उपेक्षावृत्ति से उत्पन्न होते हैं। हमें क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा लगता है, और क्यों? परन्तु जो आँखों को प्रिय लगे, कानों को प्रिय लगे, रसनेन्द्रिय को अच्छा लगे, मन आदि को अच्छा लगे, वह हमारे लिए हितकर हो यह आवश्यक नहीं। अतः सभी का सामञ्जस्य आवश्यक होता है। हम इन्द्रियों के उन्हीं विषयों को ग्रहण करें, जो शरीर के लिए हानिकारक न हों। शरीर के साथ-साथ मन की शक्ति बढ़ाने वाले हों तथा आत्मा को विकारों से मुक्त करने में सहायक हों।

स्वस्थ रहना स्वयं के हाथ

अच्छे स्वास्थ्य की चर्चा और चिन्तन करने से पूर्व हमें यह जानना और समझना आवश्यक है कि अच्छा स्वास्थ्य किसे कहते हैं? स्वास्थ्य का सम्बन्ध प्रत्यक्ष-परोक्ष किससे होता है?स्वास्थ्य बिगाड़ने वाले विविध कारण क्या हो सकते हैं? उनसे यथासंभव कैसे बचा जा सकता है? स्वयं के अज्ञान, अविवेक, असजगता के कारण हमारी असंयमित, असंतुलित और अप्राकृतिक जीवन शैली से तो रोग पैदा नहीं होते हैं?उनकी उपेक्षा कर दीर्घकाल तक पूर्ण स्वस्थ रहने की हमारी कल्पना, क्या आग लगाकर ठण्डक प्राप्त करने जैसी मूर्खतापूर्ण क्रिया तो नहीं है? क्या हमारा श्वास अन्य व्यक्ति ले सकता है? क्या हमारा निगला हुआ भोजन दूसरा व्यक्ति पचा सकता है? क्या हमारी प्यास किसी अंन्य व्यक्ति के पानी पीने से शान्त हो सकती है? क्या हमारा दर्द, पीड़ा, वेदना हमारे परिजन ले सकते हैं? प्रायः रोग के प्रमुख कारण रोगी की स्वयं की असावधानी से पैदा होते हैं। अपनी स्थिति से जितना हम स्वयं परिचित होते हैं, दूसरा उतना परिचित हो नहीं सकता। यंत्र और रासायनिक परीक्षण तो मात्र शरीर में होने वाले भौतिक परिवर्तनों को बतलाने में तनिक सहायता कर सकते हैं। आसपास का प्रदूषित वातावरण, पर्यावरण, अशुद्ध भोजन सामग्री, दूषित पानी और वायु रोगों के कारण हो सकते हैं, परन्तु शरीर की प्रतिरोधक क्षमता ठीक हो तो बाह्य कारण अकेले रोगग्रस्त नहीं बना सकते। जब अधिकतर रोग व्यक्ति के स्वयं की गलतियों से पैदा होते हैं तो स्वास्थ्य को बनाए रखने की जिम्मेदारी भी व्यक्ति की है । इसके लिए रोग होने पर सजगता, भागीदारी, सम्यक् चिन्तन और पुरुषार्थ का सर्वाधिक महत्त्व होता है।

स्वास्थ्य क्या है?

स्वास्थ्य का मतलब है- रोग-मुक्त जीवन। स्वास्थ्य तो तन, मन और आत्मोत्साह के समन्वय का नाम है। अर्थात् शरीर, मन और आत्मा, तीनों जब ताल से ताल मिलाकर कार्य करें। शरीर की सारी प्रणालियाँ एवं सभी अंवयव सामान्य रूप से स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करें, किसी के भी कार्य में कोई अवरोध अथवा रुकावट न हो और न उनको चलाने के लिए किसी बाहरी वस्तु की आवश्यकता पड़े। जो आत्म विश्वासी, दृढ़ मनोबली, सहनशील, धैर्यवान, निर्भय, तनाव व चिन्ता मुक्त, साहसी और जीवन के प्रति उत्साही हो, जिसके मन में शान्ति हो, सरलता हो। जिसका स्वचिन्तन, प्रज्ञा और स्वविवेक जाग्रत हो तथा

जिसका मन और इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण हो, विचारों में पूर्वाग्रह न हो, यह सत्य के प्रति समर्पण हो, पूर्ण अहिंसक हो, स्वावलम्बी हो, जो निस्पृही तथा निरहंकारी हो, जिसकी प्राथमिकताएँ एवं लक्ष्य क्षमताओं के अनुरूप सम्यक् हों तथा जो प्राकृतिक सनातन नियमों का पालन करता हो। वास्तव में पूर्ण स्वस्थता के मापदण्ड तो प्रायः यही होते हैं। जितने-जितने अंशों में उपर्युक्त तथ्यों की प्राप्ति होती है उसी अनुपात में, सही स्वरूप में हम स्वस्थता के समीप होते हैं। इसके विपरीत स्थिति पैदा होने पर अपने आपको स्वस्थ मानना स्वस्थ बनाने का दावा करना न्याय संगत नहीं।

वस्तुतः स्वस्थ कौन?

स्वस्थ का अर्थ होता है, स्व में स्थित हो जाना। अर्थात् स्वयं पर स्वयं का नियंत्रण, अनुशासन अथवा पूर्ण स्वावलम्बन। अपने स्वभाव में रहना। अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों परिस्थितियों में समभाव बनाए रखना, सन्तुलित रहना, राग और द्वेष से परे हो जाना। ऐसी अवस्था में शरीर नीरोग, मन निर्मल, विचार पवित्र और आत्मा शुद्ध हो जाती है। स्व का मतलब आत्मा होता है। अतः आध्यात्मिक दृष्टि में आत्म-स्वभाव में रहने वाला ही स्व में स्थित अर्थात् स्वस्थ होता है।

आत्मा की विकारी दशा : रोग की प्रतीक

आज हम मात्र शारीरिक रोगों को ही रोग मान रहे हैं। चेतनाशील प्राणी को ही रोग की अनुभूति होती है। मृत्यु के पश्चात् निर्जीव शरीर अथवा जड़ या अचेतन अवस्था में रोग की अनुभूति नहीं होती। जीव, आत्मा का पर्यायवाची शब्द है। आत्मा की अशुद्ध अवस्था अथवा विभाव दशा ही रोग का प्रतीक है। आत्मा के बिना न तो शरीर का अस्तित्व होता है, न मन व वाणी ही चेतना की अभिव्यक्ति के माध्यम होते हैं। अतः जब तक आत्मा अपनी शुद्धावस्था को प्राप्त नहीं होगी, हम किसी न किसी रोग से अवश्य पीड़ित होंगे अर्थात् नीरोग नहीं बन सकते।

आत्मिक रोग शारीरिक और मानसिक रोगों से ज्यादा खतरनाक होते हैं, जो हमें जन्म-मरण एवं विभिन्न योनियों में भटकाने वाले हैं। शारीरिक रूप से भी नीरोग बनना प्रायः असम्भव लगता है। रोग चाहे शारीरिक हो, चाहे मानसिक अथवा आत्मिक, उसका प्रभाव तो शरीर पर ही दृष्टिगत होता है। अभिव्यक्ति तो शरीर के माध्यम से ही होती है, क्योंकि आत्मा तो अरूपी है और मन को भी हम अपने चर्म चक्षुओं द्वारा देखने में असमर्थ हैं। मुख्य रूप से रोग आधि (मानसिक),

व्याधि (शारीरिक), उपाधि (कर्म-जन्य) के रूप में ही प्रकट होते हैं। अतः आधि, व्याधि और उपाधि का शमन करने से ही समाधि, स्वस्थता एवं परम शान्ति अर्थात् नीरोग अवस्था की प्राप्ति हो सकती है।

रोग क्या है?

उपचार से पूर्व यह जानना और समझना आवश्यक है कि रोग क्या है? रोग क्यों, कब और कैसे होता है? उसके प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष कारण क्या हैं? शरीर की रोग प्रतिकारात्मक शक्ति कैसे बढ़ती है? और क्यों कम होती है?उसके सहायक और विरोधी तत्त्व क्या हैं? क्या शारीरिक रोगों का मन, विचार, भाव, वाणी अथवा आत्मा से प्रत्यक्ष-परोक्ष सम्बन्ध होता है? क्या उपचार करते समय उनसे संबंधित कारणों को प्राथमिकता दी जाती है?अथवा उन कारणों की उपेक्षा तो नहीं होती तथा उपचार मन और आत्मा के विकारों को बढ़ाने वाला तो नहीं है? अर्थात् उपचार हेतु उपयोग में लिए जाने वाले साधन कितने पवित्र हैं? रोगी का आचरण और जीवन-चर्या प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों और नियमों के प्रतिकूल तो नहीं है?

(क्रमशः)

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर- 342003 (राज.)

फोनः 0291-2621554, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www. chordiahealthzone.com

व्यंग्यात्मक क्षणिकाएँ

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार के अभियोग में,
उन पर मुकदमा चल रहा है
मगर, उन्हें विश्वास है
वे मुकदमा जीत जायेंगे।
रिश्वत के आरोप में पकड़े गये हैं
रिश्वत देकर छूट जायेंगे।

वधू

दहेज में उनको
इतना सामान दिया गया
कि वर व उसका पिता
उसे देख-देखकर फूल गये।
वे सामान तो ले गये
लेकिन,
वधू को स्टेशन पर ही भूल गये।

बाल-स्तम्भ

पश्चात्ताप के आंसू

श्री अंकुश जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अप्रेल 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

फिल्म खत्म हो चुकी थी। हॉल के भीतर की बत्तियां जल उठीं। दरवाजे खुल गये। मैंने बस्ते को कंधे पर लटकाया और सिर झुकाये दरवाजे की ओर खिसकने लगा।

हॉल में घुसते समय मुझे ऐसा लगा था कि लोग मुझे घूर रहे हैं, पर हॉल से निकलते समय न जाने क्यों मैं सिर ऊँचा करके नहीं चल पा रहा था। मैं जल्दी से जल्दी हॉल से बाहर निकल जाना चाहता था। काश! इस समय मेरे पंख उग आते तो कितना अच्छा होता। मैं पक्षी की तरह उड़कर हॉल के बाहर निकल आता और पल-भर में घर पहुँच जाता।

बस्ता कंधे पर बोझ जैसा लग रहा था। मन कर रहा था कि बस्ते को हॉल के अंदर की सीट के नीचे डाल आऊँ। कम-से-कम लोग इस तरह घूर-घूरकर तो न देखेंगे। स्कूल में ही मैंने सोचा था कि बस्ता राजू के जिम्मे कर दूँ, ताकि हॉल में मुझे देखकर लोग यह न सोचें कि यह लड़का स्कूल से भागकर फिल्म देखने आया है। लेकिन राजू कहाँ इतना परोपकारी था? बस, इतना ही काफी था कि उसने घर पर मेरे फिल्म देखने की बात न कहने का वचन दे दिया था।

मैं हॉल के बाहर निकल आया। सूरज डूब चुका था। पर अभी अंधेरा नहीं फैला था। घर पहुँचते-पहुँचते अंधेरा हो जाएगा। पिताजी कारखाने से लौट आये होंगे। मुझे न देखकर उन्होंने मेरे बारे में मां से पूछा होगा। मां ने कह दिया होगा कि अभी तक स्कूल से नहीं आया। पिताजी गुस्सा हुए होंगे।

उन्होंने कहा होगा- आज भी वह जरूर स्कूल से भागकर फिल्म देखने गया होगा। फिर पिताजी ने मां पर दोष लगाया होगा कि उसकी लापरवाही और लाड़-प्यार से ही मैं बिगड़ रहा हूँ।

फिर पिताजी को अचानक खयाल आया होगा। उन्होंने मां से पूछा होगा कि क्या तुमने मेरी जेब से सौ रुपये निकाले थे। पर मां भला बिना पूछे क्यों निकालती? पिता के सौ रुपये चुराने वाला चोर तो मैं हूँ। हो सकता है कि पिताजी अभी घर नहीं पहुँचे हों। सब्जी खरीदने में लगे हों या मित्र के यहां ही चले गये हों। तब उनके पहुँचने से पहले ही मैं घर पहुँच जाता। मां पूछती तो कह देता कि आज एन.सी.सी. की परेड़ थी। इसलिए देर हो गयी। फिर मैं जल्दी-जल्दी नाश्ता करके खेलने चला जाता। खेलकर देर से लौटता, ताकि किसी को पूछने का खयाल न रहता। यदि पिताजी सौ रुपयों के बारे में पूछते भी तो मैं साफ कह देता कि मैंने रुपये नहीं लिए।

मैं यही सब सोचता हुआ तेजी से चला जा रहा था। सोचता था कि जल्दी से जल्दी बाजार से बाहर निकल जाऊँ, पर दुकानों की कतारें खत्म होने का नाम ही न ले रही थीं। मुझे लग रहा था कि दुकानों पर खड़े लोगों की आंखे मेरे बस्ते पर टिकी हुई हैं। बस चलता तो मैं अदृश्य हो जाता। फिर भला ये आंखें ऐसे घूर-घूरकर मुझे देख पातीं?

खैर, थोड़ा आगे बढ़ा तो देखा कि एक होटल के सामने भीड़ लगी हुई है। शायद कोई दुर्घटना है। मैं तेजी से होटल के पास पहुँचा। आँखों को विश्वास न हुआ। पिताजी! हाँ, पिताजी ही थे, जो होटल के काउंटर पर चुपचाप सहमे-से खड़े थे। चेहरा सफेद पड़ चुका था। सभी लोग उनकी ओर देख रहे थे। होटल का मैनेजर पिताजी को क्यों डांट रहा है?

'आपने नाश्ते से पहले अपनी जेबें क्यों नहीं देख ली?' मैनेजर चीख रहा था।

'मैं...मेरी जेब में सौ रुपये.....।' पिताजी मरी-मरी सी आवाज में बोल रहे थे।

'तो सौ रुपये कहाँ उड़ गये?' मैंने तो आपकी पॉकेट नहीं मारी?'- मैनेजर के स्वर में गुस्सा साफ जाहिर हो रहा था।

पिताजी चुप! उनके मुंह से बस 'मैं...मैं...' के अलावा कोई शब्द नहीं फूट रहे थे।

पिताजी चुप क्यों हैं? वे क्यों नहीं कह देते कि मेरी जेब किसी ने काट ली। वे क्यों नहीं कह देते कि जेब मेरे लाड़ले बेटे ने काट ली।

होटल का मालिक जोर-जोर से चिल्ला रहा था। वह बार-बार पिता से पैसे मांग रहा था। भीड़ बढ़ती जा रही थी। अपनी असहाय स्थिति के कारण पिता की आंखें भर आयी थीं। मुझे अचानक लगा कि ये आंखें बीच बाजार में हो रहे खुले अपमान के कारण नहीं, बल्कि मेरे कारण छलक आयीं हैं। इन आंसुओं की हर बूंद में मेरे भविष्य की चिंता समायी हुई है, मेरी करतूत से दुःखी हैं। मैं भीड़ में खड़ा फूट-फूटकर रोने लगा।

तभी पिताजी के सहकर्मी वर्माजी भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े। उन्होंने पिताजी से सारा माजरा पूछा। फिर होटल के मालिक को झाड़ते हुए अपनी जेब से निकालकर उसके रुपये चुकाये। भीड़ छंट गयी।

मैं रोता हुआ घर की ओर चल पड़ा। मेरा मन मुझे धिक्कार रहा था। सोचता था कि किसी गाड़ी के नीचे आ जाऊँ या कहीं डूब मरूँ।

किसी तरह घर तक पहुँचा। घर पहुँचते ही बिस्तर पर गिरा और तकिये में मुंह छिपाकर रोने लगा। तभी पिताजी घर आ गये। मां ने पूछा 'क्या बात है? आपका चेहरा काफी उतरा हुआ लग रहा है। तबीयत तो ठीक है न?'

पिताजी ने मरी-सी आवाज में कहा 'हां ठीक है।'

फिर उन्होंने मुझे बुलवाया। मैंने सोचा कि पिताजी जरूर मारेंगे। आज खुद मैं बुरी तरह पिटना चाहता था। चाहता था कि पिताजी मुझे खूब मारें...इतना मारें कि मेरा दम निकल जाए।

मगर पिताजी ने मुझे बिल्कुल डांटा तक नहीं। उन्होंने महज इतना ही कहा-'बेटा, जेब से बगैर बताये पैसे नहीं निकालना चाहिए। तुम्हें आवश्यकता हो तो मुझसे मांग लिया करो।'

मैं शर्म से जमीन में गड़ा जा रहा था। आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

-'जैनसन वाला स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड़, भवानी मण्डी-326502 (राज.)

प्रश्न:-

1. लोग उसे क्यों घूर रहे थे?
2. बालक घर में बिना बताए फिल्म देखने चले जाते हैं- इस स्थिति के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?

3. घर जाते हुए उसे कैसा भय सता रहा था?
4. पिताजी ने उसे क्यों नहीं डांटा?
5. उसे कब अपनी भूल का एहसास हुआ?
6. निम्न मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-
   1. चेहरा सफेद पड़ना,   2. फूट-फूटकर रोना

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2010] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'क्षमा का प्रभाव' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 31 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	प्रीति जैन-जोधपुर	19
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मितुल जैन-भवानी मण्डी	19
तृतीय पुरस्कार-150/-	हर्षल छोरिया-मालेगाँव	19
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	19
	सुनयना जैन-बोरावड़	19
	अर्पित जैन-जोधपुर	19
	सेजल भंसाली-जलगाँव	18.75
	सुजल जैन-जयपुर	18.50

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2010] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'जयघोष और विजयघोष मुनि' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 18 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 25 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	लविश जैन-जयपुर	25
द्वितीय पुरस्कार-200/-	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	24.5
तृतीय पुरस्कार-150/-	गरिमा जैन-कोटा	24.5
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	अर्पित जैन-जोधपुर	24.5
	श्रेया मेहता-शिवमोगा	24.5
	नरेन्द्रकुमार जैन-खेरली	24.5
	रजत जैन-मांगरोल	24
	सौरभ भंसाली-जलगाँव	24

प्रतिवेदन

अध्यात्म-चेतनावर्ष की उपलब्धियाँ

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना

(आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना-वर्ष के समापन समारोह के अवसर पर पीपाड़ में 18 जनवरी को प्रस्तुत विचार)

युग निर्माता युग मनीषी, युग प्रभावक, अध्यात्म योगी प्रतिपल स्मरणीय लक्षाधिक भक्तों के हृदय में विराजित भगवन्त, संयम सुमेरू, जिनशासन निधि, रत्नवंश के दिव्य दिवाकर केवल कुल के शृंगार, मां रूपा के लाल, मरुधरा के सरताज, पीपाड़ नगर के अभिजात पुरुषवर गंधहत्थी, श्रमण शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का हम सब भक्त जनों पर, चतुर्विध संघ पर, जिनशासन पर, जैन जैनेतर समुदाय पर, अध्यात्म रसिक श्रद्धालुगण पर एवं मां भारती पर अनन्य उपकार रहा है। निस्पृह योगी आत्मसाधक वह महापुरुष किसी से नहीं जुड़ा, न उन्होंने किसी को अपने से जोड़ा, तथापि जो-जो भी उनसे जुड़ा, उनका अनन्त यशपूर्ण पतितपावन नाम जिन-जिन भूभागों, व्यक्तियों, समूहों व पदों से जुड़ा वे सभी धन्य-धन्य हो गये, स्वयं महिमामंडित हो गये। भाष्यमान भास्कर की परिधि में आने वाले उपग्रह स्वयं प्रकाशमान प्रकाशदाता बन जाते हैं, उसकी दिव्य किरणों के आलोक में तिमिरांधकार स्वतः तिरोहित हो जाता है।

यह पावनधरा पीपाड़ की माटी जहाँ के पुद्गलों से उनका देह निर्मित हुआ, जहाँ उनकी प्रथम किलकारी ने मां रूपा व सम्पूर्ण परिवार की दुश्चिन्ताओं व्यथाओं को समाप्त कर नवजीवन, नव आनन्द व नव उत्साह का संदेश दिया, जहां की धरती में बाल सुलभ खेल खेलते हुए परिजनों, बंधुबांधवों व इष्ट जनों को आनन्दित किया। जहाँ पूज्या महासतीजी श्री धनकंवर जी म.सा. व अप्रमत्तयोगी महासाधक पूज्य स्वामी श्री हरखचंद जी म.सा. की प्रेरणाओं व शिक्षा का पाठ पढ़ते हुए उस बाल योगी के वैराग्य संस्कार पल्लवित, पुष्पित एवं वृद्धिंगत हुए, सौभाग्य से जिस पावन धरा पर उन्हीं पूज्यपाद के यशस्वी पट्टधर आचार्यप्रवर हीरा का पावन जन्म हुआ है, उस धरती से बढ़कर पावन धरती और कौन होगी, जैन धर्म के गौरवगरिमायुक्त इतिहास में पीपाड़ क्षेत्र का नाम स्वर्णिम

पंक्तियों में अंकित रहेगा।

यद्यपि 'जन्म' का नहीं 'संयम' का, 'व्यक्तित्व' का नहीं 'कृतित्व' का महत्त्व सैद्धान्तिक दृष्टि से अधिक होता है। पर उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व, उनका स्नेह स्निग्ध मुख आनन, सहस्रतेज से उद्दीप्त उनके नयनों की भाषा, अल्पाल्प उनके वचन, उनका दिव्य आभामंडल व उनकी अनन्त पुण्यवानी ऐसे प्रभावक थे, भक्त उनके पावन दर्शन कर कभी तुष्ट ही नहीं होता, सीमित शब्दों में उनकी गहन प्रेरणा जीवन पर्यन्त का नियम बन जाती, उन अनेकविध कारणों से उनका जन्म दिवस 'पौष शुक्ला चतुर्दशी' उनके जीवनकाल में भी भक्तों के लिये सदा आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत रही। भक्तजन गुरुदेव के जन्मदिवस पर तप-त्याग व्रत-नियम की भेंट समर्पित कर अपने आपको धन्य-धन्य समझते।

'जन्मशताब्दी' का पावन प्रसंग आने के पूर्व ही संघ समाज में यह एक नवीन प्रेरणा का संदेशवाहक बन गया। कार्यकर्ताओं के मन में सहज ही उनकी दीक्षा अर्द्ध शताब्दी सन् 1969 की स्मृतियाँ जीवन्त हो उठी और संघ ने चालीस वर्ष के पश्चात् पुनः रूपरेखा तय कर कार्य करने का दायित्व सौंप दिया। परम पूज्य आचार्य भगवान की प्रभावी प्रेरणा कि अध्यात्म मनीषी महापुरुष की पावन जन्म शताब्दी का प्रसंग चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य की अध्यात्म चेतना को जागृत करने हेतु प्रेरक बने, को शिरोधार्य कर सम्माननीय संघ संरक्षक मंडल के संयोजक श्री मोफतराज सा मुणोत के निर्देशन, सम्माननीय संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा की अध्यक्षता व स्नेह प्रदाता साथियों के सहकार व सहमति से साधना-प्रभावना व उन्नयन कार्यक्रम संघ को समर्पित कर संघ व संघ की सभी सहयोगी इकाइयों, घटकों के माध्यम से वर्ष भर देशभर में एक अभियान चलाया गया, संघ व संघ के विभिन्न घटकों में सम्माननीय पदाधिकारीगण व कार्यकर्ताओं ने देश के विभिन्न भागों में प्रवास कर गुरु भाइयों से सम्पर्क करते हुए अनेकानेक मीटिंगों को आयोजित कर अपनी बात रखते हुए संघ सदस्यों तक यह संदेश पहुँचाया।

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति के हम सदस्यगण भी संघ कार्यकर्तागण के रूप में अपना सहयोग प्रदान करते रहे।

इस वर्ष के कार्यक्रमों के आयोजन व पूज्यपाद की प्रेरणाओं को आप

सब तक पहुँचाने में हम कितने सफल रहे एवं क्या कुछ करना शेष रहा, यह समीक्षा मैं आप सभी संघ सदस्यों पर ही छोड़ता हूँ।

यदि Sky is the Limit अनन्त आकाश ही अन्तिम सीमा होती है तदपि संघ के विविध घटकों के अनुभवी मार्गदर्शक पदाधिकारियों के मार्गदर्शन में देशभर के संघ सदस्यों व कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने प्रयास करने का यत्न किया है, मैं उनके सबके सहयोग, स्नेह, सहकार के लिये सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, अभिवादन करता हूँ और उनके प्रतिनिधि के रूप में उनके महनीय प्रयासों को 'सुदामा के दो मुट्ठी चावल' की भांति परम पूज्य आचार्य भगवंत के पावन चरण सरोजों में समर्पित करता हूँ। जो कुछ भी हो पाया है, वह सब पूज्यपाद के ही पावन अतिशय, उनके अप्रत्यक्ष कृपा प्रसाद व भक्त हृदयों में अपने परमाराध्य के प्रति रहे श्रद्धा समर्पण से ही हो पाया है। जो-जो कार्य शेष रहे, जिन कार्यक्रमों को गति नहीं मिल सकी व जहाँ-जहाँ प्रयास में जो-जो कमियाँ रही हैं वे सब इस चरण किन्नर के पुरुषार्थ की कमी है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् व इन इकाइयों की शाखाओं के माध्यम से देश में विभिन्न भागों में अनेकानेक कार्यशालाओं व शिविरों का आयोजन हुआ, सैकड़ों श्रद्धालु भक्तों ने आबाल ब्रह्मव्रती अपने आराध्य गुरुवर्य की स्मृति में आजीवन, वार्षिक व आंशिक शीलव्रत आराधना के संकल्प ले अपने जीवन को शील सौरभ से सुवासित किया, महाव्रतों के निरतिचार पालक उन महाभाग के संयम जीवन से प्रेरणा ले कइयों ने बारह व्रत व आंशिक व्रत ग्रहण के संकल्प लेकर अपने कदम आगे बढ़ाये हैं। अनेकानेक तप आराधकों ने 'तपस्या' का अर्घ्य दिया है। शताधिक भाई बहिनों ने इस वर्ष वार्षिक एकांतर तप, वर्षी तप कर अपनी आत्मा को भावित किया है। महातपस्विनी सुश्राविका श्रीमती प्रकाशकंवर जी बाफना धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना, गोटन की 141 दिवसीय तप साधना एक नव कीर्तिमान है। मैं नत मस्तक हो उनका अभिवादन करता हूँ। अनेकानेक वर्षीतप साधकों में आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति के सहसंयोजक श्रावकरत्न युवारत्न श्री सुमति

चन्द जी मेहता, पीपाड़सिटी, समिति सहसंयोजक व युवक संघ के अ.भा. कार्याध्यक्ष युवा रत्न श्री राजकुमार जी गोलेछा व उनके अग्रज युवारत्न श्री ललित जी गोलेछा ने अपनी महनीय तपःसाधना से शताब्दी समिति के हम सब कार्यकर्ताओं का मान बढ़ाया है, हम उनके प्रति स्नेह, समादर व गौरव की अभिव्यक्ति कर हर्षानुभूति कर रहे हैं।

इस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक उपलब्धि है दिनाँक 15 दिसम्बर 2010 को भोपालगढ़ में रत्ननगरी जयपुर के प्रख्यात रत्न व्यवसायी वीर पिता, वीर पति श्री सुभाषचन्द्र जी डागा की भागवती श्रमण दीक्षा, जिनकी सांसारिक पक्षीया सुपुत्री एकताजी सम्प्रति महासती जी श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. एवं सांसारिक सहधर्मिणी श्री मंजू जी सम्प्रति महासतीजी श्री नव्यप्रभा जी म.सा. अभी दक्षिण भारत के विभिन्न अंचलों में पूज्या साध्वीप्रमुखा जी म.सा. की सुशिष्या व्याख्यात्री महासती जी श्री ज्ञानलता जी म.सा. चारित्रलता जी म.सा. की सन्निधि में जिनशासन की महनीय प्रभावना कर रत्नवंश का गौरव अभिवृद्ध कर रही हैं।

इसी वर्ष की अन्य श्रेष्ठ उपलब्धि है– 11 श्रमणी दीक्षाएँ। दिनाँक 15 मई 2010 को धर्मधरा बालोतरा में पाँच, बहिनों की, भरतपुर में एक बहिन एवं बैंगलुरु में चार बहिनों की तथा 23 मई 2010 को चांगोटोला में एक बहिन की, इस प्रकार कुल ग्यारह भागवती श्रमणी दीक्षाएँ सम्पन्न हुईं। हम इन श्रेष्ठ संयमधनी चारित्रात्माओं के साथ गौरवगरिमामय, आगमज्ञ संघनायक परमपूज्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. शांतदांत पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति सभी 15 संत-भगवंतों एवं 65 महासतीवृंद के चरणारविन्दों में सश्रद्धा नमन करते हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि इसी कड़ी में कुछ और चारित्रात्माओं की दीक्षाएँ भी संभावित है। पूज्यपाद के पावन कृपा प्रसाद, परमपूज्य आचार्यप्रवर के साधनातिशय से रत्नसंघ के चारित्रात्माओं की संख्या शताधिक हो आगे बढ़े, यह हम सब भक्तजनों की कामना है।

आचार्य श्री हस्ती की जन्मशताब्दी के शुभारंभ पर दिनांक 30 दिसम्बर, 2009 को पालनपुर में आचार्य हस्ती की जीवनी 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' के पद्यानुवाद के रूप में 'मुक्ति का राही' पुस्तक का

विमोचन किया गया। इस अमर रचना के रचयिता हैं अनन्य गुरुभक्त श्रावक रत्न सम्माननीय श्री सम्पतराज जी चौधरी। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा इस वर्ष में मुक्ति का राही सहित 9 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया जिसमें जैन धर्म का मौलिक इतिहास के संक्षिप्त किये गये भाग व इनका अंग्रेजी अनुवाद सम्मिलित है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल द्वारा इस अवधि में 28 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण भी किया गया है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल व आचार्यश्री हस्ती शताब्दी समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाँक 13-14 नवम्बर को पाली में विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन कर अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद् को पुनः सक्रिय किया गया है। इसी वर्ष जिनवाणी के विशेषांक 'गुरु-गरिमा एवं श्रमण जीवन' का प्रकाशन भी मंडल द्वारा पूज्यपाद के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा इसी वर्ष धार्मिक भंडोपकरणों की समुचित व्यवस्था व उपलब्धि हेतु केन्द्रीय स्तर पर उपकरण भंडार की समीचीन व्यवस्था की गई है। साथ ही आचार्य श्री शोभाचन्द्र ज्ञान भण्डार में प्राच्य ग्रंथों के संरक्षण का महनीय कार्य सम्पादित किया गया है। इस महनीय कार्य हेतु मैं सुश्रावक श्री सोहनराज जी संकलेचा व श्री कंवलराज सा मेहता का आभार व्यक्त करता हूँ। संघ व उसकी शाखाओं के माध्यम से इस वर्ष देश के विभिन्न भागों में सामायिक-स्वाध्याय भवनों का निर्माण किया गया है। कई स्थानों पर संघ के अतिथिगृहों का भी निर्माण किया गया है। उनमें उल्लेखनीय है- सामायिक स्वाध्याय भवन-सूरत, सामायिक स्वाध्याय भवन-नेहरुपार्क, जोधपुर, सामायिक स्वाध्याय भवन-पावटा, जोधपुर, सामायिक स्वाध्याय भवन, लक्ष्मीनगर, शक्तिनगर, जोधपुर, सामायिक स्वाध्याय भवन रतकुडिया तथा हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर, सामायिक स्वाध्याय भवन-गोटन एवं पावटा में अतिथिगृहों का निर्माण। मैं सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं का उनके द्वारा किए गये योगदान हेतु अभिनन्दन करता हूँ। इसी कड़ी में मुझे यह घोषणा करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि बाड़मेर के मूल निवासी सम्प्रति जोधपुर निवासी अनन्य गुरुभक्त श्रीमान् केवलचन्द जी, विजयराज जी, सुरेशकुमार जी, अंकित कुमार जी गुलेच्छा द्वारा आदीश्वर रेजीडेन्सी, बालोतरा में सामायिक स्वाध्याय भवन हेतु भूखंड व इस पर स्वयं अपने परिवार द्वारा ही निर्माण कर संघ को समर्पित करने का संकल्प किया गया है। मैं अपनी ओर से व संघ की ओर से गुलेच्छा परिवार का अभिनन्दन करता

हूँ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ उनकी अमर प्रेरणा स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार में संलग्न अग्रगण्य संस्था है जिसकी स्थापना वि.सं. 2002 में पूज्यपाद की पावन प्रेरणा से की गई। स्वाध्याय संघ द्वारा इस वर्ष पर्युषण पर्वाराधन हेतु 180 स्थानों पर स्वाध्यायियों की व्यवस्था की गई, जिसमें 40 नये स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने भी अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। स्वाध्याय संघ द्वारा प्रचार-प्रसार, शिविर एवं विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 140 नये स्वाध्यायी बनाये गये। इस वर्ष स्वाध्याय संघ के माध्यम से जलगांव, जोधपुर, गोटन एवं इस वर्षान्त में पीपाड़ में स्वाध्यायी शिविरों का सुन्दर आयोजन कर स्वाध्यायी भाई बहिनों के ज्ञानाराधन की व्यवस्था की गई है। स्वाध्याय संघ की प्रगति हेतु मैं अपने मित्र भाई श्री नवरतन जी डागा एवं सचिव श्री राजेश जी भण्डारी को बधाई देता हूँ।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा परम पूज्य गुरुदेव के जीवन ग्रंथ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आचार्य हस्ती स्वाध्याय प्रश्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 1830 प्रतियोगियों ने भाग लिया। 495 अंकों से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 448 प्रतिभागियों की पुनः लिखित परीक्षा का आयोजन 19 दिसम्बर को 27 केन्द्रों पर किया गया। योग्यता सूची में आने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि अंतर्राष्ट्रीय अभिभाषक सुराना एण्ड सुराना इण्टरनेशनल, चेन्नई के सौजन्य से प्रदान की गई, उनके प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ। बोर्ड द्वारा इस वर्ष आगे अध्ययन हेतु 'कर्म सिद्धान्त वारिधि' व 50 थोकड़ों का पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। बोर्ड द्वारा किये गये प्रयासों हेतु आदरणीय सुशीला जी बोहरा एवं उनके सभी सहयोगियों के साथ रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन को हार्दिक बधाई।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कर्मठ अध्यक्षा सम्माननीया श्रीमती मधु जी सुराणा के नेतृत्व में इस वर्ष देशभर में बहिनों से सम्पर्क कर नारी-शक्ति को संगठित करने एवं उनके माध्यम से पारिवारिक संस्कारों को पुष्ट करने का महनीय कार्य किया गया है। श्राविका संघ के माध्यम से कई स्थानों पर वर्ष भर आयम्बिल की ओली, कई तपस्याओं की लड़ी आदि

के साथ ही वर्ष भर एकान्तर तप साधना व वर्षीतप के लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त किये गये हैं। बहिनों में जागृति हेतु भी श्राविका मंडल द्वारा शिविरों व अन्य कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया है। मैं अधिक न कहते हुए बहिन मधु जी सुराणा द्वारा उच्चरित प्रेरणा वाक्य We can do, we Should do, we Shall do को दोहराता हूँ। यह प्रतिवेदन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक संघ की उपलब्धियों के उल्लेख बिना अधूरा ही रहेगा जो आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी के पावन प्रसंग को लेकर सन् 2006 से ही प्रयासरत रहा है। युवक संघ गुरुदेव के ही शब्दों में मेरी इच्छाएँ मेरी महत्त्वाकांक्षा है। मुझे भी इसका प्रारंभिक सदस्य बनने का सुअवसर मिला, यह मेरा सौभाग्य है व गुरु हस्ती का प्रसाद व मुझे दी गई अंतिम भोलावण है। पाँच वर्षों में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से लक्ष्यातीत सफलता प्राप्त की गई है। वर्ष 2010 के लिये निर्धारित 100 के लक्ष्य से अधिक 500 युवा बंधुओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई है। युवक संघ द्वारा देश के विभिन्न भागों में धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन छात्रों व युवाओं की अध्यात्म चेतना जागृत करने का अभिनव प्रयास है। विहार सेवा में इस वर्ष सैकड़ों युवा साथियों ने भाग लेकर अपनी संघनिष्ठा गुरुभगवंतों के प्रति श्रद्धा व समर्पण का परिचय दिया है। युवक संघ के अध्यक्ष युवारत्न श्री बुधमल जी बोहरा एवं देश भर में विराजित सभी युवा साथियों का अभिवादन करते हुए उन्हें बधाई देता हूँ।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जनजागरण व प्रभावना का महनीय कार्य किया गया है। संघ शाखाओं द्वारा सामूहिक सामायिक, प्रभावना रैली, रक्तदान शिविरों, सेवा शिविरों में सुन्दर आयोजनों से संघ का गौरव अभिवृद्ध हुआ है। विभिन्न क्षेत्रों में सम्पन्न कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा समिति के कर्मठ महासचिव सुश्रावक श्री जगदीशमल जी कुम्भट द्वारा तैयार की गई है जिसे जिनवाणी के माध्यम से आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

अंत में आभार-

मेरे दायित्व निर्वहन व मुझे सजग सक्रिय व गतिशील करने में संघ संरक्षक सम्माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत का हृदय से शुक्रगुजार हूँ। उनका

मुझ पर विशेष स्नेह है। संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने स्वयं इस वर्ष विभिन्न स्थानों पर प्रवास कर अध्यात्म चेतना वर्ष का संदेश पहुँचाने में सहयोग व नेतृत्व प्रदान किया है। मेरे सहयोगी मित्र संयुक्त संयोजक भाई अशोक जी कवाड़ ने प्रवास तो किया ही, साथ ही वे वर्ष भर समिति के सदस्यों, संघ व संघ की सहयोगी इकाइयों के कार्यकर्ताओं से जीवन्त सम्पर्क कर इस कार्य को गति प्रदान करने के साथ मुझे भी खट्टे-मीठे शब्दों में सहयोग व सम्बल प्रदान करते रहे। महासचिव भाई श्री जगदीशमल जी कुम्भट ने कार्यालय तो सम्भाला ही प्रचार-प्रसार में योगदान भी किया। अन्य सह-संयोजक व सचिव साथियों ने भी अपना योगदान किया। अंतिम चरण में आओ प्रत्याख्यान करें व व्रतों के मासखमण के माध्यम से हजारों भाई-बहिनों ने त्याग प्रत्याख्यान किये हैं।

जो भी कार्य सम्पादित हुआ है सब आराध्य गुरुदेव की अनन्य कृपा, उनके महनीय अतिशय व अनन्त पुण्यलब्धि से सम्पन्न हुआ है। परम पूज्य आचार्य भगवन्त, परमपूज्य उपाध्याय भगवन्त श्रद्धेय गुरु भगवंतों एवं पूज्या महासतीवृन्द की मेरे पर महती कृपा रही है। उनकी पावन प्रेरणा ही इस यात्रा की सम्बल व दिशा सूचक रही है। अंत में इन शब्दों में-

"पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है।-2
हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है।-2
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।
करते हो तुम भगवन् मेरा नाम हो रहा है।"

जय महावीर, जय गुरु हस्ती, जय गुरु हीरा, जय गुरु मान।

-संयोजक, आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी समिति,
सी-55, शास्त्रीनगर, जोधपुर-342003 (राज.)

संशोधन

जिनवाणी, फरवरी 2011 के पृष्ठ 107 पर अन्तिम पंक्ति इस प्रकार पढ़ी जाए-" आप अपने पीछे भतीजे श्री बाबूलाल जी, प्रकाश जी, बुधमल जी, पदमचन्द जी, अशोक कुमार जी का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

विवरण

अध्यात्म-चेतना वर्ष में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की उपलब्धियाँ

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. परम पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्' 17 वर्ष बाद फिर से सक्रिय हुई। 'आचार्य हस्ती का साहित्य और समाज को अवदान' विषय पर 13-14 नवम्बर 2010 को पाली में आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी में देशभर के 31 जैन-जैनेतर विद्वानों ने सक्रिय सहभागिता की। प्रोफेसर डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने संगोष्ठी का कुशल एवं सफल संयोजन किया।
2. श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के विद्यार्थी धर्मनिष्ठ गुरुभक्त श्री लोकेश कुमार जैन का भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) में सफल प्रवेश हुआ।
3. श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के पुराने भवन के स्थान पर एक विशाल नये भवन का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है।
4. 'वीतराग ध्यान केन्द्र' के अन्तर्गत जयपुर के नवनिर्मित भवन में एवं अन्य क्षेत्रों में नियमित रूप से ध्यान शिविरों के आयोजन, ध्यान-साधना और प्रशिक्षण हेतु पद्मभूषण श्री देवेन्द्रराज जी मेहता के नेतृत्व में उनकी टीम सेवाएँ देने के लिए तत्पर है।
5. धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक का स्तर व लोकप्रियता और बढ़ी। श्रेष्ठ विशेषांकों के क्रम में करीब 500 पृष्ठ का 17 वाँ विशेषांक 'गुरु गरिमा और श्रमण-जीवन' प्रकाशित हुआ।
6. आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' (भाग 1 से 4) की सराहना करते हुए 1983 के पद्मविभूषण डॉ. दौलतसिंह

कोठारी ने लिखा था कि उनका संक्षिप्तीकरण और अंग्रेजी अनुवाद करवाया जाना चाहिये, ताकि बड़ी संख्या में देश-विदेश के जैन-जैनेतर लोगों को इनका लाभ मिल सके। 1991 में प्रकाशित 'जिनवाणी' के श्रद्धांजलि विशेषांक (पृ. संख्या 133) से मालूम पड़ता है कि आचार्य हस्ती की भी अंग्रेजी अनुवाद की भावना थी। पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी से वर्ष 2006 में इस सम्बन्ध में चर्चा हुई। संघसेवा शिरोमणि श्री मोफतराज जी मुणोत की भी यह हार्दिक अभिलाषा रही कि जैन इतिहास का संक्षिप्तीकरण और अंग्रेजी रूपान्तरण हो। काफी कठिनाइयों के बावजूद शताब्दी वर्ष में यह कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ। संक्षिप्त के चारों भाग तथा उनका अंग्रेजी अनुवाद; कुल आठों ही भाग, मैं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को पूर्ण श्रद्धा-भक्ति सहित समर्पित करता हूँ।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. ने दो दशक के अथक शोधपूर्ण परिश्रम से हमारे लिए इन ग्रंथों की रचना की। इन ग्रन्थों में उन्होंने अपनी जीवन-साधना का निचोड़ भर दिया। इनका पठन-पाठन जैन-जैनेतर, देशी-विदेशी हर वर्ग और श्रेणी के पाठक के लिए परम कल्याणकारी है।

7. आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चारों भागों पर आधारित 'जैन इतिहास के प्रसंग' शीर्षक से चालीस लघु-पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। इन पुस्तकों में इतिहास में वर्णित महापुरुषों, घटनाओं और प्रसंगों का समावेश किया गया है। इन प्रसंगों के वर्णन में इतिहास शैली को गौण किया गया है, इसलिए ये पुस्तकें विद्यार्थियों, स्वाध्यायियों और हर आयु-वर्ग के पाठकों के लिए उपयोगी हैं। प्रभावना और यात्रा में इन पुस्तकों की उपयोगिता असंदिग्ध है।

8. आचार्य श्री हस्ती प्रणीत- (1) 'सामायिक-साधना और स्वाध्याय' तथा (2) 'अमृत वाक्' पुस्तकें प्रकाशित की गईं। सौ पृष्ठों से भी

कम की ये पुस्तकें आचार्यप्रवर के अमर सन्देश-सामायिक और स्वाध्याय तथा उनके विचार-दर्शन का प्रतिनिधित्व करती हैं। वेद-विज्ञ और जैन दर्शन के विश्रुत विद्वान् प्रो. दयानन्द जी भार्गव के द्वारा लिखित प्रेरणादायी भूमिका के साथ 'अमृत वाक्' का प्रकाशन हुआ है। भाषा सरल, प्रांजल और प्रस्तुति बड़ी ही हृदयग्राही है।

9. आचार्य हस्ती के अन्तेवासी शिष्य श्री गौतममुनि जी ने आचार्यप्रवर की अन्तिम आराधना (संलेखना-संथारा) का मार्मिक चित्रण किया था, जिसका संकलन श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने किया था। इसे 'जीवन का संध्याकाल : आँखों देखा हाल' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया। श्री सम्पतराज जी चौधरी ने इसका सम्पादन किया। सत्तर पृष्ठीय यह पुस्तक संथारे की प्रक्रिया तथा भेद-विज्ञान का प्रायोगिक दिग्दर्शन कराती है। शुरू से अन्त तक यह पाठक को बाँधे रखती है।

10. 16 जनवरी 2011 को पीपाड़शहर में आयोजित आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समापन समारोह में हजारों नर-नारियों की मौजूदगी में इन सारी पुस्तकों का लोकार्पण/ विमोचन अहिंसा, अपरिग्रह, नैतिकता और प्रामाणिकता को अपने जीवन में उतारने वाले, आचार्य हस्ती के कृपापात्र राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत के कर-कमलों से हुआ।

11. आचार्य हस्ती द्वारा सम्पादित आगम 'प्रश्नव्याकरण सूत्र' का हिन्दी अनुवाद के साथ नूतन संस्करण प्रकाशित हुआ। इनके अलावा भी शताब्दी वर्ष में अप्राप्य ग्रंथों, शास्त्रों व अन्य पुस्तकों का प्रकाशन व पुनः प्रकाशन होता रहा।

12. पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पुनीत प्रेरणा तथा उनका मंगल मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहा। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समस्त सहयोगकर्ताओं का हार्दिक आभार।

-अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (12)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह बारहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अप्रेल 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। *-मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 671 से 784 तक से प्रश्न)

इन प्रश्नों के उत्तर पृष्ठ 98 पर दिये गये कोष्ठक में अक्षरों को साथ लेकर देना है।

1. मैं एक तीर्थंकर का पिता हूँ।
2. वासुपूज्यजी पूर्वभव में कौन थे?
3. मेरे पिता 12 वें देवलोक में गये।
4. भगवान शान्तिनाथ जी की आयु कितने वर्ष की थी?
5. मेरे 84000 साधु थे।
6. मैं दीक्षा लेने के बाद नौ महिने छद्मस्थ रहा?
7. माघ शुक्ला चौथ को मैंने दीक्षा ली?
8. अभिनन्दनजी वैशाख शु. चौथ को क्या छोड़ा?
9. मैं तीर्थंकर की माता बनी।

10. मैं तीर्थंकर का एक नक्षत्र हूँ।
11. मेरा किन मुनिराजों के साथ निर्वाण हुआ?
12. मैं 21000 वर्ष तक साधना काल में रहा।
13. मेरे 281000.........थे?
14. शीतलनाथजी का जन्मस्थल कौनसा है?
15. मैंने 5000 वर्ष तक राज्य किया।
16. मेरी अवगाहना 25 धनुष की थी।
17. प्रभु के नाम से मेरा नाम जुड़ा है।
18. मैं 300 वर्ष तक किस अवस्था में रहा?
19. मैंने तीर्थंकर को पारणा करवाया।
20. मेरे 88 गणधर थे।
21. ....तीर्थंकरों ने 1000 के साथ दीक्षा ली।
22. हम दो तीर्थंकरों ने.........की?
23. तीर्थंकर ने इस गाँव में पारणा किया।
24. ....तीर्थंकरों ने राज्य नहीं किया?
25. मैं तीर्थंकर की शिष्या बनी?

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (10) का परिणाम

जिनवाणी नंवम्बर, 2010 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 320 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्त विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती नरेन्द्र गोपीचन्द जी बंब-ठाणे (महा.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती अनीता अतुल जी मुणोत-कोल्हापुर (महा.)

तृतीय पुरस्कार- श्रीमती ज्योति जी भंसाली-बैंगलोर (कर्नाटक)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती कुंमकुंम त्रिलोकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर
2. श्रीमती किरण प्रमोद कुमार जी तातेड़ -देवाज (म.प्र.)
3. श्री जौहरीमल जी छाजेड़-जोधपुर (राज.)
4. श्रीमती लीला बाई जी संचेती-रायचुर (कर्नाटक)
5. सुश्री स्वीटी गोलेछा-ब्यावर (राज.)

1				नु		
2			न्त्र			
3				वी		
4	1					
5		या				
6	सु					
7			ल			
8					क	
9			द्या			
10				हि		
11			3			
12		र				
13				व		
14				ल		
15		न				
16			ल्ली			
17					क्ष	
18				मा		
19			ध			
20			धि			
21					स	
22						ही
23				न		
24				च		
25				जु		

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati, (M.H), Anil Kumar Jain-Kota , Anita Anil Jain-Dhule, Anita Satishchandji Duggar-Dhulia,Anju Jargad-Jaipur, Anu Jain-Hoshiarpur(Punjab), Aruna Jain-Hoshiarpur (Punjab), Ashok Surana-Nagaur, Babulal Jain-Jaipur, Babulal Katariya-Hyderabad, Babulal Ratanchand Jain-Jalgaon, Brijesh jain-Sawaimadhopur, Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chandralata Mehta-Jaipur, Chetna Bothra-Mumbai, Chitra Shreemal-Merta City, Darshika Kanwarlalji Tatia-Jalgaon, Dasarathmal chordia-Bangalore, Deepak Mehta-Dudu, Jaipur, Dilroop chand Bhandari-Jodhpur, Garv Lunkad-Kota, Gunmala Jain-Chittorgarh, Hajarimal Jain-Durg, Heerabai Rameshchand Karnawat-Ahemadnagar, Hema Bagmar-Secundrabad, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Jambubai Chajjer-Sindhanur, Javer Narendra Shah-Belgaum, Jaya Bhandari-Beawar, Jaymala Kankariya-Pali, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Lodha-Jaipur, Kamladevi Lunkad-Jodhpur, Kamlesh Gailra-Ajmer, Kanta Betala-Jaipur, Kiran Jain-Hoshiarpur, Punjab, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kusum Pareshji Punamiya-Ichalkaranji, Lalita lunawat-Jodhpur, Lata.S.Aanchaliya-Dhulia, Leelabai.A.Kothari-Ahemadnagar, Madhubala Pramodji bohra-Ichalkaranji, Mangala Singhvi-Jalgaon, Manisha Bhandari-Ichalkaranji, Manju Choudhary-Pipar City, Manju Jain-Hindaun City, Manju Palrecha-Jodhpur, Manoj Kothari-Udaipur, Mayuri.S.Jain-Dhulia, Meena Jain-Sawaimadhopur, Meena Vijay Bora-Mumbai, Nainchand Bafna-Jodhpur, Naresh Surana-Nagaur, Nathmal Kothari-Durg, chattisgarh, Neelam Chiper-Jaipur, Neetu Ostwal-Balotra, Barmer, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Heerawat-Jaipur, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Parasmal.D.Baghmar-Balotra, Barmer, Pista Golecha-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prabha Gulecha-Bangalore, Prakash Chand Nahar-Kawardha(C.G), Pramila Babulalji Pokhran-Dhulia, Pramila Kankariya-Jodhpur, Pramila mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Pramila Vinod Kumar Jain-Jaitran, Pali, Prasan Kothari-Jodhpur, Praveen Chand Jain -Karauli, Preeti Loonker-Jodhpur, Premlata Lodha-Jaipur, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Bohra-Secundrabad, Pushpa Golecha-Beawar, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, R.chandra Bothra-Chennai, Rajul Rameshchandji Kothari-Dhulia, Rakesh Kankaria-Jodhpur, Rekha Kankariya-Pali, Ritesh Jain, Sapna.R.Jain-Amravati(M.H), Sarika Srikant Bhandari-Ichalkaranji, Sarla Golecha-Beawar, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmal Runwal-Dhulia, Seema Dhing-Udaipur, Seema Dineshkumarji Ostwal-Jalgaon, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Shakuntala Hinger-Pali, Shakuntala Katariya-Jalgaon, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati, (M.H), Shashi Prabha Burad-Beawar, Shelly Kumbhat-Jodhpur, Shobabai Sagarmalji Kothari-Dhule, Shobha Dharamchandji kothari-Dhule, Shobha Nandlalji Gugale-Ichalkaranji, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Snehlata Pravinji Shah-Belgaum, Subhash chand

Mohanji Dhadiwal-Mumbai, Sumat Jain-Karauli, Sunanda Lodha-Dhule, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Kankariya-Ahmedabad, Sunita Navlakha-Kota , Susheela Bhandari-Chennai, Tarun Hinger-Pali, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila Kankariya-Jodhpur, Usha Jain-Kota, Usha Praveenji Bardiya-Dhulia, Usha surana-Jaipur, Vibha Bafna-Jodhpur, Vidya Singhvi-Badnawar, M.P, Vikas Bamb-Mumbai, Vimala Bohra-Jaipur, Vimlabai khinvasra-Dhulia.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Abha Jain-Alwar, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil D Jain-Mysore, Anila Bhandari-Beawar, Aruna katariya-Pali, Aruna.P.Baid-Amravati(M.H), Atishaya Jain-Durg, chattisgarh, Babita Sancheti- Alwar, Bhavesh buddhiprakash jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Bhawana Bhansali-Durg, Chameli Jain-Durg, chattisgarh, Chanchal Bai Devada-Bangalore, Chandabai Mohanlalji Dhoka-Jalgaon, Chandra Devada-Bangalore, Chandrakala Dilipraj Ranka-Bhadgaon, Jalgaon, Chandrakanta Lunawat-Shimoga, Chhaya.M.Mutha-Satara, Chinmaya Jain-Durg, chattisgarh, Chuki Devi Darda-Jodhpur, Dharmesh Punamiya jain-Pali, Divya Daga-Jaipur, Gulab Nahar-Hospet karnataka, Hansa Devi Surana-Bikaner, Hem Raj Surana-Jaipur, Hemalata Jain-Beawar, Janesh Surana-Pali, Kamala Modi-Jodhpur, Kamla Devi Satia-Ajmer, Kamla Surana-Jodhpur, Kamla Surana-Pali, Kamlesh Kumar Jain-Bundi, Kanchanbai Lodha-Nasik, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Prakashchand Kothari-Bodwad (M.H), Komal Ankur Kothari-Baroda Gujarat, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalitha Jain-Hyderabad, Lekhraj Sethiya-Ajmer, Mamta Bhandari-Nagaur, Mamta Chajjer-Samdari (Barmer), Manila Parakh -Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Kothari-Dudu, Jaipur, Manju N Bafna-Jalgaon, Manjula vasanth kumar Jain-Mumbai, Manjulata Jamer-Jaipur, Meena Choudhary-Delhi, Milap Parasmal lunawat-Ahmedabad, Mohanlal Jain-Ajmer, Mohanlal Motilal Jogad-Pilkhod, Jalgaon, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Naintara Ratanlal Bafna-Jalgaon, Neelam Jain-Ajmer, Nilam Kankaria-Nagaur, Padam chand munot-Jaipur, Padma.R.Bohra-Raichur, Pankaj Bhandari-Jodhpur, Parasmal Ratan Bohra-Balod, Chattisgarh, Parkash Jain-Hyderabad, Pinki Jain-Jaipur, Prakashmal Jain-Chennai, Pramila Kothari-Jodhpur, Prasan Gang-Mumbai, Pratibha Pradeepji Gandhi-Pune, Pravina Kothari-Jaipur, Priyanka Bagmar-Merta City, Pushpa Gautamji Bafna-Chennai, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Lunawat-Nagaur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Rajesh BuddhiPrakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Rajkumari Lodha-Jaipur, Rashi Raid-Pali, Rekha Surana-Nagaur, Rishabh Jain-Bundi, Ruchika Lunawat- Jodhpur, Sadhana Gugale-Ichalkaranji, Sangeeta Darda-Jodhpur, Sangeeta Khabiya -Mysore, Sangita.A.Singavi-Nasik, Santosh kothari-Jaipur, Santra Jain-Sawaimadhopur, Sarla Shantilalji kakariya-Jalgaon, Saroj Khabiya-Mysore, Seema Dinesh Jain-Sawaimadhopur, Shilpa Gandhi-Jodhpur, Shobha Kawad-Pali, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chhajer -Jodhpur, Suganbai Manakchandji Sand-Jalgaon, Suman Daga-

Bhopal, Sunil Jain-Mysore, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Mehta-Jodhpur] Surekha Rajeevji Choradia-Jalgaon, Surekha.A.Bhandari-Nasik, Sureshchand Jain-Alwar, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Gang-Jodhpur, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila Inderchand Ranka-Jalgaon, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Tilak Manjari Mehta-Bellary, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Urmila Mehta-Jaipur, Vandana Khincha-Surat, Vandana Punamiya-Pali, Varsha Dosi-Merta City, Vimla G Jain-Bodwad (M.H), Vinod Jain-Jodhpur, Vivek Mehta-Dudu, Jaipur.

23.5 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता–Sunitha Y Singhvi-Chennai, Abhay Kumar Jain-Patiala, Anu Anil Jain-Ludhiana , Basanta Madanlal Sanklecha-Dhulia, Bimla Kumari Heerawat-Jaipur, Chirag Jain-Gangapur City, Deepmala Singhvi-Pali, G.S.Jain-Aligarh, Tonk, Hemlata Kherada-Bhilwara, Jyoti Gandhi-Ichalkaranji, Kalabai Heeralalji Bardia-Jalgaon, Kanchan Bhavarlal sanghvi-Jalgaon, Kavita Mehta-Shimoga, Kuntal Devi Jain-Jaipur, Lad Hirawat-Mumbai, Madanlal.S.Sancheti-Hydrabad, Mahendra Kumar jain-Alwar, Malliga Nirmal-Vellore, Mamta Kripalchand Jain-Sawaimadhopur, Neera Bhandari-Beawar, Neeta Singhvi-Jodhpur, Padam Chand Agarwal-Jaipur, Prabha Mukesh Jain-Alwar, Prakash Devi Ranka-Madders, Pramila Prakash Mehta-Ajmer, Priti Jain-Bharatpur, Rajasthan, Priyanka Jain-Jaipur, Pushpa Navlakha-Jaipur, Ranulal kochar-Nasik, Reema Jain-Ludhiana , SajjanDevi Tated-Secundrabad, Sangita Ravindra Chajjed-Chalisgaon, Jalgaon, Seema Ajinder Jain-Ludhiana, Shakuntala Hansraj Bohara-Ichalkaranji, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sunita Jain-Pipar City, Sushila Begani-Bikaner, Tejrajji Mutha-Pipar City, Jodhpur, Usha Lunawat-Ajmer, Vimla Raunlal Kochar-Nasik, Vishal Jain-Gangapur City, Aarti Jain-Hoshiarpur, Punjab, Anita Jain-Jaipur, Beena Mehta-Jodhpur, Chanchal Betala-Rajasthan, Dalpat Raj Jain-Jodhpur, Ghewarchand Chajjed-Bellary, Kavitha Chordia-Chennai, Lalita Ganeshchand Surana-Solapur, Lalita Nemichandji Runwal-Bijapur, Leelabai Prakashchand Munot-Ichalkaranji, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Chordia-Chennai, Monika Desarla -Secundrabad, Neelu Jain-Ludhiana , Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Premkanta Kothari-Jaipur, Renumal Jain-Jodhpur, Sangita Sanjaykumar Mugdiya-Bhusawal, Jalgaon, Shakuntala Bohra- Secundrabad, Suraj Bohra-Jodhpur, Sushila Sumatilal Surana-Nasik, Trupti Pritam Bora-Ichalkaranji, Ugama Doshi-Secundrabad, Yugal.N.Ranka-Ahmedabad, Jaya Mohanlalji Bhandari-Daund, Pune, Meena Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Monali Mishrilal Pipada- Ichalkaranji, Neelam Lunkar-Chennai, Pushpa Devi Munot-Bhatinda, Sangeetha Baid-Chennai, Santosh Jain-Alwar, Shakuntala Kushalchand Khinvarsa-Jalgaon, Anjali Mehta-Delhi, Anju Bhandari-Jodhpur, Shobha Karnawat, Suryakala Bagmar-Chennai, Bharati sunilji surpuriya-Ichalkaranji, Kamala Singhvi-Bhadgaon, Jalgaon, Sarita maanojji Babel-chalkaranji, Shantilal Ostwal-Jodhpur, Tara Bafna-Chennai.

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा **9 जनवरी 2011** को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहें तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क मनीऑर्डर द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 30 मार्च 2011 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
76820	भारती महेन्द्र जी बोहरा	केलशी	99.75	प्रथम
77312	प्रीति निलेश जी बोरा	चालीसगांव	99.75	प्रथम
76674	सरुचि रोहित जी जैन	दिल्ली	99.50	द्वितीय
76917	प्रिया प्रकाशचन्द जी कर्णावट	गंगाखेड़	99.50	द्वितीय
76817	पूनम मनोज जी बोहरा	केलशी	99.25	तृतीय
76930	संगीता प्रेमचन्द जी खिंवसरा	गंगाखेड़	99.25	तृतीय

प्रोत्साहन पुरस्कार 1000/– पाने वाले परीक्षार्थी– 99 से 98.25 अंक प्राप्त करने वाले

76485,76916,76808,76822,78131,76673,71703,76914,77558,76919,77440

सामायिक सार्थ

62845	आरती राजेन्द्र जी मुथा	अमरावती	100	प्रथम
65665	निलिमा सुभाषचन्द जी कोठारी	बेलापुर	100	प्रथम
73713	सुमन शांतिलाल जी ओस्तवाल	गोटन	100	प्रथम
75883	नेहा शांतिलाल जी श्रीश्रीमाल	अजमेर	100	प्रथम
69700	निर्मला यशवन्त जी पामेचा	विक्रोली	99.69	द्वितीय
73169	प्रियंका अभिषेक जी कांकरिया	ठाणे	99.69	द्वितीय
73462	सुमति धर्मचन्द जी भुरावत	किनगांवराजा	99.69	द्वितीय
74048	मीनू शांतिलाल जी श्रीश्रीमाल	ठाणे	99.69	द्वितीय
61486	दिव्या चन्दन जी जैन	जंडियाला गुरु	99.38	तृतीय
69879	सुनीता लक्ष्मीनारायण जी सोमानी	जोधपुर	99.38	तृतीय
71694	मंगला राजेन्द्र कुमार जी बनवट	छनेरा	99.38	तृतीय

73478	जीतल विजय कुमार जी कोठारी	बेलापुर	99.38	तृतीय
75069	सरोज रेखचन्द जी जैन	उधना	99.38	तृतीय
77315	संगीता नेनसुख जी अलीझाड़	चालीसगाँव	99.38	तृतीय

प्रोत्साहन पुरस्कार 1000/- पाने वाले परीक्षार्थी- 99.06 से 98.75 अंक प्राप्त करने वाले

71996, 73460, 61970, 69117, 76944, 72910, 59121, 52056, 73186, 77495

प्रतिक्रमण सार्थ

63502	भारती महेन्द्र जी गांधी	पुणे	99.69	प्रथम
58495	प्रियंका चैनराज जी गोगड़	सौंदत्ती	98.75	द्वितीय
60893	ममता दिलीप जी राखेचा	बुलढाणा	98.13	तृतीय

प्रोत्साहन पुरस्कार 1000/- पाने वाले परीक्षार्थी- 97.50 से 95.31 अंक प्राप्त करने वाले

58773, 58766, 58765, 72860, 65050, 62041, 62702, 55495, 69097, 63501

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

50738, 56116, 56651, 57073, 57268, 57281, 57376, 57395, 57660, 57798, 57893, 58107, 58434, 58738, 58877, 58883, 59006, 59394, 59414, 59712, 59732, 59743, 59929, 60056, 60128, 60129, 60549, 60581, 60966, 60968, 60988, 60998, 61006, 61017, 61175, 61195, 61205, 61333, 61344, 61511, 61882, 61935, 62003, 62024, 62503, 62505, 62538, 63039, 63767, 63770, 63899, 64031, 64170, 64251, 64298, 64352, 64691, 64722, 64724, 64744, 64797, 64918, 65079, 65184, 65320, 65334, 65462, 65864, 65949, 66131, 66161, 66295, 66310, 66346, 66350, 66379, 66461, 66566, 66621, 66634, 66664, 66738, 66773, 66783, 66878, 66962, 66993, 66994, 66996, 67019, 67322, 67539, 67659, 67756, 67805, 67807, 67810, 67854, 67900, 67906, 67911, 67967, 67971, 68008, 68012, 68095, 68133, 68137, 68161, 68166, 68168, 68180, 68353, 68356, 68410, 68451, 68713, 68725, 68726, 68763, 68792, 68892, 68958, 68982, 69029, 69035, 69038, 69045, 69055, 69092, 69396, 69459, 69628, 69649, 69659, 69660, 69676, 69677, 69698, 69837, 69844, 69947, 69975, 60004, 60018, 70020, 70127, 70133, 70169, 70231, 70235, 70237, 70239, 70261, 70264, 70265, 70266, 70446, 70615, 70666, 70717, 70720, 70724, 70950, 71094, 71100, 71110, 71201, 71206, 71226, 71234, 71251, 71297, 71498, 71554, 71584, 71611, 71643, 71644, 71697, 71703, 71753, 71769, 71774, 71860, 72001, 72117, 72187, 72223, 72224, 72232, 72252, 72350, 72488, 72624, 72628, 72632, 72823, 73089, 73121, 73187, 73193, 73235, 73554, 73562, 73568, 73569, 73581, 3582, 73584, 73587, 73593, 73666, 73699, 73807, 73818, 73834, 73835, 73837, 73849, 73930, 73931, 74120, 74243, 74247, 74250, 74272, 74305, 74338, 74343, 74695, 74699, 74707, 74711, 74757, 74764, 74851, 74996, 74997, 74998, 75009, 75012, 75055, 75101, 75132, 75267, 75279, 75293, 5325, 75329, 75330, 75332, 75337, 75338, 75339, 75341, 75342, 75344, 75346, 75349, 75350, 75358, 75362, 75365, 75366, 75370, 75372, 75373, 75380, 75381, 75382, 75383, 75386, 75387, 75389, 75410, 75411, 75413, 75416, 75418, 75421, 75424, 75425, 75427, 75428, 75431, 75439, 75441, 75442, 75443, 75445, 75446, 75447, 75450, 75472, 75482, 75484, 75486, 75489, 75490, 75493, 75500, 75509, 75517, 75519, 75531, 75547, 75551, 75558, 75559, 75560, 75569, 75573, 75577, 75578, 75580, 75581, 75583, 75604, 75608, 75609, 75610, 75611, 75612, 75613, 75614, 75615, 75616, 75617, 75618, 75620, 75630, 75631, 75633, 75643, 75644, 75645, 75650, 75654, 75660, 75666, 75667, 75668, 75673, 75675, 75676, 75679, 75680, 75681, 75685, 75686, 75687, 75689, 75691, 75692, 75693, 75695, 75702, 75703, 75704, 75706, 75707, 75718, 75719, 75721, 75724, 75725, 75734, 75735, 75741, 75742, 75743, 75744, 75745, 75749, 75750, 75751, 75752, 75753, 75756, 75758, 75759, 75761, 75763, 75768, 75771, 75774, 75775, 75785, 75786, 75787, 75790, 75793, 75805, 75806, 75807, 75817, 75818, 75819, 75821, 75822, 75823, 75824, 75836, 75838, 75839, 75840, 75841, 75844, 75847, 75849, 75850, 75853, 75858, 75871, 75872, 75876, 75877, 75879, 75880, 75881, 75882, 75891, 75897, 75901, 75903, 75905, 75906, 75907, 75910, 75911, 75912, 75913, 75914, 75915, 75916, 75917, 75918, 75919, 75922, 75924, 75925, 75926, 75927,

75928, 75929, 75930, 75932, 75935, 75937, 75938, 75939, 75943, 75946, 75948, 75950, 75952, 75958, 75960, 75961, 75962, 75969, 75972, 75973, 75974, 75977, 75978, 75979, 75983, 75984, 75985, 75986, 75992, 75994, 75995, 75998, 76000, 76002, 76003, 76004, 76005, 76007, 76009, 76010, 76011, 76014, 76019, 76020, 76021, 76022, 76023, 76025, 76026, 76036, 76039, 76046, 76054, 76072, 76082, 76089, 76094, 76103, 76115, 76121, 76122, 76123, 76162, 76174, 76176, 76177, 76182, 76186, 76188, 76198, 76199, 76230, 76234, 76235, 76237, 76241, 76242, 76243, 76244, 76251, 76252, 76253, 76266, 76267, 76268, 76269, 76270, 76273, 76275, 76284, 76290, 76299, 76300, 76301, 76302, 76304, 76305, 76309, 76310, 76311, 76312, 76319, 76333, 76337, 76340, 76347, 76348, 76349, 76354, 76385, 76386, 76387, 76388, 76389, 76391, 76393, 76394, 76397, 76399, 76402, 76420, 76421, 76422, 76424, 76427, 76431, 76440, 76441, 76442, 76447, 76448, 76449, 76452, 76454, 76455, 76478, 76483, 76485, 76489, 76495, 76496, 76498, 76499, 76507, 76510, 76512, 76513, 76519, 76524, 76547, 76577, 76586, 76589, 76615, 76617, 76634, 76635, 76636, 76637, 76640, 76641, 76644, 76645, 76648, 76650, 76651, 76652, 76656, 76657, 76659, 76660, 76661, 76668, 76669, 76671, 76673, 76674, 76677, 76678, 76686, 76691, 76694, 76707, 76709, 76712, 76714, 76716, 76718, 76721, 76724, 76725, 76726, 76727, 76728, 76731, 76732, 76733, 76734, 76744, 76745, 76748, 76749, 76753, 76755, 76756, 76757, 76761, 76763, 76777, 76791, 76792, 76806, 76808, 76809, 76811, 76812, 76813, 76817, 76818, 76819, 76820, 76821, 76822, 76823, 76824, 76825, 76826, 76827, 76828, 76829, 76830, 76831, 76832, 76833, 76834, 76835, 76836, 76837, 76838, 76839, 76840, 76841, 76842, 76843, 76844, 76846, 76847, 76849, 76850, 76851, 76854, 76860, 76871, 76872, 76873, 76875, 76876, 76877, 76881, 76885, 76886, 76887, 76888, 76889, 76890, 76891, 76896, 76898, 76899, 76900, 76901, 76902, 76909, 76911, 76912, 76913, 76914, 76915, 76916, 76917, 76919, 76920, 76927, 76930, 76931, 76932, 76933, 76934, 76935, 76936, 76940, 76941, 76942, 76946, 76947, 76948, 76951, 76952, 76953, 76954, 76955, 76956, 76957, 76971, 76973, 76974, 76975, 76976, 76979, 76980, 76982, 76984, 76985, 76986, 76998, 77000, 77005, 77006, 77007, 77008, 77009, 77010, 77011, 77012, 77013, 77015, 77017, 77028, 77029, 77030, 77032, 77033, 77034, 77035, 77036, 77038, 77039, 77044, 77073, 77074, 77077, 77091, 77093, 77094, 77100, 77102, 77106, 77107, 77108, 77109, 77110, 77112, 77113, 77115, 77118, 77120, 77124, 77131, 77136, 77137, 77139, 77140, 77142, 77143, 77146, 77148, 77150, 77151, 77155, 77157, 77158, 77159, 77162, 77163, 77165, 77166, 77168, 77173, 77175, 77176, 77178, 77179, 77180, 77182, 77184, 77185, 77186, 77187, 77189, 77191, 77192, 77194, 77196, 77198, 77200, 77201, 77203, 77204, 77205, 77206, 77207, 77209, 77210, 77211, 77213, 77214, 77216, 77217, 77218, 77219, 77220, 77222, 77224, 77226, 77227, 77228, 77229, 77231, 77233, 77234, 77235, 77236, 77238, 77239, 77240, 77242, 77244, 77246, 77248, 77250, 77252, 77255, 77260, 77266, 77267, 77270, 77271, 77276, 77279, 77285, 77289, 77291, 77293, 77294, 77304, 77305, 77306, 77307, 77308, 77312, 77313, 77319, 77342, 77344, 77350, 77354, 77355, 77356, 77358, 77368, 77369, 77370, 77371, 77372, 77373, 77374, 77376, 77377, 77378, 77379, 77380, 77401, 77411, 77412, 77413, 77417, 77418, 77421, 77423, 77425, 77428, 77429, 77430, 77433, 77434, 77435, 77438, 77440, 77443, 77445, 77446, 77453, 77454, 77459, 77460, 77464, 77480, 77483, 77485, 77487, 77488, 77490, 77498, 77499, 77501, 77506, 77509, 77521, 77530, 77537, 77543, 77547, 77554, 77558, 77559, 77560, 77562, 77563, 77565, 77569, 77570, 77571, 77573, 77594, 77596, 77602, 77607, 77609, 77610, 77611, 77613, 77615, 77617, 77619, 77620, 77621, 77623, 77625, 77626, 77627, 77629, 77630, 77631, 77643, 77652, 77653, 77654, 77655, 77657, 77659, 77661, 77662, 77664, 77666, 77668, 77670, 77674, 77675, 77677, 77680, 77687, 77695, 77705, 77706, 77708, 77718, 77722, 77724, 77726, 77732, 77733, 77734, 77735, 77736, 77737, 77738, 77739, 77740, 77741, 77742, 77745, 77746, 77750, 77751, 77756, 77759, 77771, 77775, 77777, 77779, 77783, 77784, 77790, 77791, 77796, 77797, 77798, 77801, 77802, 77803, 77807, 77811, 77812, 77819, 77820, 77833, 77834, 77835, 77837, 77841, 77843, 77855, 77857, 77859, 77860, 77863, 77864, 77865, 77867, 77869, 77871, 77873, 77880, 77882, 77884, 77885, 77886, 77887, 77891, 77892, 77897, 77900, 77901, 77903, 77905, 77906, 77907, 77909, 77910, 77911, 77914, 77915, 77916, 77922, 77923, 77925, 77927, 77928, 77929, 77930, 77931, 77933, 77938, 77943, 77944, 77947, 77952, 77954, 77955, 77956, 77957, 77959, 77960, 77961, 77967, 77969, 77970, 77972, 77975, 77976, 77977, 77978, 77982, 77983, 77985, 77987, 77990, 77992, 77993, 77994, 77995, 77997,

77999, 78000, 78001, 78002, 78003, 78005, 78011, 78012, 78013, 78014, 78015, 78016, 78017, 78020, 78022, 78024, 78025, 78029, 78030, 78031, 78035, 78036, 78037, 78038, 78041, 78042, 78043, 78044, 78046, 78047, 78049, 78050, 78051, 78052, 78054, 78057, 78058, 78059, 78060, 78061, 78062, 78063, 78064, 78065, 78066, 78067, 78069, 78074, 78075, 78076, 78077, 78079, 78082, 78085, 78087, 78089, 78090, 78092, 78094, 78095, 78097, 78098, 78099, 78105, 78121, 78122, 78123, 78124, 78125, 78126, 78128, 78131, 78132, 78133, 78145, 78147, 78148, 78149, 78150, 78151, 78157, 78158, 78161, 78162, 78166, 78174, 78175, 78176, 78177, 78178, 78181, 78182, 78183, 78188, 78190, 78191, 78192, 78193, 78194, 78195, 78196, 78198, 78200, 78201, 78205, 78210, 78212, 78215, 78220, 78221, 78222, 78223, 78224, 78225, 78227, 78228, 78229, 78230, 78231, 78232, 78233, 78234, 78236, 78237, 78238, 78242, 78244, 78245 (Total Student Pass :1254)

सामायिक सार्थ

49619, 49627, 49799, 49800, 49804, 49805, 49816, 49825, 49887, 49894, 50899, 50901, 50904, 51859, 52049, 52055, 52056, 52057, 52058, 52604, 52653, 53102, 53803, 53983, 54371, 54446, 55378, 55862, 56872, 56981, 56987, 57008, 57011, 57016, 57024, 57065, 57071, 57125, 57228, 57265, 57273, 57275, 57276, 57279, 57283, 57284, 57287, 57288, 57289, 57290, 57320, 57381, 57405, 57478, 57484, 57488, 57525, 57527, 57665, 57698, 57700, 57731, 57836, 57845, 57868, 57901, 57905, 58032, 58302, 58384, 58397, 58438, 58439, 58440, 58523, 58621, 58721, 58754,58763, 58768, 58775, 58776, 58794, 58796, 58835, 58929, 58942, 58949, 59019, 59054, 59098, 59112, 59121, 59281, 59291, 59490, 59576, 59642, 59737, 59744, 59835, 59870, 59876, 59903, 59910, 59924, 59975, 59979, 60249, 60329, 60502, 60503, 60504, 60505, 60507, 60510, 60517, 60519, 60521, 60583, 60851, 60853, 60858, 60870, 60898, 60899, 60903, 60904, 60907, 60908, 60942, 60945, 60956, 60958, 61009, 61010, 61013, 61100, 61147, 61151, 61159, 61161, 61172, 61229, 61240, 61303, 61341, 61346, 61486, 61489, 61491, 61492, 61495, 61500, 61523, 61551, 61553, 61558, 61567, 61570, 61584, 61586, 61598, 61620, 61763, 61907, 61940, 61960, 61969, 61970, 62099, 62131, 62152, 62543, 62587, 62704, 62727, 62749, 62839, 62845, 62846, 62847, 62905, 62986, 63068, 63106, 63114, 63200, 63213, 63216, 63219, 63225, 63348, 63411, 63468, 63475, 63476, 63645, 63764, 63772, 63779, 63782, 63864, 63866, 63982, 63985, 64000, 64048, 64051, 64086, 64153, 64157, 64195, 64338, 64348, 64492, 64496, 64561, 64562, 64567, 64576, 64602, 64610, 64645, 64649, 64664, 64677, 64782, 64844, 64846, 65031, 65056, 65083, 65138, 65154, 65157, 65185, 65186, 65190, 65195, 65199, 65208, 65269, 65473, 65480, 65549, 65609, 65623, 65665, 65732, 65770, 65796, 65807, 65830, 65842, 65853 ,65859, 65973, 65975, 65998, 66114, 66115, 66133, 66134, 66146, 66163, 66167, 66169, 66170, 66174, 66304, 66312, 66316, 66317, 66321, 66335, 66336, 66338, 66339, 66340, 66342, 66353, 66357, 66358, 66359, 66361, 66363, 66383, 66386, 66389, 66404, 66466, 66480, 66515, 66523, 66546, 66547, 66548, 66549, 66632, 66666, 66694, 66707, 66808, 66872, 66905, 66907, 66928, 66940, 66947, 67012, 67050, 67072, 67152, 67160, 67162, 67165, 67261, 67306, 67308, 67318, 67323, 67367, 67369, 67376, 67433, 67453, 67471, 67591, 67619, 67661, 67669, 67673, 67674, 67686, 67688, 67740, 67765, 67772, 67773, 67775, 67789, 67794, 67799, 67811, 67814, 67829, 67851, 67866, 67873, 67874, 67875, 67876, 67877, 67881, 67882, 67885, 67909, 67910, 67912, 67913, 67972, 67974, 67985, 67986, 67997, 68009, 68013, 68029, 68030, 68036, 68042, 68074, 68084, 68087, 68088, 68094, 68171, 68190, 68199, 68202, 68203, 68204, 68215, 68219, 68221, 68223, 68224, 68226, 68228, 68231, 68234, 68235, 68239, 68240, 68241, 68242, 68248, 68255, 68287, 68321, 68322, 68348, 68365, 68372, 8387, 68389, 68405, 68407, 68433, 68439, 68480, 68494, 68620, 68623, 68667, 68702, 68722, 68737, 68739, 68741, 68770, 68772, 68774, 68794, 68795, 68801, 68809, 68826, 68851, 68898, 68927, 68930, 68940, 68965, 68967, 68988, 68990, 69004, 69018, 69020, 69022, 69024, 69052, 69116, 69117, 69147, 69155, 69179, 69186, 69187, 69205, 69209, 69220, 69228, 69233, 69239, 69244, 69286, 69287, 69288, 69382, 69384, 69385, 69416, 69426, 69429, 69431, 69447, 69485, 69497, 69521, 69587, 69615, 69616, 69645, 69648, 69651 69656, 69675, 69697, 69700, 69710, 69775, 69776, 69832, 69836, 69838, 69843, 69846, 69864, 69865, 69868, 69870, 69871, 69879, 69902, 69913, 69916, 69919, 69934, 69956, 69965, 69984, 70007, 70009, 70086, 70124, 70142, 70147, 70151, 70158, 70160, 70162, 70168, 70201, 70208, 70209, 70244, 70315, 70316, 70319, 70417, 70421, 70448, 70454, 70525, 70569,

70669, 70670, 70673, 70674, 70675, 70677, 70697, 70872, 70879, 70894, 70955, 71016, 71017, 71018, 71019, 71108, 71138, 71143, 71147, 71150, 71170, 71177, 71302, 71310, 71315, 71319, 71328, 71423, 71455, 71456, 71458, 71459, 71461, 71491, 71492, 71504, 71505, 71516, 71517, 71519, 71521, 71523, 71525, 71526, 71527, 71531, 71561, 71566, 71573, 71576, 71579, 71581, 71583, 71609, 71612, 71632, 71633, 71641, 71645, 71649, 71650, 71687, 71688, 71689, 71693, 71694, 71698, 71702, 71710, 71717, 71722, 71742, 71771, 71861, 71911, 71933, 71995, 71996, 72052, 72121, 72130, 72139, 72145, 72148, 72152, 72153, 72189, 72204, 72214, 72228, 72230, 72251, 72300, 72462, 72463, 72465, 72466, 72467, 72468, 72469, 72470, 72472, 72474, 72519, 72520, 72521, 72523, 72584, 72588, 72599, 72619, 72626, 72627, 72641, 72642, 72711, 72744, 72747, 72748, 72790, 72829, 72832, 72837, 72849, 72855, 72856, 72863, 72867, 72871, 2872, 72890, 72910, 72911, 72913, 72986, 72987, 72989, 72990, 72996, 73018, 73019, 73027, 73031, 73038, 73141, 73154, 73155, 73168, 73169, 73182, 73184, 73186, 73192, 73204, 73270, 73283, 73284, 73302, 73306, 73334, 73358, 73359, 73368, 73371, 73372, 73373, 73399, 73408, 73430, 73433, 73452, 73454, 73460, 73462, 73475, 73478, 73493, 73496, 73550, 73556, 73560, 73588, 73607, 73639, 73641, 73644, 73648, 73652, 73656, 73672, 73698, 73708, 73712, 73713, 73715, 73716, 73728, 73736, 73741, 73811, 73812, 73815, 73821, 73841, 73847, 73860, 73897, 73910, 73915, 73927, 73948, 73950, 73953, 73954, 74020, 74045, 74046, 74048, 74063, 74083, 74086, 74122, 74132, 74182, 74271, 74309, 74413, 74428, 74503, 74504, 74510, 74536, 74538, 74541, 74542, 74545, 74592, 74614, 74669, 74674, 74689, 74690, 74727, 74771, 74781, 74783, 74785, 74786, 74788, 74789, 74795, 74814, 74833, 74834, 74861, 74871, 74898, 74899, 74928, 74938, 74939, 74940, 74941, 74948, 74969, 74991, 74995, 75019, 75027, 75028, 75029, 75049, 75057, 75064, 75069, 75072, 75111, 75126, 75134, 75144, 75147, 75154, 75155, 75184, 75202, 75232, 75237, 75238, 75240, 75261, 75270, 75292, 75393, 75451, 75455, 75456, 75458, 75465, 75479, 75508, 75622, 75623, 75625, 75626, 75627, 75628, 75629, 75637, 75649, 75663, 75729, 75738, 75765, 75773, 75810, 75812, 75813, 75827, 75828, 75854, 75855, 75883, 75944, 75964, 75982, 76048, 76109, 76129, 76207, 76208, 76216, 76225, 76255, 76257, 76286, 76287, 76314, 76315, 76316, 76317, 76371, 76380, 76405, 76444, 76476, 76487, 76488, 76516, 76533, 76535, 76537, 76539, 76541, 76575, 76576, 76590, 76632, 76675, 76681, 76702, 76736, 76738, 76739, 76741, 76747, 76751, 76814, 76943, 76944, 76958, 76959, 76960, 76961, 77020, 77023, 77041, 77059, 77082, 77104, 77172, 77174, 77181, 77183, 77193, 77262, 77264, 77292, 77295, 77296, 77311, 77315, 77324, 77325, 77326, 77327, 77328, 77329, 77334, 77336, 77363, 77388, 77389, 77394, 77396, 77399, 77400, 77457, 77458, 77461, 77463, 77472, 77473, 77474, 77494, 77495, 77503, 77505, 77515, 77523, 77524, 77525, 77528, 77539, 77541, 77584, 77587, 77589, 77590, 77591, 77593, 77612, 77701, 77704, 77709, 77714, 77715, 77729, 77766, 77767, 77778, 77806, 77825, 77845, 77850, 77868, 78008, 78010, 78019, 78021, 78032, 78034, 78039, 78045, 78056, 78070, 78071, 78072, 78101, 78134, 78135, 78136, 78137, 78152, 78153, 78170, 78179, 78209, 78241, 78243, (Total Student Pass : 997)

प्रतिक्रमण सार्थ

49823, 49866, 52085, 52593, 52594, 52680, 52781, 53998, 54048, 54062, 54264, 54972, 55330, 55495, 55932, 57026, 57028, 57036, 57048, 57053, 57057, 57059, 57080, 57100, 57116, 57127, 57129, 57207, 57211, 57385, 57526, 57558, 57599, 57717, 57741, 57796, 57808, 57812, 57902, 58027, 58331, 58339, 58373, 58374, 58377, 58380, 58401, 58495, 58529, 58546, 58557, 58560, 58594, 58599, 58616, 58624, 58726, 58765, 58766, 58771, 58773, 58815, 58962, 59064, 59249, 59326, 59421, 59423, 59425, 59445, 59578, 59607, 59669, 59670, 59702, 59754, 59763, 59768, 59773, 59886, 59891, 60029, 60065, 60066, 60236, 60332, 60365, 60367, 60377, 60406, 60530, 60622, 60628, 60630, 60631, 60632, 60699, 60813, 60815, 60825, 60827, 60833, 60839, 60847, 60848, 60850, 60891, 60892, 60893, 60894, 60895, 60957, 60961, 60962, 60974, 61055, 61056, 61102, 61153, 61162, 61165, 61327, 61353, 61419, 61539, 61541, 61555, 61588, 61610, 61726, 61772, 61830, 61921, 61942, 61946, 61954, 61974, 61980, 61981, 61984, 61985, 62019, 62027, 62030, 62031, 62032, 62038, 62039, 62040, 62041, 62042, 62058, 62074, 62077, 62078, 62155, 62158, 62486, 62517, 62523, 62678, 62679, 62698, 62701, 62702, 62714, 62775, 62783, 62785, 62849, 62851, 62852, 62864, 62873, 62874, 62877, 62935, 62936, 62937, 62973,

62977, 62978, 62979, 63204, 63279, 63347, 63361, 63406, 63408, 63409, 63413, 63472, 63473, 63484, 63485, 63501, 63502, 63503, 63504, 63506, 63659, 63660, 63674, 63821, 63830, 63875, 63976, 64140, 64141, 64146, 64185, 64187, 64202, 64369, 64388, 64395, 64397, 64409, 64489, 64500, 64502, 64505, 64509, 64513, 64514, 64515, 64518, 64522, 64541, 64546, 64550, 64589, 64628, 64631, 64656, 64657, 64662, 64665, 64755, 64766, 64794, 64970, 65044, 65050, 65073, 65099, 65103, 65159, 65246, 65267, 65296, 65330, 65337, 65383, 65398, 65420, 65481, 65484, 65486, 65489, 65490, 65493, 65495, 65497, 65501, 65539, 65541, 65544, 65610, 65614, 65724, 65771, 65852, 65875, 66013, 66029, 66037, 66116, 66118, 66119, 66120, 66121, 66135, 66347, 66387, 66411, 66448, 66449, 66528, 66545, 66552, 66712, 66765, 66786, 66796, 66821, 66967, 67314, 67337, 67338, 67339, 67374, 67459, 67677, 67817, 67860, 68229, 68230, 68232, 68233, 68236, 68237, 68238, 68318, 68378, 68625, 68764, 68799, 68806, 68853, 68858, 68863, 68904, 68921, 69005, 69097, 69119, 69144, 69152, 69168, 69182, 69183, 69185, 69370, 69544, 69578, 69711, 69772, 69773, 69798, 69885, 70040, 70067, 70103, 70217, 70243, 70364, 70667, 70678, 71176, 71252, 71331, 71424, 71551, 71723, 72035, 72109, 72407, 72441, 72492, 72786, 72787, 72788, 72816, 72860, 72893, 73267, 73465, 73466, 73469, 73474, 73477, 73661, 73691, 73692, 73717, 73718, 73879, 73955, 74483, 74492, 74494, 74495, 74546, 74548, 74549, 74550, 74551, 74552, 74553, 74555, 74706, 74709, 74710, 74754, 74790, 74791, 74794, 74799, 74810, 74885, 74942, 74977, 75040, 75096, 75457, 75506, 75512, 75513, 75514, 75520, 75710, 75716, 75815, 75816, 75842, 75966, 75967, 76142, 76144, 76150, 76151, 76152, 76153, 76156, 76157, 76179, 76228, 76239, 76272, 76289, 76292, 76293, 76295, 76320, 76326, 76327, 76413, 76414, 76415, 76416, 76417, 76418, 76436, 76446, 76470, 76494, 76672, 76693, 76704, 76752, 76815, 76862, 76864, 76866, 76867, 76868, 76869, 76892, 76992, 76993, 76996, 77001, 77002, 77004, 77016, 77027, 77086, 77092, 77105, 77199, 77212, 77316, 77317, 77318, 77320, 77330, 77361, 77365, 77375, 77387, 77391, 77393, 77397, 77405, 77424, 77502, 77504, 77534, 77542, 77544, 77574, 77578, 77580, 77581, 77582, 77583, 77585, 77588, 77606, 77628, 77780, 77781, 77782, 77785, 77824, 77848, 77849, 77932, 77934, 77935, 77989, 78018, 78040, 78073, 78103, 78127, 78156, 78163, 78172, 78197, 78239, 78240, 78246 (Total Student Pass :524)

परिणाम रोका गया : केन्द्र कोड : 143 (पचाला)

53986, 53993, 57766, 57775, 57779, 57780, 57783, 58017, 58018, 59189, 59411, 60536, 61157, 61204, 61349, 61373, 61607, 61655, 62156, 62453, 62524, 62529, 62567, 63069, 63761, 63902, 63988, 64002, 64013, 64023, 64065, 64090, 64101, 64108, 64506, 64562, 64567, 64677, 64719, 64731, 64742, 64962, 64964, 65554, 65558, 65672, 65925, 66031, 66081, 66429, 66615, 66927, 66948, 66960, 66998, 66999, 67002, 67984, 68178, 68248, 69011, 69030, 69047, 69679, 69692, 70238, 70375, 70642, 71729, 71765, 71856, 72222, 73198, 73567, 73597, 73599, 73655, 73926, 74095, 74468, 74761, 75097, 75121, 75125, 75187, 75193, 75194, 75893, 77438, 77564,

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
7259	4536	2775	61.17%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 31 जुलाई 2011 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 31 जुलाई 2011, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें - कार्यालय (फोन) 0291-2630490 www.jainratnaboard.com, email : info@jainratnaboard.com

सुशीला बोहरा	राजेश कर्नावट	धर्मचन्द जैन
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

किम् पुण्यम् - आचार्य विजयराज जी, ***प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थल***- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्त क्रान्ति जैन श्रावक संघ, 279-एच, महावीर भवन के पास, हिरणमगरी सेक्टर-3, उदयपुर-313002, (2) 17 शिवगंगा मार्केट, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.), ***पृष्ठ*** - 272, ***मूल्य*** 50 रुपये, ***सन्*** - 2010

भारतीय परम्परा में पाप-पुण्य शब्द मानव के आचरणयोग्य सत्कर्मों एवं त्याज्य दुष्कर्मों का विभाजन करते हैं। जैन दर्शन में इन्हें तत्त्व कहा गया है तथा पुण्य को शुभ एवं पाप को अशुभ स्वीकार किया गया है। आत्मभावों की शुभता पुण्य है एवं अशुभता की ओर गमन पाप है। आचार्य विजयराज जी महाराज की प्रस्तुत पुस्तक 'किं पुण्यम्' के प्रथम अध्याय में पुण्य के स्वरूप का सामान्य प्रतिपादन करते हुए उसकी उपादेयता सिद्ध की गई है। शेष नौ अध्यायों में क्रमशः अन्न पुण्य, पान पुण्य, लयन पुण्य, शयन पुण्य, वस्त्र पुण्य, मन पुण्य, वचन पुण्य, काय पुण्य एवं नमस्कार पुण्य का विवेचन है। पुस्तक में पुण्य की इन नौ क्रियाओं की उपादेयता प्रतिपादित की गई है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में उस पुण्य से सम्बद्ध भजन की रचना की गई है जो पाठक को उस पुण्य की ओर प्रेरित करती है। यह पुस्तक सैद्धान्तिक विवेचना में पाठक को नहीं उलझाती है, अपितु उसे सरल रीति से दृष्टान्तों एवं उदाहरणों के माध्यम से सत्कर्म में प्रवृत्त करती है।

Prakrit Primer- Prof. Prem Suman Jain, **Publisher-** (1) National Institute of Prakrit Studies and Research, Shravanbelagola (Karnataka) (2) Rashtriya Sanskrit sansthan, New Delhi, **Pages** 8+88 **Price-**Rs. 120, **Revised edition-** 2010.

Prakrit is significant Language of ancient India. Jaina Canonical and other folk literature is available in prakrit language, which is an asset for study of Indian Culture and human behaviour. Eminemt Scholar Prof. Prem Suman Jain has given a brief introduction about prakrit language, its literature, stories, cultural Significance and some prominent writers.

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 मार्च, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	मेड़ता सिटी में धर्मप्रभावना कर चावण्डिया, रीयां बड़ी, पीसांगन, नागेलाव होते हुए 24 फरवरी को ब्यावर पधारे हैं। 12 मार्च दीक्षा-प्रसंग के पश्चात् विहार की सम्भावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	पीपाड़ शहर से विहार कर पिचियाक, बिलाड़ा, जैतारण, निमाज, बर में धर्म प्रभावना करते हुए ब्यावर पधार गए हैं।
सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	पीपाड़ शहर से विहार कर बिलाड़ा, जैतारण, निमाज में धर्म प्रभावना करते हुए सैन्धड़ा पधार गए हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	:	सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	मसूदा से विहार कर नानपुरा, कासीट, खरवा, पिपलाज होते हुए 14 फरवरी को ब्यावर पधारे हैं।
तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	जोधपुर से विहार कर कापरडा, भावी, बिलाड़ा, जैतारण होते हुए 28 फरवरी को निमाज पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	मध्यप्रदेश के करेली से विहार कर कल्याणपुर होते हुए 25 फरवरी को बरांज पधारे हैं। भोपाल की ओर विहार चल रहा है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	पाली से विहार कर सोजत सिटी, पीपलिया, रायपुर, बर होते हुए 25 फरवरी को ब्यावर पधारे हैं।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	: जयपुर से विहार कर दूदू, परासोली, पाटण, मदनगंज होते हुए 27 फरवरी को मदारगेट, अजमेर पधारे हैं। ब्यावर की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: मेड़ता सिटी से विहार कर जसनगर, रास, बावरा होते हुए 19 फरवरी को ब्यावर पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	: मेड़ता सिटी से विहार कर रीयां बड़ी, नागेलाव, पीसांगन होते हुए 24 फरवरी को ब्यावर पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	: गुडियातम से विहार कर तमिलनाडू के वेलुर, सत्वाचेरी, रतनगिरी, आरकाट होते हुए 24 फरवरी को वालाजापेठ पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा	: गुडियातम से विहार कर वेलुर, पोलुर, केकली होते हुए 24 फरवरी को तिरुवन्नामल्लै पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	: उज्जैन के विभिन्न उपनगरों को फरस रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: जयपुर के उपनगर झोटवाड़ा में विराजमान हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: जलगाँव में धर्मप्रभावना करते हुए विभिन्न उपनगरों को फरस रहे हैं।

अध्यात्म-चेतना वर्ष में त्याग-तप के प्रति उत्साह बना रहा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं ने आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष में पूरे वर्ष पर्यन्त त्याग-तप, साधना-आराधना एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति गांव-गांव, नगर-नगर और महानगरों में स्वप्रेरित भावना से बढ़-चढ़ कर भाग लिया, परिणाम स्वरूप हजारों

की संख्या में आबाल-वृद्ध सबने गुरु हस्ती के प्रति व्रत-नियम ग्रहण कर कृतज्ञता ज्ञापित करने में कोई कसर नहीं रखी। क्षेत्रों से सम्पर्क करने के पश्चात् भी वांछित आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सके फिर भी मोटे रूप में हमें जो तथ्य प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार वर्ष पर्यन्त घर-घर में सामायिक, स्वाध्याय, प्रार्थना के कार्यक्रम चले तथा उपवास-पौषध, दया-संवर, आयंबिल-एकासन जैसी अनेकानेक तपश्चर्याएं सम्पन्न हुईं। वर्ष पर्यन्त गतिमान व्रत-प्रत्याख्यानों में समापन के एक माह पूर्व एवं तदनन्तर दस दिन पूर्व तक प्रत्याख्यानों के प्रपत्र संघ सदस्यों एवं व्रतानुरागी महानुभावों को भेजे गये जिसकी क्रियान्विति तो और भी प्रभावी रही। व्रतों के मासखमण में हजारों भाई-बहिनों ने भाग लिया वहीं दस दिन के प्रत्याख्यानों में भी सैकड़ों फार्म भर कर आए।

संघ ने शताब्दी वर्ष में व्रती श्रावक बनाने, शीलव्रत के खंद कराने, एकान्तर तप-साधना तथा 16,17 एवं 18 जनवरी को सामूहिक तेले की योजना बनाई, जिसकी सम्पूर्ति में हर क्षेत्र, वर्ग, समुदाय से सहयोग मिला। परिणामस्वरूप 500-600 शीलव्रत के खंद हुए, 200 से अधिक व्रती श्रावक बने, करीब 150 एकान्तर तपश्चर्याएं सम्पन्न हुईं और एक हजार से अधिक सामूहिक तेलों की आराधना हुई।

प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करने के अलावा साप्ताहिक सामायिक-साधना के बड़ी संख्या में प्रत्याख्यान हुए। सामायिक, स्वाध्याय, साधना और सेवा के प्रकल्पों में प्रत्येक ग्राम-नगर में जन-जन ने उत्साह से भाग लिया।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष में संगठन को सक्रिय-सक्षम बनाने के साथ संघ में रचनात्मक कार्यों का उत्साह रहा। शताब्दी वर्ष का शुभारंभ पालनपुर में आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में हुआ वहीं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से पाली में व्रत-प्रत्याख्यानों का शुभारम्भ हुआ। रत्नसंघीय महासती-मण्डलों के पावन सान्निध्य में भी व्रत-नियमों का वर्ष पर्यन्त आयोजन चलता रहा। रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के अलावा भी अनेक संत-सतीवृन्द ने और यहाँ तक कि अहिंसा-सत्य-सदाचार में विश्वास रखने वाले जैनेतर जन समुदाय ने भी शताब्दी वर्ष में अपना अर्घ्य अर्पण किया।

आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी समिति के संयोजक, सह-संयोजक, सचिव, सह सचिव सभी स्नेहियों, पदाधिकारियों ने कार्यक्रमों की क्रियान्विति में

सबका सहयोग लेकर वर्ष पर्यन्त त्याग-तप की प्रभावना की, वह प्रेरणादायी कही जा सकती है। स्थानीय स्तर पर श्री संघों ने व श्रद्धालुओं ने गुरु हस्ती के गुणस्मरण, गुणकीर्तन तो किए ही, गुण-ग्रहण का भाव भी बनाए रखा। आडम्बर विहीन अध्यात्म चेतना-वर्ष में जन-जन की भागीदारी रही। जोधपुर जैसे कई नगरों-महानगरों में समापन पर अलग-अलग कार्यक्रम बनाए गए जिनमें सकल जैन समाज की भागीदारी रही।

स्थान-स्थान पर अध्यात्म-चेतना रैलियां निकाली गई, सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर, गो-सेवा, प्राणिमात्र के प्रति दया भावना से वर्ष पर्यन्त कार्यक्रम तो चले ही, नए कार्यक्रमों का शुभारंभ भी हुआ। हैदराबाद, बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई आदि महानगरों में भी अध्यात्म चेतना-वर्ष में विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

-जगदीशमल कुम्भट, महासचिव, आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी समिति

हैदराबाद में शताब्दी सम्पन्नता कार्यक्रम आयोजित

आचार्य हस्ती सेवा सम्मान श्री मित्तल को

जैनाचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति (आ.प्र.) के तत्त्वावधान में 'आचार्य हस्ती सेवा सम्मान 2011' कलाविद् साहित्य मनीषी पद्मश्री जगदीश जी मित्तल को प्रदान किया गया एवं शताब्दी समापन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

जयपुर से पधारे सुनहरा राजस्थान के सम्पादक साहित्य मनीषी अनिल लोढ़ा ने कहा कि जैन इतिहास में आचार्य हस्ती के सुकार्यों एवं संयम-साधना को सदियों तक याद किया जायेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ सांसद नंदी एल्लाया, अनिल लोढ़ा, डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने अवार्ड प्रदान किए। सभाध्यक्ष स्वतंत्र वार्ता के सम्पादक ने आचार्य हस्ती द्वारा लिखित साहित्य एवं प्रवचनमाला को आम आदमी के लिए बहूपयोगी, पठनीय, स्मरणीय एवं संग्रह करने योग्य बताया है।

आचार्य हस्ती सेवा सम्मान 2011 के पुरस्कार ग्रहीता पद्मश्री जगदीश मित्तल ने जैन दर्शन को जीवन जीने की कला बताया। नगर के विभिन्न बुद्धिजीवियों, विद्वानों एवं कवियों को "आध्यात्मिक आलोक" ग्रन्थ भेंटकर सम्मान किया गया।

-श्रीपाल देशलहरा

12 मार्च को ब्यावर में दो दीक्षाएँ

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की मंगल मनीषा से समस्त मुनिपुंगवों एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की नेश्रायवर्तिनी सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., तत्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, शनिवार, 12 मार्च 2011 को ब्यावर में मुमुक्षु श्री आशीष जैन एवं मुमुक्षु श्री पूनम जी जैन की भागवती दीक्षा सम्पन्न हो रही है। हरसाना जिला अलवर निवासी मुमुक्षु आशीष जी जैन का जन्म 28 अगस्त, 1982 को मौलोनी, जिला-अलवर (राज.) में पिताश्री शिवदयाल जी के घर में श्रीमती मगनदेवी जी की कुक्षि से हुआ। एम.ए. पूर्वार्द्ध उत्तीर्ण मुमुक्षु ने लगभग 6 वर्षों तक विरक्त रहकर दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, सुखविपाकसूत्र, पुच्छिसुणं एवं आवश्यक सूत्र कण्ठस्थ किया। अनेक आगमों की वाचना ली। अनेक थोकड़े एवं स्तोत्र कण्ठस्थ किए तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 6 कक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। 6 जून 1990 को बौंल जिला-करौली (राज.) में जन्मी एवं जयपुर निवासी मुमुक्षु सुश्री पूनम जैन के दादा श्री कपूरचन्द जी, पिता श्री नरेशचन्द्र जी एवं माता श्रीमती मायाजी एवं सम्पूर्ण परिवार धर्मनिष्ठ है। इन्हें सुखविपाक सूत्र, दशवैकालिक सूत्र के 5 अध्ययन, उत्तराध्ययन के 1 से 10 तथा 11,16,17,21,27,31 वां अध्ययन एवं सूत्रकृतांग का छठा अध्ययन कण्ठस्थ है। अनेक स्तोक एवं स्तोत्र भी कण्ठस्थ हैं। ये 4 वर्ष वैराग्यावधि में रही हैं तथा सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण हैं।

दोनों मुमुक्षुओं को दीक्षा पाठ 12 मार्च को प्रातः 9.30 बजे प्रदान किया जाएगा। अभिनिष्क्रमण यात्रा इसी दिन प्रातः आठ बजे प्रारम्भ होगी। वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का अभिनन्दन 11 मार्च 2011 को मध्याह्न 1 बजे जवाहर भवन, विनोदनगर, ब्यावर में किया जाएगा। अभिनन्दन समारोह के अतिथि इस प्रकार हैं- **अध्यक्षता**-माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, अध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, **मुख्य अतिथि**- माननीय श्री बी.पी. जैन, I.R.S. आयकर आयुक्त, जोधपुर, **विशिष्ट अतिथि**- माननीय श्री महेन्द्रकुमार जी सिंघी, कार्यकारी निदेशक, श्री सीमेन्ट लि., ब्यावर, माननीय श्री पारसमल जी

रांका, प्रमुख समाजसेवी , अजमेर। सम्पर्क सूत्र- हस्तीमल जी गोलेच्छा-9460308388

अक्षय तृतीया की स्वीकृति जोधपुर संघ को

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 24 जनवरी 2011 को कोसाणा में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर (06 मई, 2011) साधु मर्यादा के आगारों सहित जोधपुर विराजने की स्वीकृति फरमाई है। तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर आप गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर तपस्वी साधकों की तप-साधना की अनुमोदना कर कर्म-निर्जरा का लाभ लें। तपस्वी साधक अपने पहुँचने की सूचना सरस्वती नगर, जोधपुर को निम्नानुसार दें। अखिल भारतीत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), 0291-2636763, 2641445, **सम्पर्क सूत्र सरस्वती नगर**- श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता-0291-2722136, 2742138, श्री पारसमल जी ओस्तवाल- 0291-2721391, 094141-98815

दक्षिण भारत में शीतकालीन शिविर सम्पन्न

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 25 से 30 दिसम्बर 2010 तक देश के दक्षिणी क्षेत्रों में बालक-बालिकाओं के धार्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु चेन्नई, चिदम्बरम्, मायावरम्, तिरूवनमलाई, बैंगलोर आदि स्थानों पर शिविर आयोजित हुए, जिनमें लगभग 1500 बालक-बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर ज्ञानार्जन किया है।

चेन्नई के छह स्थानों यथा एम सी रोड़, ताम्बरम, कालाडीपेठ, आवड़ी, साहूकार पेठ व वड़पल्लनी में आयोजित शिविर में 1150 बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। शाखाप्रमुख युवारत्न श्री सुरेश चोरडिया एवं इनकी पूरी टीम का प्रशंसनीय सहयोग शिविर दौरान प्राप्त हुआ। चिदम्बरम में एस.एस. जैन ट्रस्ट व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी कोठारी सहित पूरे जैन समाज का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ, यहाँ 100 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इसी प्रकार मायावरम् में सभी सम्प्रदाय के उल्लेखनीय सहयोग से 100 शिविरार्थियों ने भाग लिया। यहाँ विशेष रूप से कैलाश जी बरमेचा व एस.एस. जैन संघ का सहयोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार का शिविर बैंगलोर में भी सम्पन्न हुआ।

शिविर के कुशल संचालन में युवारत्न श्री राजेन्द्र जी लूंकड़-संयोजक, धार्मिक शिक्षण व शिविर समिति की पूरी टीम का विशेष सहयोग तो परिषद् को

प्राप्त हुआ ही स्थानीय शिविर संयोजकों, क्षेत्रीय शिविर संयोजकों, स्थानीय श्रावक संघ के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं एवं युवारत्नों का विशेष सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा युवक परिषद्, जलगाँव शाखा के सहयोग से जलगाँव के दस क्षेत्रों में आठ दिवसीय शीतकालीन शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों के सफल संचालन में स्थानीय जलगाँव श्री संघ एवं युवक परिषद् के सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ। सुशील बहूमंडल जलगाँव द्वारा अध्यापन का कार्य किया गया। इन स्थानों पर आयोजित शिविरों में लगभग 1500 बालक-बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर ज्ञानार्जन किया है। आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष में युवक परिषद् की यह एक विशेष उपलब्धि है।

बैंगलोर में जैन संस्कार-दीक्षा का आयोजन

अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत रत्नसंघ की व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 के सान्निध्य में 25 दिसम्बर 2010 को लुणावत जैन स्थानक भवन, शान्तिनगर, बैंगलोर में 'जैन संस्कार दीक्षा' का आयोजन किया गया। इसका लक्ष्य था- 1. नयी पीढ़ी में जैनत्व के संस्कारों की दृढ़ता, 2. जीवन में नमस्कार मंत्र की प्रतिष्ठा तथा 3. जीवन विनाशक सप्त कुव्यसनों से बचाव। जैन संस्कार दीक्षा के अन्तर्गत 8 वर्ष से 30 वर्ष के बालक-बालिकाओं एवं युवक-युवतियों को निम्नाङ्कित नियम कराए गए। -

1. मैं जीवन पर्यन्त श्रद्धापूर्वक जैन धर्म का/ की ही अनुयायी रहूँगा/ रहूँगी।
2. श्री अरिहन्त और सिद्ध देव के शासन का /की जीवन पर्यन्त सदैव सैनिक बना रहूँगा/बनी रहूँगी।
3. पंच महाव्रतधारी साधु मेरे गुरु हैं, मैं उनकी सेवा-भक्ति करूँगा/करूँगी।
4. मैं प्रतिदिन 21 नवकार मंत्र का स्मरण करूँगा/करूँगी।
5. मैं जीवन पर्यन्त माँस का सेवन नहीं करूँगा/करूँगी।
6. मैं जीवन पर्यन्त शराब का सेवन नहीं करूँगा/करूँगी।
7. मैं जीवन पर्यन्त वेश्यागमन नहीं करूँगा/करूँगी।
8. मैं पर स्त्री गमन/पर पुरुष गमन नहीं करूँगा/करूँगी।
9. मैं उपयोग सहित जीवन पर्यन्त मोटी चोरी नहीं करूँगा/करूँगी।
10. मैं जीवन पर्यन्त किसी प्रकार के निरपराध जीव की हिंसा नहीं करूँगा/करूँगी।

11. मैं जीवन पर्यन्त भ्रूण हत्या एवं इसमें सहयोगी नहीं बनूँगा/बनूँगी।
12. मैं जीवन पर्यन्त शर्त लगाकर किसी प्रकार का खेल (जुआ) नहीं खेलूँगा/खेलूँगी।
13. जीवन में किसी प्रकार का दुःख आने पर आत्महत्या नहीं करूँगा/करूँगी।
14. मैं जीवन पर्यन्त गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, जर्दा आदि वस्तुओं का उपयोग नहीं करूँगा/करूँगी।
15. मैं अंडा-मिश्रित वस्तुओं (Red Mark) का उपयोग नहीं करूँगा/करूँगी।
16. मैं जीवन में अंतर्जातीय विवाह नहीं करूँगा/करूँगी।
17. मैं अपने जीवन में ऐसा कोई भी कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे मेरे माता-पिता का सिर झुके। *-अनुपमा मरलेचा, श्राविका मण्डल, बैंगलोर*

करेली में धर्माराधना का ठाटं

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में पौषशुक्ला 14 दिनाँङ्क 18 जनवरी 2011 को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महराज की जन्मशताब्दी पर 12 घण्टे का अखण्ड जाप रखा गया तथा गुणानुवाद सभा में गुरुदेव के गुणों का स्मरण किया गया। करेली संघ मूलतः मन्दिरमार्गी है, किन्तु एकता की दृष्टि से अग्रणी है। जन्म-दिवस पर चांगोटोला, जबलपुर, भोपाल, नरसिंगपुर, राजनांदगांव, दुर्ग, गाडरवारा, पिपरीया, बडवानी, लामता आदि निकटवर्ती श्री संघों ने प्रार्थना, व्याख्यान एवं तप-त्याग का लाभ लिया तथा अपनी-अपनी भावनाएँ व्यक्त की। 16 से 18 जनवरी तक उपवास एवं एकाशन के 60 तेले की तपस्याएँ हुईं। पाँच आजीवन शीलव्रत हुए- 1. श्री ताराचन्द जी बसंती बहन शाह-करेली, 2. आशा बहन (45 वर्ष)-करेली, 3. ललित भाई, कामना बहन सुराना-नरसिंगपुर, 4. चांदमल जी कमला बहन बच्छावत- नरसिंगपुर, 5. श्री राजेन्द्र भाई निर्मला बहन बरडिया-नरसिंगपुर। अध्यात्म-चेतना वर्ष में 'आओ प्रत्याख्यान करें' के अन्तर्गत 125 व्यक्तियों ने प्रत्याख्यान किए। एक वर्ष तक घर पर रहते सचित्त जल का त्याग 160 व्यक्तियों ने किया। 30 ने 12 व्रत ग्रहण किए। 24 आजीवन ब्रह्मचारी बने। महासती जी के यहाँ लगभग एक माह रुकने से अच्छा धर्मलाभ हुआ।

-माया लुणावत, करेली

जैन विश्वकोश के प्रथम खण्ड का लोकार्पण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित जैन विश्वकोष (ENCYCLOPAEDIA

OF JAINA STUDIES) के प्रथम खण्ड "जैन स्थापत्य और कला(JAINA ART & ARCHITECTURE)" के लोकार्पण/विमोचन का कार्यक्रम वाराणसी में 16 जनवरी 2011 को आयोजित किया गया। यह खण्ड पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा प्रस्तावित जैन विश्वकोश के सात खण्डों में से प्रथम था। इस खण्ड का लेखन एवं सम्पादन जैन कला इतिहास के तीन मूर्धन्य विद्वानों-**प्रोफेसर मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी**, कला एवं इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय; **प्रोफेसर कमल गिरि**, पूर्व प्रोफेसर कला इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा **प्रोफेसर हरिहर सिंह**, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया है। लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि थे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह तथा अध्यक्षता प्रोफेसर चन्द्रदेव सिंह, कुलपति, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक ने की। समारोह में समागत अतिथियों का स्वागत पार्श्वनाथ विद्यापीठ प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष डॉ. शुगनचन्द जैन ने किया। डॉ. शुगन चन्द जैन ने विद्यापीठ में श्रमण संघ के आचार्य परम पूज्य शिवमुनि जी महाराज द्वारा प्रकल्पित ध्यान का सम्यक् अनुशीलन केन्द्र बनाने पर जोर दिया और बताया कि बहुत शीघ्र हम आचार्यश्री द्वारा प्रकल्पित ध्यान का उच्चीकृत कोर्स विद्यापीठ में प्रारम्भ करेंगे। कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति द्वय ने जैन विश्वकोश के प्रथम बार प्रकाशन पर पार्श्वनाथ विद्यापीठ को बधाई दी। इस अवसर पर विश्वकोश परियोजना के प्रमुख सम्पादक प्रोफेसर सागरमल जैन भी उपस्थित थे जिन्होंने विश्वकोश की समूची योजना पर आद्योपान्त प्रकाश डाला तथा बताया कि शीघ्र ही जैन भाषा और साहित्य का दूसरा खण्ड (Vol. II- LANGUAGE AND LITERATURE) प्रकाशित होगा। -*प्रो. सुदर्शनलाल जैन, निदेशक*

शिक्षण संस्थान, जयपुर में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर

जयपुर- सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए संस्थान विगत 36 वर्षों से कार्यरत है। इस वर्ष भी 10वीं अथवा 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सत्र 2011-2012 में प्रवेश दिया जायेगा। यह संस्थान संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन कराने के साथ विद्यालयीय, महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय अध्ययन में नियमित प्रवेश के साथ छात्रों के व्यावहारिक अध्ययन पर भी पूरा ध्यान देता है। यहाँ से निकले अनेक प्रतिभासम्पन्न छात्र अच्छे

स्थानों एवं पदों पर कार्य कर रहे हैं। प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, फोन नं., धार्मिक योग्यता एवं पूर्व के दो वर्षों की अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ संलग्न कर आवेदन-पत्र प्रेषित करें। *-विजय मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर के पास, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302020, मो. 9462322197*

संक्षिप्त-समाचार

बैंगलोर- बैंगलोर में युवकों के लिए 'आध्यात्मिक चेतना प्रश्न प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें 15 से 45 वर्ष की वय वाले युवकों ने भाग लिया। 20 दिसम्बर को आयोजित इस परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त परीक्षार्थियों को चांदी के सिक्के दिए गए। 'जिनशासन प्रभावना में आचार्यों का महत्त्व' एवं 'रात्रिभोज : एक अवलोकन' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

भवानी मण्डी- 'बंसत पंचमी' के पावन प्रसंग पर 8 फरवरी, 2011 को सादगीपूर्ण माहौल में मुमुक्षु आत्माओं की दीक्षा पूज्य श्रुतधर श्री प्रकाशमुनि जी के मुखारविंद से सम्पन्न हुई। दीक्षा उपरांत दीक्षार्थी भाई बहनों के नाम इस प्रकार रखे गए-श्री मदनलाल जी मेहता-श्री मदनमुनि जी, श्री सुरेश जी देलड़िया-श्री सुमतिमुनि जी, श्री अमित जी कोचेटा-श्री अमितमुनि जी, अमिता बहन-अमिता महासती जी।

सोनीपत मंडी- संघशास्ता श्रद्धेय श्री सुदर्शनलाल जी महाराज के संघ में महास्थविर तपस्वीराज श्री प्रकाशचन्द जी म.सा. के नेश्राय एवं संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्द जी म.सा. के सान्निध्य में वैरागी संदीप (अमन), माधव (अक्षय), सुधीर (समकित), आशीष (नवनीत) एवं दीपक (अर्हम्) की भागवती दीक्षाएँ 9 फरवरी 2011 को 33 मुनिराजों एवं संघप्रमुखा श्री संयम प्रभा (कमल) जी के 38 ठाणों तथा दस हजार की जनमेदिनी के बीच आडम्बर रहित ढंग से संपन्न हुई।

नागपुर- आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज का 101 वाँ जन्म-दिवस सामायिक स्वाध्याय एवं धर्मध्यान पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती पदमादेवी मोहनलाल कटारिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पौष शुक्ला 14 दिनाँक 18 जनवरी, 2011 को जलाराम सत्संग मंडल के हॉल में दरिद्रनारायण भोज महाप्रसाद का आयोजन किया गया, जिसमें 2500 व्यक्तियों ने इसका लाभ लिया। ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष इस प्रकार का लाभ प्रदान किया जाएगा।

जलगाँव- आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी महोत्सव, अध्यात्म चेतना वर्ष का समापन

समारोह विशेष धर्माराधना एवं तप त्याग के साथ महासती श्री विमलेश प्रभा जी आदि ठाणा-4 एवं ज्ञानगच्छीया महासती श्री गुणबाला जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में मनाया गया । इस अवसर पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम के आयोजन किये गये । कार्यक्रम की शुरुआत 16 जनवरी को सामूहिक दया एवं सामूहिक एकासने के तेले के संकल्प के साथ हुई । करीब 150 एकासन के तेले एवं 150 दयाव्रत हुए । इसी कड़ी में नवकार मंत्र का जाप एवं करीब 250 श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिदिन 3 से 5 सामायिक की साधना की। सुशील बहूमण्डल ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें से प्रमुख इस प्रकार हैं:- आचार्यों एवं संत-सती मण्डल के नाम क्रॉस-वर्ड पझल में ढूँढने की प्रतियोगिता, प्रतिक्रमण से संबंधित प्रश्नोत्तर की परीक्षा, धार्मिक हौजी, भजन प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, कौन बनेगा ज्ञानपति प्रतियोगिता ।

सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वालों को पारितोषिक प्रदान किये गये। अणुत्तरोववाई सूत्र कंठस्थ करने वाले करीब 60 प्रतियोगियों की परीक्षा लेकर पुरस्कृत किया गया । 17 जनवरी को रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें करीब 55 व्यक्तियों ने रक्तदान किया । श्री जयचंद जी मरलेचा-अमरावती एवं डॉ. श्री रविंद्र जी चोरडिया-अमरावती को विशेष सेवा हेतु सम्मानित किया गया ।

बैंगलोर- श्री स्थानकवासी जैन श्राविका मण्डल हनुमान नगर, बैंगलूरु का आध्यात्मिक शिविर दिनाँक 20.09.2010 से 24.09.2010 तक आयोजित किया गया । इस शिविर में 55 महिलाओं ने पूर्ण उत्साह से भाग लिया । इस शिविर में अन्तकृत् दशा सूत्र का वाचन, व्याख्या एवं प्रश्नोत्तर, 25 बोल, सामायिक व प्रतिक्रमण मूल तथा अर्थ का अध्ययन कराया गया । श्रीमती अकलकंवर मोदी-जोधपुर, श्रीमती मोहनकौर जैन-जोधपुर, श्रीमती सुशीला गुलेच्छा-जोधपुर एवं श्रीमती मंजू जी जैन-बैंगलोर ने अध्यापन कार्य किया । श्रीमती प्रभा जी गुलेच्छा, सचिव, श्री श्राविका मण्डल हनुमान नगर, बैंगलोर ने शिविर का संचालन किया ।

बधाई/चुनाव

उदयपुर- युवामनीषी दीपेश मुनि 'उजाला' ने 'वास्तु एवं ज्योतिष विज्ञान : जैन आगमों के आलोक में' विषय पर डॉ. हुकमचन्द जैन, अध्यक्ष, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के निर्देशन में पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है ।

अहमदाबाद- डॉक्टर प्रतीक सुपुत्र श्री प्रदीप लोढ़ा एवं सुपौत्र स्व. श्री रणधीरमल

जी लोढ़ा ने कर्नाटक राज्य में पी.जी. मेडिकल डिग्री कोर्स की प्रवेश परीक्षा में 5 वां स्थान प्राप्त किया है। उन्हें अस्थि रोग सम्बन्धी पाठ्यक्रम में प्रवेश मिला है।

ब्यावर- श्री जगत खींचा सुपुत्र श्री सुज्ञानचन्द जी खींचा ने ICWA एवं सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जोधपुर- श्री दीपक जी टाटिया (सी.ए.) मरुधर ओसवाल समाज के वर्ष

2011-2013 के लिए सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए। आप श्री महावीर विकलांग समिति के प्रबन्धक कमेटी के सदस्य भी हैं एवं हिन्दुस्तान समाज के निदेशक पद को सुशोभित कर रहे हैं।

दिल्ली- डॉ. महावीर गोलेछा को सेनडिएगो, अमेरिका के मेयर ने एक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में आमन्त्रित किया तथा उन्हें अलमाइजर रोग की चिकित्सा के अन्वेषण पर बधाई दी। डॉ. गोलेछा ने 25 सौ वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए भारतीय वैज्ञानिकों के साथ मिलकर मस्तिष्कीय रोगों की शोध के लिए साझा परियोजना तैयार करने की अपील की।

उदयपुर- श्री ओमप्रकाश जी चपलोत, सी.ए. ने 66 वर्ष की वय में 'ठाणांग सुत्त

का दर्शन : तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर डॉ. उदयचन्द जैन, पूर्व विभागाध्यक्ष, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के निर्देशन में पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

मुम्बई- श्री मनन गोलेछा सुपुत्र श्रीमती मीना एवं श्री सुधीर जी गोलेछा, सुपौत्र स्व. श्री हेमचन्द्र जी गोलेछा ने सी.ए. के दोनों ग्रुप प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण किए हैं।

बैंगलोर- जैन कांफ्रेंस महिला राष्ट्रीय अध्यक्ष कमला सज्जनराज मेहता जैन को करुणासागर सम्मान प्रदान किया गया है। उन्हें यह सम्मान हुबली पिंजरापोल संस्था अध्यक्ष श्री रमेश चन्द जी जैन, प्रमुख संरक्षक श्री मेघराज जी कवाड़ एवं मुख्य अतिथि श्री हस्तीमल जी सिसोदिया ने प्रदान किया।

जोधपुर- कुमारी प्रियंका भण्डारी सुपुत्री श्री महीपालचन्द जी एवं सुपौत्री स्व. श्री वीरेन्द्रचन्द जी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा में भारत में 28 वां व राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त करने के साथ सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है। कुमारी

प्रियंका का परिवार आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति पूर्ण निष्ठावान एवं समर्पित है। कुमारी प्रियंका वीर भ्राता श्री भोपालचन्द जी सेठिया की दौहित्री है।

श्रद्धाञ्जलि

मुम्बई- श्रमणसंघीय द्वितीय आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. की विदुषी शिष्या डॉ. धर्मशीला जी म.सा. का मुम्बई के उपनगर अंधेरी वेस्ट के झालावाड़ नगर स्थित स्थानक में दो दिवसीय संथारापूर्वक 17 फरवरी 2011 को स्वर्गवास हो गया।

जोधपुर- समाज-सेवी, उदारमना, सुश्रावक श्री पदमचन्द कांकरिया का 2

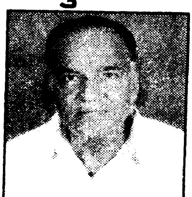

फरवरी,2011 को देहावसान हो गया। आप संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता आदि सद्गुणों से युक्त था। आप संघ-संरक्षक स्व.श्री सायरचन्द जी कांकरिया के सुपुत्र थे। गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। संघ की प्रत्येक गतिविधि में आपका सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता था।

जयपुर- लब्धप्रतिष्ठ रत्नव्यवसायी, सुश्रावक श्रीमान् झबरचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री गोपीचन्द जी हीरावत का 03 फरवरी, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। कर्तव्य परायणता, कर्मठ सेवा भावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता, मृदु भाषिता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति श्रद्धावान थे। आप अपने पीछे पुत्र महेन्द्र कुमार जी एवं अरविन्द कुमार जी का संस्कारी परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- कर्त्तव्य परायण, सेवाभावी सुश्रावक श्रीमान् गुलाबमल जी सुपुत्र स्व. श्री रंगरूपमल जी सिंघवी का 18 फरवरी, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप उदारमना सुश्रावक थे। आप कई सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप अनेक वर्षों से एम.आई. रोड़ व्यापार मंडल के अध्यक्ष एवं मंत्री रहे तथा मरुधर ओसवाल समाज के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। वर्तमान में आप

प्राकृत भारती व महावीर विकलांग सेवा समिति के उपाध्यक्ष थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती किशनकंवर जी कुम्भट धर्मपत्नी श्री

पारसमल जी कुम्भट, महामन्दिर का स्वर्गवास 09 फरवरी, 2011 को मुम्बई में हो गया। आप स्नेह और संस्कारों से सिंचित करने वाली कुम्भट परिवार की शोभा थीं। आप नित्य सामायिक स्वाध्याय करती थीं। संत सतीवृंद के प्रति आपकी प्रगाढ निष्ठा थी। आप व्यवहार में अतिशालीन, गुणानुरागी एवं प्रसन्नचित्त श्राविका थी। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्राविका तपस्वी साधिका श्रीमती पुष्पा डागा धर्मपत्नी स्व. श्री

प्रकाशमल जी डागा का 14 फरवरी, 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आपने अपने जीवन काल में 15 उपवास, एक मासक्षपण एवं कई व्रत-नियमों का पालन किया।

चेन्नई- सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी बोकाडिया सुपुत्र स्व. श्री जेठमल जी बोकाडिया (मूल निवासी ब्यावर) का 90 वर्ष की आयु में 14 जनवरी, 2011 को संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप सरल, शांत एवं समभावी होने के साथ नियमित सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियाएँ करते थे। आपने 60 वर्ष की आयु में सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिए थे। आप अपने पीछे सुसंस्कारी परिवार छोड़कर गए हैं।

कोयम्बटूर- श्री विरेन्द्रकुमार जी गोलेच्छा (खींचन निवासी) का 57 वर्ष की वय में 27 जनवरी, 2011 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आप श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर के संरक्षक श्री पूर्णचन्द्र जी गोलेछा के सुपुत्र थे। आप सरल स्वभावी, मधुरभाषी, धार्मिक विचार वाले व्यक्ति थे। आप वर्षों से पर्व पर्युषण में स्वाध्याय के रूप में सेवा प्रदान करते थे। आपके बहुत से त्याग पच्चक्खान भी थे। आप कई वर्षों से आयुर्वेद के माध्यम से निःशुल्क इलाज एवं दवाइयाँ देकर सेवा एवं पुण्य का काम करते थे। आप धार्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक एवं अनेक व्यापारिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12997 श्री भावेन्द्र जी जैन, नसरानी सिनेमा के पास, चौपासनी रोड, जोधपुर (राज.)
12998 श्रीमती मधुबाला जी मनन, आर.एल. कॉलोनी, पिम्प्राला, जलगाँव (महा.)
12999 श्रीमती प्रभा जी संचेती, कृष्ण पेठ, अमरावती (महा.)
13000 Smt. Sithal ji Hirawat, Boriwali (W), Mumbai (MH)
13001 Mrs. Aresh Ji Jain, Nai Abadi, Hoshiarpur (Punjab)
13002 श्री राकेश जी कोचर, गौरव टॉवर के सामने, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
13003 Shri Manish ji Surana, Sowcarpet, Chennai (T.N.)
13004 श्री मदनलाल जी खिंवसरा, सांजी मन्दिर के पास, जोधपुर (राज.)
13005 Shri R. Prasanraj ji Mehta, Chennai (T.N.)
13006 श्री गौरव जी जामड़, 14, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
13007 श्री पदमचन्द जी जैन (चकेरी वाले), किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12915 श्री धनराजजी कटारिया, खती का हथाई, नया बास, ब्यावर, अजमेर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना श्री उत्तमचन्द जी भंडारी, बैंगलोर के सौजन्य से

12991 श्री कुशाग्रजी नलवाया, रामललाजी का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना श्री दिनेश जी खिंवसरा, गोटन के सौजन्य से

12995 श्री महेश कुमार जी जैन (सी.ए.), दर्जी क्लास के बाजू में, जलगाँव (महा.)
12996 श्री बंशीलाल जी भंडारी, बस स्टैण्ड के सामने, पारोला, जलगाँव (महा.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5000/- श्री बसन्त जी मुणोत, जोधपुर हाल मुकाम मुम्बई, अपने पूज्य पिताश्री जौहरीमल जी मुणोत की 24 फरवरी 2011 तथा भ्राता श्री सुमेरमल जी मुणोत की 25 फरवरी 2011 को पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती सज्जनदेवी जी घेवरचन्द जी लोढ़ा, जयपुर, आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पीपाड़शहर में सपरिवार दर्शन लाभ प्राप्त करने एवं सुपुत्री श्रीमती मंजू जी पालावत के वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री रवि जी जैन, श्री दिनेश जी जैन (पीपाड़वाले), जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री मनमोहनराज जी मेहता के दिनाँक 18 जनवरी 2011 को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

2001/- श्री हंसराज जी, गणपतराज जी, सुखराज जी, जेठमल जी मोहनोत, जोधपुर, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय मगनमुनि जी म.सा. की 39 वीं पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में उनके सांसारिक पुत्रों द्वारा भेंट।

1101/- श्री सुधीर जी, हेमचन्द जी गोलेछा, जयपुर, सुपुत्र श्री मनन जी गोलेछा के सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने एवं भतीजे चि. स्वप्नेश सुपुत्र स्व. श्री शरद जी गोलेछा के विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अनिल जी, श्रीमती प्रमिला जी जामड़, जयपुर, सुपुत्र चि. गौरव जी सुपौत्र श्री हेमचन्द जी पारसदेवी जी जामड़ का शुभविवाह सौ.कां. नेहा जी के संग दिनांक 8 फरवरी, 2011 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री पी.सी. जैन एवं श्रीमती चन्द्रकला जी जैन, जोधपुर, अपने सुपुत्र रचित संग शगुन का शुभविवाह दिनाँक 01 जनवरी, 2011 को सम्पन्न होने पर भेंट।

1001/- श्री दानमल जी जैन, महावीर नगर-जयपुर, अपने सुपुत्र लोकेश संग डिम्पल सुपुत्री अभिनन्दन जी एवं सुपौत्री श्री बाबूलाल जी जैन, जयपुर का शुभविवाह सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री पूनमचन्द जी गोलेछा, कोयम्बटूर, श्री वीरेन्द्र कुमार जी गोलछा (खींचन निवासी) का 57 वर्ष की आयु में दिनांक 27 जनवरी, 2011 को आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री कमलेश कुमार जी जैन, देई, माताश्री स्व. श्रीमती गुलाबदेवी जी की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री दौलतमल, दीपक कुमार जी चोरडिया, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती मैनासुन्दरी जी म.सा. के दिनाँक 16 फरवरी 2011 को 65 वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री आशीष जी, अमित जी, सुमित जी जैन, सवाईमाधोपुर, माताश्री श्रीमती इन्द्रा जी धर्मपत्नी श्री धनसुरेश जी जैन (श्यामपुरा वाले) के नौ के उपवास (जन्म शताब्दी वर्ष में) सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी, अभिनन्दन जी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, अपने सुपौत्र चि. पंकज जी जैन का शुभविवाह सौ.कां. नेहा जी सुपुत्री श्री पुरुषोत्तम जी जैन (चौरू वाले), जयपुर के संग दिनांक 12 फरवरी, 2011 को जयपुर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री बाबूलाल जी जैन (धणोली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री अतुल जी जैन की सोफ्टवेअर इन्जीनियर (टी.सी.एस. कम्पनी, बैंगलोर) में नियुक्ति होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

500/- दौलतमल, दीपककुमार जी चोरडिया, चेन्नई, पूज्य उपाध्यायप्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 77 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- दौलतमल, दीपककुमार जी चोरडिया, चेन्नई, नवदीक्षित श्री सुभाष मुनि जी म.सा. के भोपालगढ़ में आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से बड़ी दीक्षा सम्पन्न होने पर भेंट।

500/- दौलतमल, दीपककुमार जी चोरडिया, चेन्नई, नववर्ष-2011 के शुभ अवसर पर परम आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ लेने के उपलक्ष्य में।

500/- मदनलाल जी, सुशीला जी सोनू जी खिंवसरा, जोधपुर, शासन प्रभाविका, साध्वी प्रमुखा मैना सुन्दरी जी म.सा. के 65 वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती किशोरकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरराज जी सिंघवी, जोधपुर, शासन प्रभाविका, साध्वी प्रमुखा, महासती मैनासुन्दरीजी म.सा. के 65 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी हुण्डीवाल,जोधपुर, अपने सुपुत्र चि. प्रवीण संग सौ. कां. प्रियंका का शुभविवाह दिनाँक 23 जनवरी, 2011 को सानन्द सम्पन्न होने पर भेंट।

500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी एवं कमला जी मोदी, जोधपुर, स्व. श्री हुक्मचन्दजी मोदी एवं स्व. श्रीमती कृष्णा जी मोदी की पुण्य तिथियों पर स्मरणांजलि स्वरूप भेंट।

500/- श्री चंचलमल जी, निर्मल जी, विमल जी भण्डारी, चेन्नई, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 65 वें दीक्षा दिवस पर भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

501/- श्री बाबूलाल जी, अभिनन्दन जी जैन 'आलनपुर वाले', जयपुर, अपने सुपौत्र चि. पंकज जैन का शुभ विवाह सौ.का. नेहा के संग दिनाँक 12 फरवरी, 2011 को जयपुर में सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री देवीनारायण जी, प्रेमचन्द जी जैन 'कुशतला वाले', रावतभाटा, आयुष्मान् आशीष सुपुत्र श्रीमती आशारानी-प्रेमचन्द जी जैन का शुभ विवाह सौ. कां. मधुरिका सुपुत्री श्रीमती मधु-डॉ.धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर के संग 21 जनवरी, 2011 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी हुण्डीवाल,जोधपुर, अपने सुपुत्र चि. प्रवीण संग सौ. कां.प्रियंका का शुभविवाह दिनाँक 23 जनवरी, 2011 को सानन्द सम्पन्न होने पर भेंट।

आगामी पर्व

फाल्गुन शुक्ला 8	रविवार	13.03.2011	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	शुक्रवार	18.03.2011	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला 15	शनिवार	19.03.2011	चातुर्मासिक पक्खी
चैत्र कृष्णा 8	शनिवार	26.03.2011	अष्टमी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 73 वां जन्म-दिवस
चैत्र कृष्णा 14	शनिवार	02.04.2011	चतुर्दशी
चैत्र कृष्णा 30	रविवार	03.04.2011	पक्खी
चैत्र शुक्ला 7	रविवार	10.04.2011	सप्तमी, आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 8	सोमवार	11.04.2011	अष्टमी
चैत्र शुक्ला 13	शनिवार	16.04.2011	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक दिवस
चैत्र शुक्ला 14	रविवार	17.04.2011	चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला 15	सोमवार	18.04.2011	आयम्बिल ओली पूर्ण

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

Electric Arc Furnace

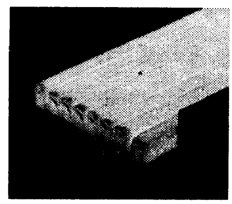
Billets

Rolling Mill

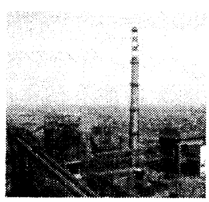
Captive Power Plant

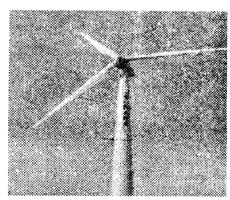
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती **जयगुरु हीरा** **जयगुरु मान**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं भारतीय जैन संगठना, पूना के तत्त्वाधान में युवकों के व्यक्तित्त्व विकास के लिए 10 अप्रेल से 14 अप्रेल 2011 तक शिविर का आयोजन पूना में किया जा रहा है। अतः आप से निवेदन है कि आप अपनी अपनी शाखा के युवकों में प्रेरणा करके कम से कम तीन युवकों (विवाहित, शिक्षित एवं वक्तृत्व कला में रुचि वाले) को लेकर आवें। अधिक जानकारी के लिए सर्म्पक करें – राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742) मनोज कांकरिया,जोधपुर (9414563597) राजेन्द्र लूंकड़,ईरोड़ (09360025001)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा कियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाइये ,सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (9444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597)
7. कुशलचन्दजैन, सवाईमाधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (9422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें –

B. Budhmal Bohra
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet,Chennai-600079(T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2011 ★ फाल्गुन, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:

• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।